जैन सिद्धान्त भास्कर

THE JAINA ANTIQUARY

VOL 44 DECEMBER 1991 NO. 1-2

श्री देवकुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट
आरा (बिहार)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सिद्ध परमेष्ठी राम की पूजा एवं आरती

सिद्ध प्रभु परमेष्ठो तुम हे राम।
त्यागो महा तपस्वी तुम हे राम ॥
तेरी पूजा करके सीता सती हुई,
भरत लक्ष्मण भ्रातृ भक्ति है अमर हुई।
काम देव हनुमान हुए पूजित जग में,
मर्यादा पुरुषोत्तम तिष्ठों मम हिय में ॥

सागर पार किया विशाल, पहूँचे लंका अविराम,
भव सागर मम पार करो तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठो ... ... (जलं)

हरा कैकेयी ताप तजा घर वैभव ग्राम,
हरलो मम भव ताप तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठी.... ... ... (चन्दनं)

दिया भरत को राज्य जगाय भक्ति ललाम,
दो अक्षय पद भक्ति हमें तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठो ... ... (अक्षतं)

त्यागा सीता को होकर बिलकुल निष्काम,
मेरी काम व्यथा जाए जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठो ... ... (पुष्पं)

छप्पन व्यंजन त्याग पए जंगल के धाम,
मेरी क्षुधा मिटाओ, तो हम जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठी ... ... (नैवेद्यं)

दशरथ मात् कौशल्या छोड़े मित्र छदाम,
वैसे मेरा मोह मिटे तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठा ... ... (दीपं)

आठों कर्म जलाया जग में हुए सुनाम,
शक्ति मुझे वैसी ही दो तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठी ... ... (धूपं)

जीवन में पुरुषोत्तम, मरण अमर विश्राम,
वही मोक्ष पद मुझे मिले तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठी ... ... (फलं)

रत्नत्रय अनर्घ्य पद धारी तुम हे राम,
भाव अर्घ्य से मिले वही तो जाने राम।
सिद्ध प्रभु परमेष्ठी ... ... (अर्घ्यं)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन सिद्धान्त भास्कर

जैन पुरातत्व सम्बन्धी षाण्मासिक पत्र

वि० सं० २०४८ वीर निर्वाण सं० २५१८

दिसम्बर १९९१

भाग-४४ किरण १-२

सम्पादक मण्डल

डॉ० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल डॉ० राजाराम जैन

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया दीति' डॉ० शशिकान्त

डॉ० ऋषभचन्द्र फौजदार

प्रकाशक

अजय कुमार जैन, मंत्री

श्री देवकुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट

श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा (बिहार)

वार्षिक शुल्क भारत में-५०/- विदेश में-७५/-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय सूची

		पृष्ठ
१	पूर्वमध्यकालीन भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में गाँव एवं नगर की व्यवस्था —डॉ० कमल कुमारी	१
२	जैन संस्कृति का केन्द्र अजमेर — डॉ० कस्तूर चन्द कासलीवाल	११
३	संस्कृत साहित्य में जैन द्विसन्धान काव्य —डॉ० श्रेयांस कुमार जैन	१५
४	जैनदर्शनसम्मत द्रव्य स्वरूप विश्लेषण (शोध प्रबन्धसार) —डॉ० कमला पन्त	२२
५	तन्दुलकाय मत्स्य और आज के मानव —राष्ट्र सन्त श्री अमरमुनि	२८
६	दिगम्बर जैन मुनि परिषद् का गठन —भागचन्द सोनी, नीरज जैन	२९
७	पूज्य आचार्य श्री चारित्र चक्रवर्ति शान्ति सागर जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय	३२
८	दानवीर बाबू हर प्रसाद दास और उनकी संस्थाएँ —ले० मदन मोहन प्रासद वर्मा	३३
९	भगवती सूत्र में भगवान महावीर एवं गोशालक —सु० कु०	३६
१०	आचार्य कुन्द-कुन्द के ग्रन्थों में पुद्गलद्रव्य विचार —डॉ० ऋषभ चन्द्र जैन फौजदार	३७
११	मांडू और संगीताचार्य मंडन मालवा के —अभय प्रकाश जैन	४१
१२	इस्लाम और शाकाहार —जशकरण डागा	४५
१३	क्या अशोक ने संवत् चलाया ? —अभय प्रकाश जैन	४६
१४	स्वर्गीय बाबू प्रभुदास एवं देव कुमार जैन की पुण्य स्मृतियाँ —स्व० अजित प्रसाद जैन, लखनऊ .... अनुवादक–अतुल कुमार जैन	५१
१५	साहित्य-समीक्षा	५६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूर्वमध्यकालीन भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में गाँव एवं नगर व्यवस्था

—डॉ० कमल कुमारी

छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ भारतीय इतिहास के महान् युग का अन्त हुआ और उसके दूरगामी परिणाम हुए। किसी भी महान् साम्राज्य के उत्थान पतन का कारण उसकी भौगोलिक एवं राजनैतिक स्वायत्तताओं के विकेन्द्रीकरण का मूलाधार होता है। यही कारण रहा कि श्री हर्ष की मृत्यु के पश्चात् (६४७) उसका राजवंश एवं राज्य दोनो ही नष्ट हो गये और सम्पूर्ण उत्तर भारत में अराजकता सी छा गई, किन्तु दक्षिण भारत की स्थिति सुदृढ़ बनी रही। उसमें अनेक प्रतापी राजवंशों का उदय हुआ, जैसे राष्ट्रकूट, पल्लव चोल एवं चालुक्य। किन्तु तेरहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में दक्षिण के राजनैतिक वैभव का सूर्य भी अस्त हो गया। इस राजनैतिक उत्थान पतन की पृष्ठभूमि ने भारत की भौगोलिक सीमाओं को अत्यन्त प्रभावित किया। उत्तर में हिमालय और दक्षिण में कन्या कुमारी भारत के भौगोलिक विस्तार के दो मूल बिन्दु रहे हैं। सीमा विस्तार जो भी रहा हो, इतना अवश्य है कि किसी भी देश एवं राष्ट्र के सर्वाङ्गीण विकास में उसकी भौगोलिक स्थिति का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। सामाजिक संस्कृति, रहन-सहन का स्तर, आचार-विचार, रीतिरिवाज, वेशभूषा, भोजन-वस्त्र एवं आवासीय व्यवस्था उस देश की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है। प्राचीनतम भौगोलिक समृद्धियों का अवलोकन करते हुए ही हम आधुनिकतम भौगोलिक समृद्धियों का सम्यक्-रूपेण विकास कर सकते है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सातवीं शताब्दी की भौगोलिक परिस्थिति के इर्द-गिर्द हमारी अधिकतर भौगोलिक समस्याएँ कितनी विकसित थीं उसकी जानकारी हेतु हमें तत्कालीन साहित्य का अध्ययन नितान्त अपेक्षित है। उस समय गाँवों एवं नगरों की स्थिति क्या थी, उस प्रसङ्ग में उसका निरूपण भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि जीवन-चक्र गाँव, एवं नगर की परिधियों से होता हुआ ही विकास के स्वप्न को साकार कर सकता है। जहाँ के गाँव एवं नगर विकसित होंगे वहाँ का देश अवश्यमेव सुदृढ़, सम्पन्न एवं प्रगतिशील होगा। इस दृष्टि से यहाँ कुछ ग्रामों एवं नगरों की स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जा रहा है :—

ग्राम

विद्वानों ने ग्राम शब्द की परिभाषा करते हुए बतलाया है कि जहाँ बाढ़ से घर एवं खेत घिर जाय, जहाँ किसान एवं शिल्पियों का निवास हो तथा जहाँ पर विविध प्रकार के खेत हों, वह स्थल ग्राम कहलाता है। ग्रामों में भी छोटे एवं बड़े ग्राम होते हैं। महाकवि जिनसेन के अनुसार जिन ग्रामों में सौ या उसके आस-पास कुटुम्ब निवास करते हों, वह छोटा ग्राम एवं इससे अधिक कुटुम्बों के जहाँ निवास हों वे बड़े ग्राम कहलाते हैं।[1]

प्राचीन साहित्य के अनुसार इन छोटे-बड़े ग्रामों के भी अनेक भेद होते थे। जटासिंहनन्दि ने अपने "वराङ्गचरितम" नामक संस्कृत महाकाव्य में उनके आकर, मडम्ब, खेड, व्रज एवं पतन के नाम से उनका उल्लेख किया है जिनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है।

आकर[2]

प्राचीन साहित्य के अनुसार 'आकर' शब्द उसे कहते थे, जहाँ सोना चाँदी, हीरे, मोती आदि की खाने हों। आचार्य जिनसेन कृत आदि पुराण में भी आकर शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया गया है।[3] यद्यपि आकर शब्द का अर्थ खान होता है, किन्तु साहचर्य सम्बन्ध से आकर के निकटवर्ती ग्राम को भी आकर कहा जाता था। आज की भाषा में यही आकर ग्राम औद्योगिक नगर के रूप में प्रसिद्ध है।

मडम्ब[4]

जटासिंहनन्दि के अनुसार मडम्ब एक व्यापारिक बस्ती थी। इसमें किसी एक समृद्ध नगर की प्रायः सभी विशेषताएँ पाई जाती थीं। आदि-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुराण के अनुसार 'मडम्ब' उसे कहते थे, जो ५०० ग्रामों के मध्य में व्यापार का एक विशेष केन्द्र रहता था।

खेड[५]

'समराङ्गणसूत्रधार' के अनुसार 'खेड' ग्राम एवं नगर के बीच की एक इकाई होती थी।[६]

आदि पुराण के अनुसार खेड की निम्नलिखित विशेषताएँ मानी जाती थीं।

१—कृषि एवं अन्य पेशे के लोगों का निवास

२—नदी तट या पर्वत की तलहटी में अवस्थित

३—नदी एवं पर्वत से संरुद्ध होने से औद्योगिक निवास के साधनों की प्रचुरता

४ ग्राम से बड़ा होने के कारण नगर रूप में विकास

आज की भाषा में यह खेड के नाम से प्रसिद्ध है।

व्रज

जटासिंहनन्दि ने व्रज शब्द का प्रयोग ग्वालों की बस्तियों के लिए किया है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि व्रज वह स्थल था, जहाँ पशुओं के लिए घास आदि की समुचित उत्पत्ति एवं जलाशय आदि की बहुलता रहती थी।

पत्तन[६]

जो स्थल समुद्री तट पर स्थित रहता था और जहाँ आवागमन रहता था, उसे पत्तन कहा जाता था। समराङ्गण सूत्रधार, आदि पुराण, एवं वृहदक तथा कोश आदि ग्रन्थों के आधार पर पत्तन एक प्रकार का वृहद् वाणिज्य बन्दरगाह था जो किसी समुद्र अथवा विशाल नदी के किनारे स्थित रहता था। यह स्थल बड़ा भारी व्यापारिक केन्द्र माना जाता था। वहाँ प्रायः व्यापारी लोग ही निवास करते थे।[७]

आजकल भी पत्तननामधारी अनेक नगर भारत में पाये जाते हैं, जैसे विशाखापत्तन, विजयापट्टम् आदि। ये ग्राम समुद्रतटवर्ती हैं और इनमें प्राचीनकालीन पत्तनों की सभी विशेषताएँ उपलब्ध हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आनर्त[९] नगर

महाभारत में आनर्त नामक एक देश की चर्चा होती है जिसके अनुसार अर्जुन ने उसकी श्री समृद्धि पर मुग्ध होकर विजय प्राप्त की।[९] जिनसेन ने भी आदि पुराण में इसकी चर्चा की थी।[१०] जटासिंह ने आनर्त की स्थिति सरस्वती नदी एवं मणिमन्त गिरि के मध्य में मानी है।[११] इनके वर्णनों से ऐसा प्रतीत होता है कि यह नगरी पश्चिम भारत की एक समृद्ध नगरी रही होगी।

कम्पिला[१२]

जैन साहित्य के अनुसार काम्पिल्यपुर गंगानदी के तीर पर बसी थी। यहाँ बड़ी ही धूमधाम से द्रौपदी का स्वयंवर रचा गया था। जैनियों के १३ वें तीर्थंकर विमलनाथ का यहीं पर जन्म हुआ था।

कम्पिलापुरी की पहचान वर्तमान फरुखाबाद (उत्तर प्रदेश) जिले के कम्पिला नामक स्थल से की जाती है। खुदाई में यहाँ पर्याप्त अवशेष मिले हैं।[१३]

कुन्डलपुर

पुरातत्ववेत्ताओं ने विविध प्राचीन साहित्य एवं खुदाई के आधार पर सिद्ध कर दिया है कि वैशाली स्थित कुण्डलपुर ही भगवान् महावीर की जन्म भूमि है। जटासिंहनन्दि ने भी वैशाली स्थित कुण्डलपुरी की ही चर्चा की है।

कौशम्बी

प्रयाग से लगभग ३७ मील दक्षिण-पश्चिम यमुना नदी के उत्तरी तट पर कोसम नाम का एक छोटा सा ग्राम है। यहीं पर भारत की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी कौशम्बी बसी है। कौशम्बी जिस राज्य की राजधानी थी उसका नाम वत्स था। भगवान् बुद्ध के समय वहाँ का राजा उदयन था। भगवान बुद्ध को यह नगरी इतनी प्रिय थी कि उन्होंने यहाँ कई बार विहार किया था। वहाँ के निवासियों ने कुक्कुट वराम एवं घोषितराम नामक दो विहारों के निर्माण कराये थे।[१४]

जैन साहित्य के अनुसार कौशम्बी समृद्ध नगरी थी। कहा जाता है कि वर्तमान पालिसिंह, बल कोसम एवं पभोसा ये समस्त ग्राम कौशम्बी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के अन्तर्गत थे। वास्तव में कौशम्बी में भगवान् तीर्थंकर पद्म प्रभु के गर्भ एवं जन्म कल्याणक हुए थे। अतः ये दोनों ही स्थान तीर्थक्षेत्र हैं। आजकल इस वन का नाम अरथन वन है।[१५]

गिरिव्रज

महाभारत काल में गिरिव्रज मगध देश की राजधानी मानी जाती थी। उसके अनुसार राजा जरासंध गिरिव्रज में रहता था। गिरिव्रज के परवर्ती नामों में राजगृह नाम अधिक मिलता है। वैदिक, जैन एवं बौद्ध साहित्य में उसका पर्याप्त वर्णन किया गया है। जैन साहित्य के अनुसार महावीर ने यहाँ के विपुलाचल पर्वत पर अपना सर्व प्रथम उपदेश दिया था। तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ के गर्भ जन्म कल्याणक यहाँ हुए थे।

वर्तमान में राजगृह एक तीर्थ भूमि में प्रसिद्ध है। यहाँ की खुदाई में प्राचीन कालीन पर्याप्त अवशेष प्राप्त हुए हैं। नवीन राजनैतिक सीमाओं के आधार पर वर्तमान में यह नालन्दा (बिहार) जिले में स्थित है।

चन्द्रपुरी [१६]

चन्द्रपुरी जैनियों का परम पवित्र तीर्थ माना जाता है। यह स्थल वाराणसी से लगभग दस मील दूर बनारस से आगे प्रमुख रेलवे मार्ग पर आदिपुर स्टेशन से पाँच किलोमीटर की दूरी पर है और चन्द्रोदी के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ तीर्थंकर चन्द्रप्रभु के गर्भ-जन्म कल्याणक हुए थे।

पावापुरी [१७]

पावापुरी जैनियों का सिद्ध क्षेत्र माना गया है, क्योंकि जैनियों के अंतिम तीर्थंकर महावीर को यहाँ पर निर्वाण प्राप्ति हुई थी। १४ वीं शताब्दी के 'विविधतीर्थकल्प' नामक ग्रन्थ में इसका अपरनाम अपापापुरी कहा गया है।[१८]

इतिहासकारों में इस पावापुरी की अवस्थिति के विषय में मतभेद है। कुछ का विश्वास है कि गोरखपुर जिले में स्थित 'पडरौना' ही उक्त पावापुरी है। मल्लराजाओं का संथागार (Conference hall) इसी पावापुरी में स्थित था।[१९] सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान डॉ० हार्मन याकोबी ने नालन्दा जिले में स्थित पावापुरी को ही भगवान बुद्ध की निर्वाण भूमि मानी है।[२०] यह स्थल वर्तमान बिहारशरीफ से सात मील की दूरी पर स्थित है। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदाय इसे मान्यता प्रदान कर सर्वांङ्गीण विकास में प्रयत्नशील हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भद्रपुरी

भद्रपुरी के विषय में विद्वानों ने अपने निश्चित विचार व्यक्त नहीं किये। महाभारत में इस नाम का कोई नगर उपलब्ध नहीं होता। जैन आगम साहित्य में भद्रपुर नाम का एक नगर मिलता है। इसे भलयजनपद की राजधानी बतलाया गया है।[२१] पुरातत्त्ववेत्ताओं ने इसकी पहचान हजारीबाग (बिहार) जिले के भदिया नामक ग्राम से की है जो हंटरगंज से छः मील की दूरी पर कोल्हुआ पहाड़ी के पास स्थित है।[२२] हो सकता है कि 'वराङ्गचरितम्' काव्य के प्रणेता जटासिंहनन्दि की भद्रभूमि यहीं भद्रिलपुरा हो जहाँ पर कुछ समयपूर्व खुदाई में कई जैन मूर्त्तियाँ मिली हैं। जटासिंहनन्दि ने प्रस्तुत भद्रपुरी को शीतलनाथ की जन्मभूमि माना है।[२३]

मथुरा

जैन साहित्य के अनुसार मथुरा प्राचीनकाल से ही पवित्र तीर्थ क्षेत्र रहा है। इसके अनुसार मथुरा शूरसेन जनपद की राजधानी थी। इस जनपद में भगवान् महावीर का शमवशरण आया था और उनके उपदेश के अनुसार नगरसेठ जिनदत्त के पुत्र अर्हदास तथा मथुरा नरेश उदितोदय आदि अनुयायी बन गये थे।[२४]

प्राच्य भारतीय इतिहास के अनुसार इसकी गणना सप्तमहामुनियों में की जाती है। यहाँ चन्द्रवंश की यादवशाखा का अधिकार दीर्घकाल तक बना रहा। भगवान श्री कृष्ण यादववंश में ही उत्पन्न हुए थे। महाभारत युद्ध में उन्होंने प्रधान भाग लिया था। प्राचीनकाल में मथुरा का राज्य शूरसेन जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार ई० पूर्व ४०० के लगभग शूरसेन राज्य मगध साम्राज्य के अन्तर्गत आता था। वहाँ क्रमशः मौर्य, शुंग, क्षत्रप और कुशाण वंशों का शासन बना रहा।[२५]

प्रस्तुत मथुरा दिल्ली आगरा रोड पर दिल्ली से १४५ किलोमीटर और आगरा ५४ किलोमीटर दूर स्थित है।

रत्नपुर[२६]

वराङ्गचरितकार जटासिंहनन्दि के अनुसार रत्नपुरी १५ वें तीर्थंकर धर्मनाथ की जन्मभूमि मानी गई है। जिनप्रभसूरी के समय यह तीर्थ रत्नवाह नाम से पुकारा जाता था। जैन यात्रियों ने इसका रोईनाई नाम से उल्लेख किया है। पुरातत्त्ववेत्ताओं ने उसकी पहचान फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के पास सोहावन स्टेशन से एक मील उत्तर में स्थित रौहानी नामक एक गाँव से की है।

साकेतपुरी[२७]

जैन मान्यतानुसार अयोध्या को शाश्वत नगरी माना गया है। प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव के गर्भ एवं जन्मकल्याणक तथा दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ, चौथे तीर्थंकर अभिनन्दननाथ, पाँचवे तीर्थंकर सुमतिनाथ और चौदहवें तीर्थंकर अनन्तनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान नामक कल्याणक इसी भूमि पर हुए थे। इन कारणों से इसे परमपवित्र तीर्थराज माना जाता है।

आचार्य जिनसेन के अनुसार जब इस भोगभूमि का अन्त हुआ, उस समय समस्तकल्पवृक्ष नष्ट हो गये। केवल एक कल्पवृक्ष अवशिष्ट रहा, जिसमें चौदहवें कुलकर एवं नाभिराय रहते थे। यहाँ नाभिराय का भवन था जिसके चारों ओर कोट वापिका और उद्यान बने हुए थे।[२८] इसका नाम सर्वतोभद्र प्रसाद था।

महाभारत के अनुसार यह इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं की राजधानी थी और यहाँ मुनिवर वशिष्ठजी राजा कल्मषपाद के यहाँ पधारे थे।[२९]

ऐतिहासिक काल में अयोध्या की प्रसिद्धि बनी रही। शुंगवंश के प्रथम शासक पुष्पमित्र का एक महत्त्वपूर्ण शिलालेख अयोध्या से मिला है। गुप्तशासक चन्द्रगुप्त के समय में अयोध्या साहित्य एवं कला का केन्द्र बनी रही। वर्तमान अयोध्या में भगवान राम के तथ कथित जन्म स्थान पर बाबरी मस्जिद विद्यमान है।[३०] मुस्लिम सम्प्रदाय अयोध्या को खुर्दमुक्का और सिद्धों की सराय के नाम से जानते हैं।[३१]

सिंहपुरी[३२]

जैन साहित्य के अनुसार सिंहपुरी एक महान् अतिशय क्षेत्र माना गया है। जयसिंहनन्दि के अनुसार भ० श्रेयांसनाथ के यहाँ पर जन्म आदि चार कल्याणक हुए थे।

बौद्ध साहित्य के अनुसार इसका प्राचीन नाम इसिपत्तन एवं मृदगांव थे। ज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान् बुद्ध ने सबसे पहले यहाँ पर अपना धर्मोपदेश दिया था, जो धर्म चक्क पवट्टण (धर्मचक्र प्रवर्तन) के नाम से प्रसिद्ध है। ईसा पूर्व तीसरी सदी में सम्राट अशोक ने उनकी स्तुति में एक विशाल स्तूप बनवाया था जो धर्मस्तूप के नाम से प्रसिद्ध है।[३३]

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(एक मान्यता के अनुसार श्रेयांस प्रभु मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय सुमेरु पर्वत का निर्माण प्रतिष्ठाकारको ने निर्मित कराया था। सम्राट अशोक ने कालान्तर में इस पर लेख लिखवा दिए थे।—सु० कु०)

वर्तमान काल में यह स्थान सारनाथ जिले के नाम से जाना जाता है। इसकी अवस्थिति वाराणसी जिले में वाराणसी से सड़कमार्ग द्वारा छह किलोमीटर दूर उत्तर में है।

शौर्यपुरी

जैन साहित्य में शौर्यपुरी एक पवित्र तीर्थ माना जाता है। जैन परम्परा के अनुसार यह नगर श्री कृष्ण एवं उनके चचेरे भाई नेमिनाथ की जन्म भूमि थी।[३४]

शौर्यपुरी अथवा सूर्यपुर कुशार्तदेश की राजधानी मानी गयी है। यह नगर यमुना नदी के किनारे बसा था। इसकी पहचान आगरा जिले के वर्तमान सूर्यपुर नामक स्थान से की गई है। यह स्थान यमुना नदी के दाहिने किनारे पर स्थित बटेश्वर के पास है। श्वेताम्बर जैनाचार्य हीर विजय सूरि के आगमन के समय पर इस तीर्थ का जीर्णोद्धार किया गया था।[३५]

श्रावस्ती

जटासिंहनन्दि के अनुसार श्रावस्ती तीर्थंकर भ० सम्भवनाथ के गर्भ, जन्म, तप एवं केवल ज्ञान नामक चार कल्याणकों की पवित्र भूमि है।[३६] जैन साहित्यकारों द्वारा संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में इस नगरी के श्री एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया गया है।

बौद्ध साहित्य के अनुसार श्रावस्ती नगरी भ० बुद्ध को अत्यन्त प्रिय थी। उन्होने यहाँ अनेक वर्षावास किये थे। उनके लिए यहाँ के एक प्रसिद्ध नगरसेठ अनाथपिण्डक ने जेतवन नामक विहार का निर्माण कराया था।[३७]

निष्कर्षतः पूर्व मध्यकाल में नगर एवं ग्रामों की जो मान्यताएँ रही हैं, आज भी वह उसी रूप में परिभाषित करने के लिए पर्याप्त हो सकती हैं। इतना अवश्य है कि जीवन विस्तार के साथ-साथ उन ग्रामों एवं नगरों की सीमाएं भी विस्तारित हो चुकी हैं। आज के ग्राम एवं नगर अपनी प्राचीन मान्यताओं को बनाये हुए और अधिक विकास की गति प्राप्त कर चुकें हैं।

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, म० म० महिला कॉलेज, आरा (बिहार)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन्दर्भ–सूची

१ आ० पु० १६/१६४-१६५
२ व० च० महाकाव्य १०/७५, २१/४५
३ आ० पु० १६/१७५, १७६,
४ व० च० म० ३/४, १२/४४
५ समराङ्गणसूत्रधार, पुरनिवेशवर्णन १० वाँ अध्याय
६ व० च० म० १५/१३, २१/४८
७ व्यवहार सूत्र भाग ३ पृ० १२७ (दे० आ० पु० प्र० भा० पृष्ठ ७८)
८ वराङ्ग चरितम् २१/२८, २९
९ महाभारत सभापर्व २६/४
१० आ० पु० १६/५३
११ व० च० २१/२८
१२ व० च० २७/८५
१३ उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति, पृ० ६
१४ वही
१५ भारत के दिगम्बर जैनतीर्थ, पृ० १४२
१६ ब० च० २७/८
१७ व० च० २७/९१
१८ विविध तीर्थकल्प ३/१
१९ जैन साहित्य और इतिहास पृ० ५२४ एवं ४२५
२० भारतीय विद्या ३/१
२१ भारत के प्राचीन जैन तीर्थ-पृ० २६
२२ वही
२३ व० चरितम् २७/८३
२४ भारत के दि० जैन तीर्थ पृ० २६
२५ उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति पृ० ४५
२६ व० च० २७/८५
२७ वही २५/२२
२८ हरिवंशपुराण ८/१
२९ महाभारत आदि १७६/३५-३६
३० उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति, पृ० ६०
३१ भारत के दिगम्बर जैन तीथ, पृ० १६०-४
३२ व० च० २७/८२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३३ भारत के प्राचीन जैन तीर्थ, पृ० ३९
३४ आ० पु० प्र० भा०, पृ० ९२
३५ भारत के० प्रा० जै० ती०, पृष्ट ४४
३६ व० च० २७/८२
३७ उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति, पृ० ९

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन संस्कृति का केन्द्र अजमेर

— डा० कस्तूर चन्द कासलीवाल

राजस्थान के ऐतिहासिक नगरों में अजमेर नगर का विशिष्ट स्थान है। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि देश के सभी शासकों ने अजमेर को राजस्थान का केन्द्रीय स्थान मानकर उसे अपने अधिकार में रखने का प्रयास किया। अजमेर एक नाम से नहीं जाना जाता रहा किन्तु पृथ्वीपुर,[1] अजयमेरु, अजयदुर्ग, अजयगढ, अजेयानगर एवं अजीर्णगढ़ जैसे विभिन्न नामों से प्रसिद्ध रहा। सर्वप्रथम यह नगर शाकंभरी प्रदेश के अधीन रहा लेकिन कुछ ही समय पश्चात इसे उसकी राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया।

इतिहासवेत्ताओं के अनुसार अजमेर की स्थापना पृथ्वीराज चौहान के पुत्र अजयराज ने विक्रम संवत ११६५-११७० के मध्य किसी समय की थी।[2] हरबिलास शारदा के अनुसार अजयराज (पुत्र नरदेव) ने १२ वीं शताब्दी के बहुत पहिले अजमेर की नींव डाल दी थी।[3] वास्तव में यह सही है कि अजमेर १२ वीं शताब्दि के पूर्व ही अस्तित्व में आ चुका था और अच्छी बस्ती के रूप में माना जाने लगा था। हमारे इस मन्तव्य की सिद्धि जैसलमेर के शास्त्र भंडारों में संग्रहित पाण्डुलिपियों की प्रशस्तियों के आधार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर की जा सकती है। जो संवत् १२०७, १२१२ एवं १२१६ में अजमेर में ही लिपिबद्ध की गई थी। पाटन के शास्त्र भंडार में तो संवत् ११९८ की पाण्डुलिपि भी मिलती है जिसमें पृथ्वीपुर का नाम लिखा हुआ है। खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज का अजमेरा गोत्र की उत्पत्ति अजमेरि से मानी गई है। यदि यह वहीं अजमेरि नगर है तब तो अजमेर की स्थिति २००० वर्ष पुराना चली जाती है। चौहानों के शासकों के पश्चात अजमेर कभी राजपूत शासकों और कभी मुगल शासकों के अधीन रहा है। अकबर ने इस नगर को बहुत महत्व दिया और वह कितनी ही बार यहां आया। मुगलों के पतन के पश्चात् अजमेर मराठा शासक सिंधिया के अधीन रहा। सन् १८१८ में यह अंग्रेजी शासन का अंग बन गया और स्वतंत्र भारत के पश्चात् यह नगर अजमेर प्रान्त का मुख्यालय बन गया।

राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहने के साथ-साथ ही यह नगर जैन, वैष्णव एवं मुस्लिम संस्कृतियों का भी केन्द्र बना रहा। राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों में ऐसी सैकड़ों पाण्डुलिपियाँ है जिनकी प्रतिलिपि अजमेर नगर में हुई थी। जैसलमेर के शास्त्र भंडार में संवत् १२१२ की 'उपदेश पद प्रकरण लघु टीका" की एक पाण्डुलिपि है जो अजमेर में महाराजाधिराज विग्रहदेव के शासन में लिखी गई थी। अजमेर जैनाचार्यों, भट्टारकों, साधुओं एवं साध्वियों का प्रमुख केन्द्र रहा। एक ओर चित्तौड़ से दिल्ली की ओर बिहार करने वाले सभी आचार्य एवं मुनि अजमेर को अपने बिहार से पावन करते रहे तो दूसरी ओर मारवाड़ की ओर से आने वाले साधुओं का भी अजमेर केन्द्र बना रहा। महाराजा अर्णोज (११३२ A. D.) के समय यहाँ जिनदत्तसूरि का आगमन हुआ। उनका यहीं स्वर्गवास हुआ और उनकी समृति में दादाबाड़ी का निर्माण कराया गया।

१३ वीं शताब्दि में यह नगर मूलसंघ के भट्टारकों का केन्द्र बन गया था। उसी समय सभी भट्टारक नग्न रहते थे और मुनिचर्या का पूरी तरह पालन करते थे। इन भट्टारको के नाम है बसन्तकीर्ति (सं० १२६४) विशालकीर्ति (सं० १२६६) शुभकीर्ति, धर्मचन्द्र (१२७१-९६) रत्नीकीर्ति (१२९६-१३१०) एवं भ० प्रभाचन्द्र (१३१०-१३८४) भ० धर्मचन्द्र (सं० १२७१) तथा भ० रत्नकीर्ति तो अजमेर के ही निवासी थे और यहीं उनका पट्टाभिषेक हुआ था। बादशाह फिरोजशाह तुगलक को अपनी विधाओं में चमत्कृत करने वाले 'देहली में जैन सन्तों के वंश एवं प्रभावना में विस्तार करने वाले तथा वहाँ भट्टारक पीठ स्थापित करने वाले भट्टारक प्रभाचन्द्र अजमेर गादी के ही भट्टारक थे। संवत् १८५२ में नगर में महाराज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दौलतराव सिंधिया के शासनकाल में एक विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ था। प्रतिष्ठाकारक थे धर्मदास गंगवाल जो भट्टारक भुवनकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे। इस प्रतिष्ठा में सैकड़ो मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित हुई थीं। जयपुर के बड़े दिवान जी के मन्दिर में भगवान आदिनाथ एवं भ० महावीर की जो विशाल पगासन प्रतिमायें है वे अजमेर नगर में ही प्रतिष्ठित हुई थी।

२० वीं शताब्दि में अजमेर नगर को सभी आचार्यो मे अपने विहार से एवं वर्षायोग से सौभाग्यशाली बनाया। यहाँ आचार्य नेमिसागर जी, आचार्य शिवसागर जी, आचार्य विद्यासागर जी, एवं आचार्य सुमतिसागर जी, के चातुर्मास हो चुके है। आचार्य धर्मसागर जी महाराज के तो अजमेर में दो वर्षायोग सम्पन्न हुये थे। अजमेर नगर की भूमि आचार्य शांतिसागर जी, आचार्य श्री देशभूषण जी, आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज एवं आचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के चरणों से भी पावन बन चुकी है। अजमेर की भूमि में मुनियों एवं साधुओं के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति के भाव व्याप्त है। यहां का सोनी परिवार गत एक शताब्दि मे धर्म एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिये सारे देश में प्रसिद्ध है। रायबहादुर सेठ टोकमचन्द जी एवं सरसेठ स्व० भागचन्द जी सोनी की सामाजिक एवं सांस्कृतिक सेवायें जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में सदैव लिखी रहेगी। नगर में सेठजा की नशियाँ आज यहां आने वाले प्रत्येक यात्री के लिये दर्शनीय स्थान है।

अजमेर जैन समाज का प्रारंभ मे ही केन्द्र रहा। यहाँ के मन्दिर के शास्त्र भन्डार इस बात के साक्षी है। अजमेर में अढाई दिन का झौपड़ा पहिले जैन मन्दिर था जो अपनी कला एवं वैभव के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध था। मुसलिम आततायियों ने इसे खंडहर करके अढाई दिन का झौपड़ा बना दिया।

अजमेर नगर में विद्वानों को भी पर्याप्त सहयोग मिला। जयपुर निवासी पं० सदासुख जी कासलीवाल जिन्होने कितने ही ग्रंथो की भाषा टीका लिखी थी, ने अपना अंतिम समय अजमेर नगर में ही व्यतीत किया था। सोनी परिवार ने उनकी जो सेवा सुश्रुषा की थी वह सदैव याद रहेगी।

संवत १७५१ में भ० रत्नकीर्ति ने अजमेर में पुनः भट्टारक गादी की स्थापना की ओर उनका पट्टाभिषेक भी अजमेर में ही सम्पन्न हुआ। इसी वर्ष जोबनेर में एक वृहद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ। जिसमें भ० रत्नकीर्ति जी ही प्रमुख प्रतिष्ठाकारक थे। रत्नकीर्ति के पश्चात् यहाँ १० भट्टारक और हुये जिनके नाम निम्न प्रकार है :—

१-भ० रत्नकीर्ति २-भ० विद्यानन्द (सं० १७६६) भ० महेन्द्रकीर्ति

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(सं० १७६९) ४-भ, अनन्तकीर्ति (सं० १७७३) ५-भ० भुवनभूषण (सं० १७९७) ६-भ० विजयकीर्ति (सं० १८०२) ७-भ० त्रिलोकेन्द्रकीर्ति ८-भ० भुवनभूशण (सं० १८५२) ९-रतनभूषण (१८८०) १०-भ० ललितकीर्ति (१९२२) ११-भ० हर्षकीर्ति (२०१२), उक्त भट्टारकों में भ० विजयकीर्ति सबसे अधिक साहित्य सेवी थे। अब तक उनकी ९ रचनायें प्राप्त हो चुकी है। श्रणिकचरित्र (सं० १८२७ में इन्होंने अजमेर को 'गढ़ अजमेर सकल सिरदार' लिखा है तथा महादन्डक (सं० १८२९) में अजमेर नगर का इन्होंने निम्न प्रकार बर्णन किया है :—

गढ़ अजमेर सुथान, श्रावक सुख लीला करे।
जैनधर्म बहुमान देव, शास्त्र गुरू भक्ति मान ।।

भ० त्रिलोकेन्द्रकीर्ति भी साहित्य लेखन में रूचि रखते थे और उनके भी कुछ लघु रचनायें मिलती है। अभी करीब एक शताब्दि पूर्व ही प० छीतरमल हुये जिन्होंने जिन प्रतिमा स्वरूप वर्णन लिखा था जिसकी एक पाण्डुलिपि बूंदी के अभिनंदन स्वामी के मन्दिर में है। ग्रंथ की अंतिम दो पंक्तियाँ निम्न प्रकार है :—

सहर वास अजमेर में तहाँ एक सरावग आन।
नाम तासु छीतर कहे, गोत्रज कालो आन ।।

अजमेर में बड़े घड़े के मन्दिर में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का एक विशाल संग्रह है जिसको लेखक ने सन् १९५८ में विस्तृत सूची बनाई थी। यह सूची राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची पंचम भाग में प्रकाशित हो चुकी है। इस शास्त्र भंडार में भाषा, काव्य आगम, इतिहास, पुराण कथा जैसे विविध विषयों पर महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का सग्रह है। जो अजमेर गादी के भट्टारको की सेवाओं का प्रतिफल है।

इस प्रकार अजमेर नगर का अतीत और वर्तमान दोनों ही गौरवमय है।

सन्दर्भ-सूची

१ पाटन भंडार का ग्रंथ सूची-पृ० सं० १२९

२ पृथ्वीराज चौहान एण्ड हिज टाइम्स-राधावल्लभ सोमानी, पृष्ठ-१६,

३ हरविलास शारदा-अजमेर का इतिहास, पृष्ठ ३७-३८,

४ संवत १२१२ चैत्र सुदि १३ गुरौ अधेह श्री अजयमेस दुर्गे समस्तराजावलिविराजित परम भट्टारक-महाराजाधिराज श्री बिग्रहदेव-बिजयराज्ये उपदेश पद टीका आल्लेखिति × पृ० सं० ७५

५ भट्टारक पट्टावली।

८६७, अमृत कलश,
किसान मार्ग, टौंक फाटक, जयपुर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संस्कृत साहित्य में जैन द्विसन्धान काव्य

— डा० श्रेयांस कुमार जैन

संस्कृत साहित्य में समुपलब्ध सन्धान काव्यों का मूल श्लेषालङ्कार है। श्लेष का ही परिणाम सन्धान काव्य है। श्लेष का प्रयोग वैदिक युग से ही प्राप्त होता है। ऋग्वेद[1] में द्वयर्थक मंत्रों का बाहुल्य है। लौकिक संस्कृत साहित्य में तो श्लेष का प्रचुर प्रयोग हुआ है। हरिषेण ने "साध्वसाधुदय प्रलय हेतु पुरुषस्या चिन्त्यस्य" यहाँ श्लेष के माध्यम से समुद्रगुप्त की तुलना ब्रह्म से की है।[2] कालिदास[3], माघ,[4] भारवि[5] और श्री हर्ष[6] के काव्यों में द्वयर्थक, अर्थत्रयवाची और पञ्च अर्थ वाले पद्य मिलते हैं। सुबन्धु[7] 'तथा बाण[8] ने तो स्पष्ठ शब्दों में श्लेष रचना का उल्लेख किया है।

शनैः शनैः श्लिष्ट काव्य रचना की प्रवृत्ति की ओर कवि अग्रसर होते जा रहे थे। पाण्डित्य प्रदर्शन तथा बौद्धिक आयामों का क्षेत्र बढ़ता जा रहा था, जो कवियों के कौशल का परिचायक था। इसी प्रवृत्ति का परिणाम है कि काव्य में दो, तीन, चार, पाँच, सात, और अधिक भी कथाएँ एक साथ अनुस्यूत की जाने लगी। कालान्तर में उक्त श्लिष्ट रचना की शैली ने ही नानार्थ या सन्धान इस संज्ञा को ग्रहण किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन्धानम्—

सन्धानम् (क्ली०) सन्धीयते यदिति (सभ् + धा + ल्युट्) मधासज्जी करणमिति नयनानन्दः। तत् पर्यायः। अभिषवरित्यमरः। सन्धानी ३। सन्धिका इति शब्दरत्नावली। सन्धीयते सन्धानं वंशाकुरफलादीन् बहुकालं सन्धाय यत् क्रियते इति भरतः। संघटनमिति मेदिनी। काञ्जकमिति हलायुधः। मदिरा, अवदंशः सौराष्ट्रम् इति राजनिघण्टुः। धनुषि बाणनियोजनं समवेतः।[९]

इसी प्रकार हलायुध कोश में भी सन्धान शब्द के अर्थों को संगृहीत किया गया है। जो निम्नरुप में दृष्टिगत होते हैं।

सन्धानम् (क्ली०) सन्धीयते यत् इति (समू+धा+ल्युट्) मद्यसज्जीकरणम्। आसेषवः। सन्धानी। संन्धिका। धान्याबलम्। आवालम्। काञ्जिकम्। सौवीरः। अवन्तिसोमः। तुषोदकम्। शुक्तम्। संघट्टनम्[१०]।

उक्त अर्थों में से किसी न किसी अर्थ से सम्बन्धित सन्धान शब्द का प्रयोग काव्यों में प्राप्त होता है।[११] किन्तु इन अर्थों में से दो अर्थ ही सन्धान के अभिप्रेत हैं १ अन्वेषण २ धनुषि बाणनियोजनं समवेतः।

अतएव जिन काव्यों में एकाधिक कथाओं अथवा व्याकरण शिक्षा आदि उद्देश्यों का अन्वेषण किया गया हो उन्हे सन्धान काव्य कहेंगे।

बाज एक लक्ष्य अनेक के अनुसार—जिन काव्य ग्रन्थों में अनेक कथाएँ अथवा व्याकरण शिक्षादि उद्देश्य रुपी अनेक लक्ष्य एक काव्य शर से अभीष्ट हो उन्हें सन्धान काव्य कहेंगे।

सन्धान काव्य को चतुर्धा विभक्त किया जा सकता है। (क) श्लिष्ट काव्य (ख) शास्त्र काव्य (ग) विलोम काव्य (घ) स्तुत्यर्थक रचनाएँ श्लिष्ट काव्यों का सन्धान काव्यों में विशिष्ट स्थान है। संख्या की दृष्टि और काव्यगुणों की अपेक्षा से ये अपनी श्रेणी में सर्वप्रमुख है। शिल्प की दृष्टि से एक श्लोक की एक अनेक व्याख्याओं से संवलित रचना हो चाहे पूर्ण महाकाव्य हो सभी में श्लेषालंकार अपरिहार्य है। श्लेष का प्रयोग तो आद्य रचनाओं से सभी में उपलब्ध है किन्तु शनैः शनैः इसका काव्य में बाहुल्य दृष्टि गोचर होने लगा। यह अवस्था अलंकृति को काव्य का अपरिहार्य अंग मानने वाले युग में ही सन्धान काव्यों की हुई और इन काव्यों का विकास हुआ। इन काव्यों का प्रधान काल ८ से ११ वीं शती तक का है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समयक्रम की दृष्टि से श्लेष काव्यों में प्राचीनतम रचना संघदासमणि की 'वसुदेव हिण्डी' में 'चत्तारि अट्ठगाथा' है, जिसके चौदह अर्थ किये गये हैं। विद्वानों ने इस रचना का समय ५–६ शताब्दी स्वीकार किया है।[१२] यद्यपि संस्कृत काव्यों में श्लेषालंकार का छिटपुट प्रयोग यत्र तत्र सर्वत्र विद्यमान है, किन्तु अनेकार्थ काव्य निर्माण का बीड़ा उठाने वाले जैन मनोषी ही हैं। जैन मनीषियों द्वारा विरचित आद्य सन्धान रचनाएँ ही उपलब्ध हैं। चत्तारि अट्ठगाथा' के अतिरिक्त द्विसन्धान महाकाव्य का स्थान आता है। जिसकी रचना ८ वीं शती में महाकवि धनञ्जय ने की थी, जिसका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

द्विसन्धान महाकाव्य—

इस महाकाव्य के रचयिता महाकवि धनञ्जय हैं। इनका समय समीक्षकों द्वारा ८ वीं शती निश्चित किया जा चुका है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के अन्तर्गत मंगल में मुनिसुव्रत स्वामी का स्मरण किया है। इसके अनन्तर सरस्वती की स्तुति की है। जम्बूद्वीप के मध्य विराजमान भरत क्षेत्र गंगा सिन्धु आदि नदियों से सुशोभित है। भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नाम की नगरी है। उसमें पाण्डवों एवं अयोध्या में रामचन्द्र का जन्म लेना। दोनों नगरियों की चतुर्दिक् उन्नति के साथ २ दोनों स्थानों के अधिनायकों के जोवन चरित को एक साथ उपनिबद्ध किया गया है। लेखक ने दोनों पक्षों की घटनाओं के वर्णन की अपेक्षा विशिष्ट वर्णनों पर अधिक बल दिया है। काव्य में शब्दालंकार और अर्थालंकार भरपूर है। अन्तिम १८ वें सर्ग में कवि ने पूर्णरुपेण चित्रालंकारों की संयोजना की है।

सर्वगत प्रत्यागत का प्रयोग—

ततसार तमास्थासु सुभावानभिवारधी :।[१३]
धीरताभिनवाभासु सुस्थामा तरसातत ।।

शब्दालंकारों में श्लेष का ही प्रधान वर्णन है। कहीं २ श्लेष दुष्कर भी हो गया है। यथा –

बहुधातुगणाकीर्णन्सुमहावा गुणादिमान्।
शब्दागम इवी द्रे शान्देव लोको न मुञ्चति ।।[१४]

व्याकरण शास्त्र के समान गेरु आदि समस्त धातुओं से भरपूर (भ्वादि क्रियागणों से पूर्ण) अ (शिव) + आ (ब्रह्मा) + अ (विष्णु) अर्थात् महेश ब्रह्मा विष्णु के गुणों से युक्त (उणादि प्रकरणों सहित) अत्यन्त

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तेजस्वी (शुद्ध तथा आर्य वाक्यों के जनक) ऊँचे स्थलों को (प्रकरणों को) देव लोग नहीं छोडते हैं।

युधिष्ठिर पक्ष-हे धर्मराज ! वीर्यं शौर्य आदि गुणों के धारक सुन्दर उत्सवों में सम्मिलित हाने के लिए आतुर, अठारह प्रकृति के लोग सोना आदि धातुओ से पूर्ण इस उत्तम देश को नहीं छोडते हैं।

अर्थालिकारों का भी बाहुल्येन प्रयोग है। उत्प्रेक्षा की योजना करते हुए कवि लिखता है -

अनिधनेन रसातलवासिना विगलितो निबर्ड वऽवाग्निना।
इह मुहु : शफरी परिलंघन व्यतिकरात्त्वथतीव सरित्पतिः ॥
द्विसन्धान ८/५

अर्थात् समुद्र के नीचे धधकती सनातन वडबानल के द्वारा निरन्तर जल रहा यह समुद्र मछलियों की उछलकूद के बहाने मानों बार २ उबल रहा है।

यह द्विसन्धान काव्य शास्त्रोय सभी लक्षणों से संवलित है। इसमें अलंकारों का प्रचुर प्रयोग तो है ही किन्तु रसवत्ता भी सहृदयों को आह्लादित करने के लिए पर्याप्त है। कवि ने सम्पूर्ण काव्य में ३१ छन्दों का प्रयोग किया है जो प्राय : नियमानुकूल प्रयुक्त है। काव्य में अनुष्टुप की सुन्दर योजना है।

ऋषभनेमि काव्य [१५]

इसका अपरनाम नेमिनाभेय द्विसन्धान काव्य है। इसके रचयिता श्री सूराचार्य हैं। इनके पिता का नाम संग्रामसिंह था और इनका बाल्या-वस्था का नाम महीपाल था इन्होने द्रोणाचार्य के पास अभ्यास कर शब्द शास्त्र, प्रमाण शास्त्र और साहित्य शास्त्र का अध्ययन किया था।

इस काव्य की रचना वि० सं० १०९० में की गयी थी। इस बात की पुष्टि प्र० च० श्रृंग १४ श्लोक २५४ की सूचना से भी होती है कि सूराचार्य ने ऋषभदेव और नेमिनाथ इन दोनों तीर्थंकरों के चरित्र से युक्त द्विसन्धान काव्य की रचना की है। [१६]

नाभेयनेमि काव्य— [१७]

यह स्वोपज्ञ टोकायुक्त एक द्विसन्धान काव्य है। इसके रचयिता मुनिचन्द्र सूरि के प्रशिष्य तथा अजित देव सूरि के शिष्य हेमचन्द्र सूरि हैं। इस काव्य का संशोधन श्री सिद्धराज तथा कुमारपाल राजाओं के समकालीन कवि श्रीपाल ने किया था। इसमें भी श्री ऋषभदेव तथा नेमिनाथ का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चरित श्लेष के माध्यम से चित्रित किया गया है। इस काव्य की पाण्डु-लिपियाँ बडौदा और पाटण के पुस्तक भण्डार में सुरक्षित है।[१८] प्रस्तुत काव्य की रचना का समय १२ वीं शताब्दी होना चाहिए क्योंकि हेमचन्द्र सूरि का समय १२ वीं शती का उत्तरार्ध स्वीकार किया गया है।

श्रुतकीर्तिकृत--राघवपाण्डवीय

द्विसन्धान पद्धति में 'राघवपाण्डवीय' नाम की अनेक रचनाओं का उल्लेख विविध कोशकारों एवं इतिहासकारों ने विभिन्न स्थानों पर किया है, उनमें श्रुतकीर्ति त्रैविद्य के द्वारा रचित राघवपाण्डवीय का भी उल्लेख मिलता है।[१९]

श्रुतकीर्ति एवं उनके समय निर्णय के सम्बन्ध में मनीषियों में मतैक्य नहीं है। महामहोपाध्याय वासुदेव विष्णु मिराशी का कहना है कि श्रुतकीर्ति त्रैविद्य ने राघवपाण्डवीय काव्य की रचना की थी, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है और साथ में श्रवण बेलगोल के लेख के लिए भी अस्वीकृत करते हैं।[२०] यह बात इसलिए विचारणीय हो जाती है कि महाकवि दण्डी के द्विसन्धान का भी तो मात्र व्योज का ही उल्लेख मिलता है। जब दण्डिकृत द्विसंधान को स्वीकृत किया जा सकता है तो त्रैविद्यकृत द्विसन्धान काव्य को स्वीकृत करने में आपत्ति क्यों ?

श्रुतकीर्ति के समय निर्णय एवं उसकी स्थिति के सम्बन्ध में महत्त्व-पूर्ण लेख एवं उल्लेख मिलते हैं। शिलालेख प्राचीन समय में राजाओं की देखरेख में लिखे जाते थे इसलिए प्राचीन शिलालेखों की अप्रामाणिकता सिद्ध नहीं होती और न पम्परामायण ने ही इसे गलत ग्रहण किया। हाँ मिराशी महोदय ने कविराज का एक श्लोक उद्धृत किया और कहा है कि यदि श्रुतकीर्ति श्लेष रचनाकार हुए होते तो कविराज निम्न श्लोक में उल्लेख अवश्य करते—

सुबन्धुर्वाणभट्टश्च कविराज इति त्रयः।
वक्रोक्तिमार्ग निपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा ।[२१]

इसमें कविराज ने धनञ्जय और दण्डी जैसे श्लेष प्रधानकाव्यकारों का उल्लेख नहीं किया तो उनका भी अभाव माना जा सकता है। श्रुतकीर्ति की स्थितिकाल के सम्बन्ध में विविध प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

नागचन्द्र या अभिनव पम्प ने अपने कन्नड में लिखित रामचन्द्र चरित पुराण (पाण्डुलिपि) या पम्प रामायण (१.२४—५ बंगलौर १९२१) लिखा है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आवों वादिकथात्रय प्रदणनोकँ विद्वज्जनं मेच्चेवि
द्यावष्टँभभनप्पुकेय्दु पर वादिक्षोणिभृत्पक्षभं ।
देवेन्द्र कडितुदादि दे कडिद स्याद्वादा विद्यास्त्रदि,
त्रैविद्य श्रुतकीर्तिदिव्य मुनिवोल् विख्यातियं ताकिददं ।।
श्रु तकीर्तित्रविद्यव्रति र घवपाण्डवीयभं विवुधचमत् —
कृतिये नसिगत प्रत्यागतदिं तेक दमल कीर्तिय प्रकटिसिदं ।।

उक्त पद्य श्रवणबेलगोला के एक शिलालेख संख्या ४० सी ६४, सन् ११६३ ई० में उद्धृत है । [२२] इनका उल्लेख तेरदाल के ११२३ ई० के एक शिलालेख में भी मिलता है ।[२३]

नागचन्द्र ने उन्हें व्रती कहा है। उसी तरह तेरदाल के एक शिलालेख में भी। अर्थात् ११२३ ई० में वे व्रती थे किन्तु ११३५ ई० में एक आचार्य की प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे। विद्वानों की राय में आर० नरसिंहाचार्य कर्नाटक कवि विरचित भाग १ बँगलौर १९६१ पृष्ठ ११) नागचन्द्र ११०० ई० के लगभग हुए ।[२४]

उक्त विवरण के आधार पर यह सिद्ध हो जाता है कि श्रुतकीर्ति त्रैविद्य नाम के जैन कवि और आचार्य हुए थे जिनका अनुमानित समय ११०० ई० से ११५० के मध्य होना चाहिए। 'उन्होंने राघवपाण्डवीय' नामक श्लिष्ट काव्य की रचना भी की थी किन्तु अभी तक उक्त काव्य की पाण्डुलिपि भी प्राप्त नहीं हुई।

इस प्रकार एक साथ भिन्न २ चरितों का संयोजन करने वाले द्विसन्धान काव्यों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया। इन काव्यों में श्लिष्ट काव्यों को ही परिगणित किया गया है। वे श्लिष्ट काव्य मात्र द्वयर्थक वाले ही हैं। यहाँ द्वयाश्रय काव्यों का अवलम्बन नहीं लिया गया है समस्त द्वयाश्रय काव्य शास्त्र काव्यों की कोटि में आते हैं। शास्त्र काव्यों में एक ही काव्य के माध्यम से विशिष्ट कथा के अतिरिक्त व्याकरण आदि की शिक्षा को सरस रुप में प्रस्तुत किया जाता है। इन काव्यों के अन्तर्गत हेमचन्द्रसूरि विरचित द्वयाश्रय महाकाव्य (कुमार पाल चरित) जिनप्रभसूरि रचित श्रेणिक चरित द्वयाश्रय काव्य एवं अनेक विज्ञप्ति पत्र आते हैं, जिनका वर्णन अधिक विस्तार होने के कारण यहाँ इष्ट नहीं समझा गया।

संस्कृत में अनेक जन विलोम काव्य एवं फुटकर पद्य रचनाएं भी प्राप्त हैं जो अनेकार्थ को प्रकट करने वाली है। प्रस्तुत लेख में दो कथाओं की भिन्न २ घटनाओं को एक साथ उपनिबन्धन करने वाले काव्यों का आश्रय लेकर सन्धान काव्य का वैशिष्ट्य भी उपनिबद्ध है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन्दर्भ :—

१ ऋग्वेद १०/१८०/२ एवं ६/७५/१७ आदि।

२ भारतीय साहित्य शास्त्र और काव्यालङ्कार पृष्ठ १८।

३ रघुवंश १/१

४ शिशुपालबध १६/२-१५ श्लोक तथा १६/११६।

५ कियतार्जनीयम् १/२४ एवं १५/४५।

६ नैषधीय चरितम् १३/३४।

७ वासवदत्ता पृष्ठ ३०३।

८ कादम्बरी श्लोक संख्या ६।

९ शब्द कल्पद्रुमकोष पञ्चम काण्ड पृष्ठ २४०।

१० हलायुधकोष पृष्ठ ६८६।

११ महाभारत ५/१०/३२/सुश्रुत १/४५/कुमार संभव ५/२७/अभिज्ञान शाकुन्तल ८/२१।

१२ जैन अनेकार्थ साहित्य लेख-पं० अगरचन्द नाहटा, जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ८ किरण १।

१३ द्विसन्धान १८/१४३।

१४ द्विसन्धान ७/५५।

१५ जिनरत्नकोश पृष्ठ २१६।

१६ जैन संस्कृतसाहित्य के इतिहास भाग २ प्रकरण २४ पृष्ठ २४०।

१७ जिनरत्नकोश पृष्ठ २१०।

१८ रामचरितम् प्रशस्ति श्लोक १-४।

१९ जिनरत्नकोश।

२० धनञ्जय कवि के द्विसन्धान अथवा राघवपाण्डवीय काव्य : लेख वासुदेव विष्णु मिराशी, सत्ति, मुक्तावली सर सातवाँ पुष्प।

२१ राघवपाण्डवीय।

२२ द्विसन्धान महाकाव्य प्रधान सम्पादकीय पृष्ठ २४-२५।

२३ वही।

२४ द्विसन्धान महाकाव्य प्रधान सम्पादकीय पृष्ठ २५।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैनदर्शनसम्मत द्रव्य स्वरुप विश्लेषण

(शोध-प्रबन्धसार)

—डा० कमला पन्त

वस्तु के मूल में सूक्ष्म तत्त्वों के प्रति खोजपरक दृष्टि दर्शन का विषय है। जीवन एवं मनोमस्तिष्क की उत्पत्ति के साथ ही चेतनाचेतनमय संसार के प्रारम्भ और अन्त को जानने की सहज उत्सुकता भी उत्पन्न हुई है। दर्शन शास्त्रों ने सदैव मानव की इस जिज्ञासा का समाधान करने का प्रयत्न किया है। भारतीय अध्यात्मवाद में जैनो के धर्म एवं दर्शन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह नास्तिक दर्शनों के अन्तर्गत आता है। इनके धर्म और दर्शन प्रमुख रूप से दो सम्प्रदायों में विभाजित हैं-दिगम्बर एवं श्वेताम्बर। दोनों सम्प्रदायों में कुछ आचारगत मतभेद होने पर भी तत्त्वों के सम्बन्ध में मतभेद नहीं के बराबर है।

लोक में द्रव्य शब्द का प्रयोग धन धातु तरल पदार्थ आदि अर्थों में किया जाता है। दार्शनिक दृष्टिकोण से द्रव्य धर्मी या अवयवी संसार का मूल तत्त्व है क्योंकि द्रव्य के अभाव में संगठन का होना सम्भव हो नहीं है। जैनों के धर्म एवं दर्शन में ज्ञान, तत्त्व, कर्म, आचार सम्बन्धी सभी विचारों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का केन्द्र बिन्दु एक ही वस्तु है। वह है द्रव्य। भारतीय दर्शनों में गुण और द्रव्य से सम्बन्धित चार प्रमुख विचारधारायें मिलती हैं—

(१) गुण और द्रव्य अथवा धर्म एवं धर्मी एक दूसरे से पृथक् अस्तित्व (न्याय वैशेषिक का मत)

(२) धर्म-धर्मी को पृथक् मानते हुए भी तत्त्वतः उनका अभेद (सांख्य-योग का मत)

(३) धर्मी मात्र सद्भाव, धर्मी में धर्मों का मिथ्याभास (अद्वैत वेदान्त का मत)

(४) धर्म मात्र सद्भाव, धर्मी में धर्मी का भ्रम (बौद्ध मत)

इन एकान्तवादी मतों के विपरीत जैन दर्शन की अनेकान्त दृष्टि सभी विचारों में सत्य का अंश विद्यमान मानती है। अनेकान्तवाद के अनुसार अलग-अलग दृष्टियों से एक वस्तु में दोनों स्वरुप होते हैं। जैसे स्वर्ण हार, अँगूठी, कर्णाभूषण इत्यादि विशेष रुपों में आता है। ये आकार नष्ट और उत्पन्न होते रहते हैं किन्तु इस वस्तु में पीला रंग, ठोसपन आदि अपरिवर्तनशील धर्म भी होते हैं। एक स्थिर रुप होता है जिसके कारण वह स्थिर धर्मी या स्वर्ण द्रव्य कहलाता है। इसीलिए जैन दर्शन वस्तु के स्थिर धर्मों को गुण और परिवर्तनशील धर्मों को पर्याय कहकर गुणपर्यायवाद वस्तु को द्रव्य मानते हुए अपनी समन्वयात्मक विचारधारा का परिचय देता है।

जैन सम्मत द्रव्य में चेतन एवं अचेतन दोनों तरह की सृष्टि का समावेश हो जाता है। जगत् के मूल में अनेक तत्त्वों की सत्ता स्वीकार करने के कारण जैन दर्शन को न्याय, वैशेषिक एवं मीमांसा के समान बहुत्ववादी और जीव-अजीव (द्रव्य का प्रमुख विभाजन) के विभाग के कारण सांख्य के समान (पुरुष-प्रकृति) द्वैतवादी भी कहा जा सकता है। दर्शन जगत् के कुछ विद्वानों की धारणा है कि जैन दर्शन की तत्त्व मीमांसा भौतिकवादी है किन्तु शोध-अध्ययन के पश्चात् प्रतीत होता है कि इनकी तत्त्व मीमांसा यथार्थ एवं आदर्श का सुन्दर और सन्तुलित समन्वय है। जैन विचारक व्यवहारनय से जीव को कर्ता और भोक्ता स्वीकार करते हैं। उसके कर्तृत्व और भोक्तृत्व को भ्रम नहीं मानते। सम्भवतः इसीलिए कुछ विद्वानों ने जैन सम्मत चेतन द्रव्य को भौतिकवादी ही कह दिया है किन्तु निर्णायक मत देने से पहले इनके निश्चयनय एवं पर्यायार्थिकनय के सिद्धान्त पर ध्यान देना अपेक्षित है! निश्चयनय से तो आत्मा न कर्ता है और न

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भोक्ता। निश्चयनय एक प्रकार से पारमार्थिक दृष्टि है। निश्चयनय से देखें तो जीव द्रव्य अनन्त ज्ञान-शक्ति एवं दिव्यानन्दमय होने से अद्वैत वेदान्तसम्मत ब्रह्मस्वरुप से काफी कुछ समानता रखता है।

यथार्थवादी होने से स्याद्वादी बाह्येन्द्रिय एवं अन्तरिन्द्रिय दोनों के द्वारा अनुभूत जगत् को भ्रम नहीं कहते। पुद्गल द्रव्य समस्त भौतिक संसार को संगठित करता है। जैनों ने ईश्वर की सत्ता को सर्वथा अस्वीकृत करते हुए कर्म परम्परा को स्वतन्त्र माना है। कर्म अपना फल देने में सक्षम है। इस विषय में इनका मत निरीश्वर सांख्य और मीमांसा के विचारों से कुछ मिलता है किन्तु मीमांसा दर्शन में धर्म-कर्म के निर्णय हेतु श्रुतियों का भी अवलम्ब लिया गया है। जैनों के धर्म एवं दर्शन में मुक्त जीवों को पूज्य मानकर ईश्वर की कमी पूरी कर दी गयी है। ईश्वर जैसी किसी सर्वनियामक सत्ता में विश्वास न करते हुए भी वे प्रत्येक जीव को साधनाओं द्वारा आत्मशुद्धि कर परमात्मा बनने को छूट देते हैं। अन्य दार्शनिकों के समान जैनों ने भी सकाम कर्मवश चेतन-अचेतन के संयोग को बन्धन और वियोग को मोक्ष कहते है। बन्धन नित्य नहीं है किन्तु मुक्ति नित्य है। जैन दर्शन में मान्य कर्मवाद परमाणु संगठनआस्त्रव, बन्ध, संवर एवं निर्जरा की प्रक्रियाअत्यन्त स्पष्ट, विशद, सूक्ष्म एवं सर्वथा मौलिक प्रतीत होती है। मोक्ष मार्ग अर्थात् रत्नत्रय के अन्तर्गत सम्यक् श्रद्धा, ज्ञान, व्रत, और प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, लेश्या-शोधन आदि विविध साधनाये आ जाती हैं। वस्तुतः प्राणी मात्र के प्रति प्रेम, विश्वबन्धुत्व, अहिंसा-सत्यादि करुणा, मानवीयता एवं नैतिकता भारतीय संस्कृति का प्राणतत्त्व है किन्तु जैन दर्शन में अहिंसा का अत्यन्त गहराई से विवेचन किया गया है। कर्म से ही नहीं अपितु मन एवं वाणी से भी किसी जीव को पीड़ा पहुंचाना अनुचित माना जाता है। इनकी समस्त साधनाओं के मूल में अहिंसा का सन्देश निहित है. वैसे तो आन्तरिक और बाह्य शुद्धता अन्योन्याश्रित है किन्तु जैन दर्शन आन्तरिक शुद्धता, निश्छलता और भावों की पवित्रता को सर्वाधिक महत्त्व-पूर्ण स्वीकार करता है। ध्यातव्य है कि इन्होंने आचार और तपश्चर्या पर बहुत कठोरता से विचार किया है किन्तु व्यावहारिक बुद्धि का परिचय देते हुए गृहस्थ एवं गृहत्यागी दोनों की क्षमता को ध्यान में रखकर दोनों के लिए अलग-अलग व्रतों का वर्णन भी किया है। आत्मशुद्धि के उपायों से मानव की सहज प्रवृत्तियाँ उपेक्षित एवं दमित नहीं होती क्योंकि मर्यादित विषय-भोग, इन्द्रिय-नियन्त्रण और दमन का अभिप्राय विषयों से मुँह मोड़ना नहीं है अपितु धीरे-धीरे (यथाशक्ति) विषयों के मूल में निहित रागद्वेषात्मक भावों का दमन करना है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अन्य भारतीय अध्यात्मवादियो के समान जैन मत में भी चित्त की शुभ में प्रवृत्ति तदनन्तर निवृत्ति को कर्मपाशों से छूटने का अचूक साधन माना जाता है। वैदिक परम्परा एवं बौद्धों ने भी काम, क्रोध, लोभ, मोहादि कषायरुप चित्तमलों को समस्त दुःखों का कारण बताया है नास्तिक दर्शन होते हुए भा चेतन्य के नित्यत्व, परलोक, पुनर्जन्म, कर्म जैसे अनेक विषयों में आस्तिक दर्शनों से जैन दर्शन की तुलना की जा सकती है। यह निरोश्वर सांख्य और मीमांसा के समान ईश्वर तत्त्व का विरोधी है एवं चार्वाक और बौद्धों को तरह वेदों पर आस्था नहीं रखता। इसकी मौलिक रुारेखा बौद्ध दर्शन को अपेक्षा वैदिक दर्शनों के अधिक समीप प्रतीत होती है अनात्मवाद बौद्ध सम्प्रदायों की वैदिक सम्प्रदायों से विभाजक रेखा कही जा सकती है। इस दृष्टि से न केवल प्राणियों में अलग-अगल आत्मा मानने से प्रत्युत वस्तुओं को द्रव्यरुप मानने से भो जैन दर्शन वैदिक दर्शनों के निकट लगता है। विरोधी विचारों में अविरोधी भाव खोजकर एक नए सिद्धान्त का स्थापना को मौलिकता का अभाव न कहकर एक विशिष्टता मानना अधिक न्यायसंगत है। व्यवहार एवं परमार्थ के बीच तत्त्व बिचार कर दोनों को मर्यादा बनाए रखने वाले और सभी सिद्धान्तों पर कुछ न कुछ आस्था रखने वाले दार्शनिक सिद्धान्तों पर आधारित विचारों ने दर्शनजगत् को एक नयी दृष्टि दी है। इनको तत्त्व मीमांसा कर्म मोमांसा और आचार मामांसा का भारतीय दर्शन जगत् में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

जैन सम्मत द्रव्य से सम्बन्धित इन विवेच्य तथ्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोध का विषय है। प्रस्तुत शोधविषय प्रमेय के सम्बन्ध में नास्तिक एवं प्रमुख आस्तिक दर्शनों में प्राप्त विवेचन का सक्षिप्त पर्यालोचन एवं यथावसर प्रत्याख्यान प्रस्तुत करते हुए जैनसम्मत द्रव्यसिद्धान्त के प्रकाशन एवं मूल्याङ्कन के लिए महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। सम्पूर्ण चेतनाचेतनमय सृष्टि का द्रव्य से सम्बन्ध बताते हुए उसकी उपादेयता स्पष्ट करना एक विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा जैनसम्प्रदाय की विशिष्टता को प्रस्तुत करना अभिप्रेत है। इसके लिए यथास्थान विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक शैली का आश्रय लिया गया है और जैनसम्मत द्रव्य की प्रमुख भारतीय दर्शनों में मान्य द्रव्य से यथास्थान समानता, भिन्नता, समन्वयात्मकता एवं मौलिकता प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में अध्यार्य का निष्कर्ष भी लिखित है। यहाँ प्रत्येक अध्याय के वर्ण्य विषय की संक्षिप्त रुपरेखा प्रस्तुत है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रथम अध्याय में द्रव्य शब्द के लोकप्रचलित, साहित्य एवं दर्शन जगत् में प्रयुक्त अर्थों का उल्लेख करते हुए प्रमुख भारतीय दर्शनों के अनुसार द्रव्य के स्वरुप और भेदों का वर्णन किया गया है। अध्याय के अन्त में द्रव्य के सम्बन्ध में जैनों के दृष्टिकोण को संक्षेप में बताया गया है। इस अध्याय में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि द्रव्य या वर्मी भारतीय दर्शन की तत्त्वविवेचना का मूल आधार है। दार्शनिक दृष्टि से ही नहीं अपितु व्यावहारिक दृष्टि से भी संसार में दो तरह के द्रव्य दिखायी देते हैं जड़ और चेतन

द्वितीय अध्याय का प्रमुख विवेच्य विषय आत्मा है। जैन दर्शन के अनुसार आत्म स्वरुप, भेद, ईश्वर तत्त्व के निषेध इत्यादि विचारों को स्पष्ट करते हुए यथावसर अन्य दर्शनों में मान्य आत्मतत्त्व से तुलना भी की गयी है।

तृतीय अध्याय अजीव द्रव्य के स्वरुप, भेदों एवं वस्तुओं के संगठन की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। अचेतन जगत् से सम्बद्ध समस्त वस्तुओं का निरुपण इसी अध्याय में है।

चतुर्थ अध्याय चेतन एवं अचेतन द्रव्य के संयोग रूप बन्धन से सम्बद्ध है। यह दो सोपानों में विभाजित है। प्रथम सोपान में जीवों को बन्धन में बाँधने कारणों के विश्लेषण के साथ जीव द्रव्य की ओर उनके प्रवाह की प्रक्रिया बतायी गयी है। द्वितीय सोपान में अन्य भारतीय दर्शनों के अनुसार बन्ध की प्रक्रिया बताते हुए जैन दर्शन में बन्ध की स्थिति, कारण कर्म-परम्परा इत्यादि का विवेचन और जैनों के वैशिष्ट्य का प्रकाशन किया गया है। इसी अध्याय में भगवान् महावीर के दर्शन और चिन्तन का सार विहित है। क्रोध, मान माया, लोभादि भावशस्त्रों से द्रव्यशस्त्रों का जन्म होने के कारण यहाँ भावशस्त्रों की प्रबलता को प्रमुख विवेच्य विषय बनाया गया है।

पञ्चम अध्याय भी दो सोपानों में विभाजित है। प्रथम सोपान में कर्म-प्रवाह के निरोध के उपायों अथवा संवर के स्वरुप एवं भेदों को प्रदर्शित किया गया है। द्वितीय सोपान में आत्मा में पहले से संयुक्त कर्मयुद्गलों के अलग होने की प्रक्रिया का निरुपण है। संवर और निर्जरा दोनों जीव को बन्धपाशों से मुक्त करने वाली प्रक्रियायें हैं। इस अध्याय के अन्तर्गत अन्य दर्शनों से साम्य रखने वाली एवं मौलिक दोनों प्रकार की अनेक साधना पद्धतियाँ आ जाती हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

षष्ठ अध्याय में मोक्ष का निरुपण है। इसमें जैन सम्मत मोक्ष मार्ग अन्य दर्शनों के अनुसार मोक्षोपाय, अणुव्रतों, महाव्रतों, मोक्ष-स्वरुप, मुक्त जीव के स्वरुप गति एवं अन्य दर्शनों के मोक्ष सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। मोक्ष के सम्बन्ध में जैनों की समन्वयात्मक दृष्टि के प्रकाशन के साथ ही उनकी विशिष्टता भी उल्लेखित है।

अन्तिम अध्याय उपसंहारात्मक है। इसमें द्रव्य की महत्ता, जैनों के अनेकान्तात्मक दृष्टिकोण इत्यादि पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए शोध प्रबन्ध के गवेषणा प्रसूत निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

जैन सम्मत द्रव्य के स्वरुप का विश्लेषणात्मक अध्ययन दर्शन प्रेमियों को प्रमुख भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं के विशेषकर जैन सम्मत द्रव्य के सम्बन्ध में एक विशिष्ट दृष्टि देने का प्रयास करेगा क्योंकि द्रव्य ही दार्शनिक विचारधाराओं की रीढ़ है जिसके द्वारा समस्त वस्तुयें व्याख्यायित होती हैं।

C/o डॉ० जे० एन० जोशी
कृष्णापुर महल, तल्लीताल
नैनीताल (यू० पी०)

प्रेरक प्रसंग

शा का धर्म

एक बार देवदास गांधी जब ब्रिटेन गये तो वे प्रसिद्ध साहित्यकार जार्ज बर्नाड शा से मिले। वार्तालाप के दौरान उन्होंने शा से पूछा—आपको कौनसा धर्म अच्छा लगता है। शा ने उत्तर दिया—"जैनधर्म में आत्मा को सम्पूर्णतः शुद्ध करके परमात्मा बनाने का विधान है। अन्य धर्मों में परमात्मा केवल एक ही माना गया है। उनके सिद्धान्तानुसार परमात्मा अन्य कोई नहीं बन सकता, वह चाहे कितनी ही तपस्या क्यों न करे।

—रमेश कुमार जैन एडवोकेट
नई दिल्ली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तन्दुलकाय मत्स्य और आज के मानव

– राष्ट्रसन्त श्री अमरमुनि

तन्दुल मत्स्य जैसों की दुर्भावनाओं का तो बाहर की दुष्प्रवृत्तियाँ से कोई अता-पता ही नहीं लगता है। फिर भी उसका वर्णन है कि वह तन्दुल अर्थात् चावल के दाने के समान लघु कार्य वाला मत्स्य विशेष अपने मन के अन्दर-ही अन्दर हिंसा की इतनी भयंकर भावनाएँ अपने अल्प जीवन में इतनी अधिक कर लेता है कि मृत्यु के अनन्तर उसे अन्तिम सातवीं नरक में भयंकर पीड़ाओं के रूप में दुर्भावनाओं का भुगतान करना होता है। तन्दुल मत्स्य का देह इतना क्षुद्र है कि वह बाहर में किसी अन्य प्राणि की हिंसा को कोई एक क्षुद्र-सी खरोंच भी नहीं कर पाता। जीवन-काल भी बहुत ही अल्पतर है। केवल हिंसा की दुर्भावना ही है कि दुर्भाग्य से मैं बहुत छोटा हूं, कुछ कर नहीं सकता। यदि मैं इन महाकाय बड़े मगरमच्छों की तरह होता, तो सागर की इन सभी मच्छलियों को उदरस्थ कर जाता। क्या मजाल किसी की कोई मत्स्य मेरे पास से गुजरे और बच कर निकल जाए। कुछ ऐसी ही ये दुर्भावनाएँ हैं, जो उसे अधः पतन की ओर ले जाती हैं। अन्ततः सातवीं नरक तक की यात्रा करा देती हैं। प्रशमरति आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनेक उद्धाहरण प्रस्तुत सम्बन्ध में आज भी हमारे समक्ष है।

प्राचीन काल से उल्लिखित होता हुआ तन्दुल मत्स्य ही क्यों, आज भी अनेक मानव ऐसे मिलते हैं कि जो दुर्भावनाओं के तन्दुल मत्स्य जैसे ही शिकार हैं। मैंने देखा है, कुछ लोगों को क्रोध से बेभान होकर प्रतिपक्षी विरोधी को अभद्र गालियां देते हुए कि तू मुझे क्या समझता है, मैं तुझे कच्चा ही चबा जाऊंगा, तेरी हड्डी-पसली सब तोड़कर रख दूंगा। तेरा ही विनाशा नहीं, मैं तेरे समय वंश को नष्ट कर दूंगा। फलतः धरती पर से तेरी वंश-परम्परा ही सदा-सर्वदा के लिए मूलतः नष्ट हो जाएगी और विचित्रता यह है कि गालियां देने वाले इद अनेक लोगों में ऐसे भी क्षीण कार्य होते हैं कि बाहर में करने को क्या करेगे, अपने स्वयं का शरीर भी अच्छी तरह नहीं संभाल पाते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिगम्बर जैन मुनि परिषद् का गठन

श्रवणबेलगोल में दिगम्बर जैन मुनि-परिषद् द्वारा १७ फरवरी १९८१ को पारित प्रस्ताव

भगवान् गोमटेश्वर बाहुबली प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पुण्य अवसर पर समागत श्रमणों, दिगम्बर जैन आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं एवं अन्य त्यागीजनों का सम्मेलन. आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी महाराज की अध्यक्षता और आचार्य श्री बिमलसागरजी महाराज तथा एलाचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में ५० आचार्यों एवं मुनियों. २५ आर्यिकाओं. २ ऐलकों, ३३ क्षुल्लकों और २४ क्षुल्लिकाओं ने सक्रिय भाग लिया। इस श्रमण संघ की कई बैठकें हुई। अनेक मुनियों एवं त्यागीजनों ने उस विचार-विमर्श में भाग लेकर अनेक उपयोगी सुझाव दिये। विचार विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गये—

प्रस्ताव क्र०. १

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि समस्त दिगम्बर जैन त्यागी जनों की एक परिषद् "दिगम्बर जैन मुनि परिषद्' के नाम से गठित की जाये, जिसकी एक नियामक समिति होगी। इस समिति के निम्न सदस्य होंगे—

१ आचार्यरत्नश्री देशभूषणजी महाराज
२ आचार्य धर्मसागरजी
३ आचार्य श्री बिमलसागर जो
४ आचार्य श्री सन्मति सागर जी
५ एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्द जी
६ आचार्य श्री विद्यासागर जो
७ आचार्य श्री सुमतिसागर जी
८ गणिनी ज्ञानमती जी
९ गणिनी विजयमती जो
१० गणिनी विशुद्धमती जी
११ आर्यिका सुपार्श्वमती जी
१२ आर्यिका राजमती जी
१३ आर्यिका विमलमती जी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रस्ताव क्र. २

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि कम से कम दो मुनि दो आर्यिकाएँ, दो क्षुल्लिकाएँ अथवा दो क्षुल्लक या दो समलिंगी पिच्छीधारी, अपने दीक्षागुरु आचार्य से आज्ञा लेकर ही बिहार कर सकते हैं। अकेले मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक या क्षुल्लिका बिहार नहीं कर सकते।

प्रस्ताव क्र. ३

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि दीक्षा लेने से पूर्व दीक्षार्थी को निम्नलिखित प्रतिज्ञा-पत्र पढ़ना और बाद में उसका पालन करना आवश्यक है। दीक्षागुरु आचार्य भी दीक्षा देते समय इस प्रतिज्ञा-पत्र को नव-दीक्षित से पढ़वा कर उसे प्रतिज्ञा-बद्ध करें।

दीक्षा से पूर्व प्रतिज्ञा-पत्र का प्रारूप

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि—

१ मैं प्रातः स्मरणीय महान आचार्य कुन्दकुन्द एवं चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के गौरव को सदा मन, वचन, काय से सुरक्षित रखूंगा। मैं ऐसा कार्य नहीं करूँगा, जिससे इस महान परम्परा का गौरव कम होता हो।

२ मैं आचार्य महाराज के अनुशासन का हृदय से पालन करूँगा।

३ मैं अपने गुरु के आदेश के बिना संघ का त्याग नहीं करूँगा।

४ धर्म-प्रचार के महान प्रयोजन के लिए गुरु महाराज की अनुमति से संघ से पृथक् बिहार करने की स्थिति में भी, मैं एकल बिहार नहीं करूँगा। मैं कम से कम दो क्षुल्लकों या इससे ऊपर के पदाधिकारी त्यागियों के साथ ही बिहार करूँगा।

५ मैं सतत स्वाध्याय द्वारा अपने शास्त्र ज्ञान को बढ़ाने का प्रयत्न करता रहूंगा। अंत में, मैं श्रमण, श्रावक और श्राविका, चतुःसंघ से निवेदन करता हूं कि वह मुझे दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान करें।

प्रस्ताव क्र. ४

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि —

(क) जिन्होंने मुनि-दीक्षा लेने के बाद कम से कम बारह वर्ष तक शास्त्रों का अध्ययन किया हो, जिन्हें प्रायश्चितादि शास्त्रों का पर्याप्त ज्ञान हो, तथा जिन्हें शिक्षा-देने की योग्यता हो, ऐसे मुनि ही गुरु की आज्ञा से आचार्य पद ले सकते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अथवा

(ख) आचार्य स्वेच्छा से अपने किसी सुयोग्य शिष्य को अपना आचार्य पद प्रदान कर सकते हैं।

प्रस्ताव क्र. ५

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि वर्षायोग में मुनियों एवं त्यागी जनों के अध्यापन एवं स्वाध्याय हेतु सुयोग्य विद्वानों की व्यवस्था की जाये।

प्रस्ताव क्र. ६

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि वृद्ध (स्थविर) साधुओं तथा अध्ययन करने वाले मुनियों की साधना एवं अध्ययन के लिए निम्नलिखित स्थानों पर समुचित व्यवस्था रहेगी—

१ श्रवणबेलगोल
२ सोनागिरि
३ कोथली
४ जिनसेन मठ, कोल्हापुर

प्रस्ताव क्र. ७

यह दिगम्बर जैन मुनि-सम्मेलन निश्चय करता है कि पिण्डशुद्धि वाले दिगम्बर जैनधर्मानुयायी, मुनिजनों एवं त्यागियों को आहार दे सकते और दीक्षा ले सकते हैं।

श्रवणबेलगोल
१७-२-८१

श्रमणसेवक—
भागचन्द सोनी
नीरज जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूज्य आचार्य श्री चारित्र चक्रवर्ति शान्ति सागर जी महाराज

का संक्षिप्त जीवन परिचय

१ जन्म स्थान – भोज ग्राम (कोल्हापुर ।।
२ पितृ नाम—श्री भीमगौड़ा पाटील।
३ मातृ नाम— सत्यवती।
४ जन्म तिथि—अषाढ़ कृष्ण ६ वि० सं० १९२९।
५ आचार्य श्री का जन्म कालीन नाम—सात गोड़ा।
६ क्षुल्लक दीक्षा—संवत् १९७० में।
७ मुनि दीक्षा – फाल्गुन शु० १३ सं० १९७७ में आचार्य श्री आदि सागर जी ने दीक्षा दी।
८ प्रथम चतुर्मास - काम नोली में।
९ आचार्य पद सन् १९२४ में समडोली में
१० सम्मेद शिखर जी पहली यात्रा सन् १९३० ई० में। वीर सं० २४५४)
११ आचार्य श्री के आदि शिष्य—श्री १०८ वीर सागर जी महाराज।
१२ हीरक जयन्ती – ८१ में जन्म दिवस पर पलटन में सन् १९५२ में।
१३ मुनि जीवन—लगभग ३५ वर्ष।
१४ मुनि जीवन में उपवासों की संख्या – ९३३८ अर्थात् २५ वर्ष सात मास
१५ आचार्य श्रीसे दीक्षित मुनियों की संख्या – १८।
१६ अन्तिम आहार—१४ अगस्त १९५५ को।
१७ अन्तिम आहार दाता—बारामती के गुरु भक्त सेठ चन्दूलाल जी सर्राफ
१८ अन्तिम सन्देश—सल्लेखना के २६ वें दिन ८ सितम्बर १९५५ को।
१९ आचार्य पद त्याग की घोषणा—२४ अगस्त १९५५ को।
२० आचार्य श्री केप ट्टाधीश—श्री १०८ वीर सागर जी महाराज।
२१ जीवन लीला का अन्तिम दिन—१८ सितम्बर १९५५ भाद्र पद शु० २ सं० २०१२।
२२ शरीर त्याग के समय आयु ८४ वर्ष।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दानवीर बाबू हरप्रसाद दास और उनकी संस्थाएँ

लेo-मदन मोहन प्रसाद वर्मा

बाबू हरप्रसाद दास जी बिहार राज्य के अविस्मरणीय व्यक्तियों में एक गौरवशाली नाम है। उन्होंने इस राज्य में शिक्षा के विकास और धर्म की अभिवृद्धि के लिए अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति का ट्रस्ट कर दिया।

इनका जन्म ८ अप्रैल सन् १८४८ को आरा में हुआ था। उनके दत्तक पुत्र श्री धनेन्द्र दास जी जैन का विवाह राजर्षि बाबू देव कुमार जी की बहन नेमसुन्दरी बीबी से हुआ। इन दोनों की भी दान धर्म की कथाएँ गौरवपूर्ण रही हैं और इसपर एक अलग लेख तैयार हो सकता है।

बाबू हरप्रसाद दास जी के ट्रस्ट डीड के अनुसार बाबू हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, बाबू हरप्रसाद दास जैन हाईस्कूल, बाबू हरप्रसाद दास जैन धर्मशाला और अग्रवाल होस्टल-पटना की स्थापना की गई। इन संस्थाओं के अतिरिक्त सन् १९७२ में एक शिशु संस्थान की स्थापना हुयी। इन सभी संस्थाओ के माध्यम से इस जिले का शायद ही कोई ऐसा परिवार हो, जहां का कोई न कोई बालक, इनमें से एक या अनेक संस्थाओं में अध्ययन न कर चुका हो।

शिक्षा का स्तर सभी संस्थाओं का अत्यन्त उच्च कोटि का रहा है, यद्यापि जब से हरप्रसाद दास जैन कॉलेज को बिहार सरकार ने अंगीभूत कॉलेज बना लिया, तब से इस कॉलेज का स्तर इतना ऊँचा नहीं रह सका, जितना कि ट्रस्ट के अन्तर्गत था।

शिक्षा क्षेत्र के अतिरिक्त दानधर्म के क्षेत्र में भी ट्रस्ट के द्वारा ट्रस्ट समिति लगभग ४०,०००/-रुपये का प्रतिवर्ष परोपकार एवं अन्य धार्मिक कार्यो में ट्रस्ट डीड के आदेशानुसार खर्च कर रही हैं।

बाबू हरप्रसाद दास जी ने जब ट्रस्ट का गठन किया उस समय ट्रस्ट समिति में निम्नलिखित ट्रस्टियों का उन्होंने चयन किया।

१. बाबू निर्मल कुमार जैन, आरा २. बाबू सिताब चन्द जैन, आरा ३ बाबू बच्चू लाल जैन, आरा ४. बाबू सुपार्श्व दास गुप्त, आरा ५. बाबू जय बहादुर जी, आरा ६. बाबू श्याम सुन्दर दास जी, आरा ७. श्री राम कुमार जैन, आरा ८. श्री उदय कुमार जैन, आरा ९. श्री बाबू मन्दिल दास जैन, आरा १०. श्री सेठ सर्वसुख दास, जयपुर ११. श्री कुंज बिहारी लाल, पटना १२. श्री बांकेलाल, पटना १३. श्री नरसिंह सहायजी, आरा १४. श्री बिन्दा प्रसाद जी, आरा।

तब से यानि सन् १९२० के बाद से अबतक इस ट्रस्ट के निम्न व्यक्ति अध्यक्ष एवं मंत्री हो चुके हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री आदिनाथ ट्रस्ट को संस्थापना के समय से लेकर अब तक के ट्रस्ट अध्यक्षों की सूचि:-

१	श्री कुंज बिहारी लाल	३१-१-१९१९ से २६-६-१९१९ तक
२	श्री अमीर चन्द जी	२५-६-१९१९ से ८-५-१९३७ तक
३	श्री निर्मल कुमार जी	८-५-१९३७ से १२-५-१९४५ तक
४	श्री बच्चू लाल जी	१२-५-१९४५ से १७-११-१९४६ तक
५	श्री श्याम सुन्दर दास जी	१७-११-१९४६ से २७-११-१९४८ तक
६	श्री निर्मल कुमार जी	२७-११-१९४८ से ११-११-१९५१ तक
७	श्री चक्रेश्वर कुमार जी	११-११-१९५१ से ०२-१२-१९६० तक
८	श्री लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता	२-१२-१९६० से १९-११-१९६३ तक
९	श्री रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल	१९-११-१९६३ से ५-१२-१९६५ तक
१०	श्री महेन्द्र कुमार जैन	०५-१२-१९६५ से १८-१२-१९७० तक
११	श्री लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता	१८-१२-१९७ से ११- २-१९७३ तक
१२	श्री सुबोध कुमार जन	११-०२-१९७३ से ०२-० -१९८३ तक
१३	श्री दिनेन्द्र चन्द जैन	०२-०१-१९८३ से ०५-०१-१९८६ तक
१४	श्री सुबोध कुमार जैन	०५-०१-१९८६ से १४-१२-१९८६ तक
१५	श्री हरखेन कुमार जैन	१४-१२-१९८६ से ०१-०९-१९८८ तक
१६	श्री दिनेन्द्र चन्द जन	०१-०९-१९८८ से अब तक

श्री आदिनाथ ट्रष्ट की संस्थापना के समय से लेकर अब तक के मंत्रियों की सूचि:-

१	श्री सीताब चन्द जी	१३-०१-१९२० से ११-११-१९५१ तक
२	श्री रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल	११-११-१९५१ से २०-१२-१९५५ तक
३	श्री सुपार्श्व दास गुप्ता	२०-१२-१९५५ से १०-०१-१९६० तक
४	श्री सुबोध कुमार जैन	१०-०१-१९६० से १९-१२-१९६१ तक
५	श्री नरेन्द्र कुमार जैन	१९-१२-१९६१ से २८-०१ १९६८ तक
६	श्री दिनेन्द्र चन्द जैन	२८-०१-१९६८ से ०५-०२-१९७० तक
७	श्री ऋषभ सुन्दर दास जी	०५- २-१९७० से १८-१२-१९७० तक
८	श्री दिनेन्द्र चन्द जैन	१२-१२-१९७० से ०२-०१-१९८३ तक
९	श्री विजेन्द्र प्रसाद जैन	०२-०१-१९८३ से अब तक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फिलहाल ट्रस्ट समिति में निम्नांकित सदस्य हैं :—

१. डॉ० दिनेन्द्र चन्द्र जैन-अध्यक्ष २. श्री विजेन्द्र प्रसाद जैन-मंत्री ३. श्री गजेन्द्र चन्द जैन संयुक्त मंत्री ४. श्री मिथिलेश कुमार जैन-प्रभारी धर्मशाला ५. श्री नेम कुमार जैन ६. श्री भैरव कुमार प्रसाद जैन-सदस्य ७. श्री ऋषभ सुन्दर दास-सदस्य ८. श्री सुबोध कुमार जैन-सदस्य ९. श्री दयाल चन्द जैन-सदस्य १० श्री कमल किशोर जैन-सदस्य ११ श्री प्रेम कुमार जैन-सदस्य १२. श्री शरत् कुमार जैन सदस्य १३. श्री प्रताप चन्द्र जैन-सदस्य १४. श्री बाबू श्रवण कुमार जैन-आरा

श्री हर प्रसाद दास जैन धर्मशाला में २६ कमरे हैं और प्रतिवर्ष लगभग ११,००० यात्री लाभ
उठाते हैं। दातव्य औषधालय में निःशुल्क स्वास्थ सेवा उपलब्ध है और इससे भी लगभग १०,००० लोग प्रति वर्ष निःशुल्क लाभ उठाते हैं। अग्रवाल होस्टल पटना में लगभग २५ छात्रों के रहने की व्यवस्था है। परन्तु पुराने भवन के स्थान पर नव निर्माण की एक अच्छी योजना पर विचार चल रहा है। धर्मशाला के उपर श्री १००८ आदि प्रभू का एक अत्यन्त मनोरम मन्दिर है और साथ में संगमरमर की एक अलौकिक रचना पत्थर की श्री सम्मेदशिखर के अनुरुप बनी हुयी है। बाबू साहेब ने गिरनार पर्वत, चम्पापुर, पावापुर और श्री सम्मेदशिखर में जैन मंदिरों का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा कराई थी। सम्मेदशिखर में तो तेरह पंथी कोठी की मुख्य बेदी और मूल प्रतिमा इन्हीं के द्वारा स्थापित और प्रतिष्ठित हुई थी।

बाबू हरप्रसाद दास जी ने अपनी दानशीलता के द्वारा बिहार प्रान्त में दानशीलता का एक अमर उदाहरण पेश किया है और उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भगवती सूत्र में भगवान महावीर एवं गोशालक

कई वर्ष पूर्व भगवती सूत्र में भगवान महावीर और आजीवक संप्रदाय के प्रमुख मंखलिपुत्र गोशालक के विषय में जो पढ़ा था, वह पढ़ कर दुःख हुआ था कि भगवान महावीर के विषय में अपमान जनक बातें जैसी भगवती सूत्र में लिखी है वह कितनी भ्रामक और अशोभन है।

उसी विषय में 'तित्थयर' के जुलाई १९९० के अंक में डा० मोहन लाल मेहता का लेख पढ़ा तो उस समय की पढ़ी हुई बातें फिर ताजा हो गई।

जैसे जैसे लेख पढ़ता गया वैसे-वैसे उस समय, अनेक वर्ष पूर्व, मन में आया हुआ उद्वेग दूर हो गया। इस विषय पर डा० मेहता ने अपने लेख "क्या व्याख्या प्रज्ञप्ति का पन्द्रहवाँ शतक प्रक्षिप्त है ?" में व्याख्या प्रज्ञप्ति अपर नाम भगवती सूत्र के पन्द्रहवें शतक में गोशालक और महावीर के सम्बन्ध में लिखी बातों को अशोभन ही नहीं बताया है बल्कि सारे स्थलो की सम्यक विवेचना भी इस प्रकार की है जिससे कि पढ़ने वालों को दूध का दूध और पानी का पानी स्पष्ट हो जाए। सत्य/असत्य पर उन्होंने निर्भीक होकर प्रकाश डाला है उसे पढ़कर उनके प्रति सम्मान हुआ।

गोशालक और महावीर के बीच पारस्परिक कलह का वर्णन, उसका अशोभन ढंग, असंयत भाषा तथा महावीर पर मांसाहार का दोष लगाना आदि सभी बातों पर उन्होंने आक्षेप किया है।

इस लेख के लिए हम उन्हें साधुवाद देते हैं।

१४-९-९०

सु० कु०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों में पुद्गलद्रव्य विचार

डॉ० ऋषभचन्द्र जैन फौजदार

आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने ग्रन्थों में आगम परम्परा के मूल सिद्धान्तों को सुरक्षित किया है। इसीलिए गौतम गणधर के साथ उनका स्मरण किया जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने नियमसार में छहद्रव्यों को तत्त्वार्थ कहा है। ऐसा अन्यत्र कहीं नहीं कहा गया है। अतः यह उनका वैशिष्ट्य है। पंचास्तिकाय संग्रह में पाँच अस्तिकायों और षड्द्रव्यों का स्वरूप बताया है। प्रवचनसार में भी छहद्रव्यों पर विचार किया गया है। कुन्दकुन्द के उक्त कथन से ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन आगमिक परम्परा में द्रव्यों को तत्त्वार्थ कहा जाता था।

आचार्य कुन्दकुन्द ने नियमसार में पुद्गलद्रव्य का स्वरूप निश्चय और व्यवहारनय की दृष्टि से कहा है। निश्चयनय से परमाणु पुद्गलद्रव्य है। व्यवहारनय से स्कन्ध पुद्गलद्रव्य है। वह पुद्गलद्रव्य अणु (परमाणु) और स्कन्ध के भेद से दो प्रकार का होता है। नियमसार के टीकाकार पद्मप्रभमलधारिदेव ने स्वभावपुद्गल और विभावपुद्गल ये दो भेद कहे हैं। परमाणु को स्वभावपुद्गल एवं स्कन्ध को विभावपुद्गल कहा है। नियमसार में परमाणु का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अत्तादि अत्तमज्झं अत्तंतं णेव इंदिए गेज्झं।
अविभागी जं दव्वं परमाणू तं वियाणाहि ।। नियम० गा० २७ ।।

अर्थात् अपना स्वरूप ही जिसका आदि है, अपना स्वरूप ही जिसका मध्य है, अपना स्वरूप ही जिसका अन्त है, जो इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य नहीं है तथा जो अविभागी द्रव्य है, उसे परमाणु जानो।

पंचास्तिकाय संग्रह में परमाणु का स्वरूप इस प्रकार कहा है—

सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागी मुत्तिभवो ।।पंचा० ७७ ।।

अर्थात् समस्त स्कन्धों का जो अन्तिम भेद (अंश) है, वह परमाणु है। वह परमाणु नित्य, अशब्द, एक, अविभागी और मूर्त्तस्कन्ध से उत्पन्न है।

अनेक परमाणुओं के संघातरूप स्कन्ध का जो अन्तिम अविभाज्य अंश है, वह पुद्गल परमाणु कहा गया है। परमाणु मूर्त्तद्रव्य है। परमाणु उत्पाद, व्यय, और ध्रौव्यता युक्त होने के कारण अविनश्वर होता है। अतः नित्य है। द्रव्य की अपेक्षा से परमाणु नित्य है तथा पर्याय की अपेक्षा से अनित्य कहा जाता है। परमाणु शब्द का कारण है। वह स्वयं शब्द रहित है। शब्द की उत्पत्ति अनेक परमाणुओं के संघटन या स्कन्ध के विघटन से होती है। अतः परमाणु शब्द का कारण है, किन्तु वह स्वयं अशब्द है। परमाणु दो, तीन आदि पर उपाधियों से रहित होता है। केवल असहाय, अप्रदेशी या मात्र एक प्रदेशवाला होने से एक है। परमाणुमात्र होने से उसका दूसरा विभाग नहीं किया जा सकता है, इसलिए अविभागी कहा गया है। परमाणु स्कन्ध के विभाग करने से उत्पन्न होता है, अतः मूर्तिभव कहलाता है।

नियमसार गाथा २५ में परमाणु के दो भेद कहे गये हैं—(१) कारण-परमाणु और (२) कार्यपरमाणु। जो परमाणु पृथिवी, जल, तेज और वायु इन चार धातुओं का कारण है, वह कारण परमाणु है। अर्थात् जिस परमाणु से पृथिवी आदि इन्द्रियगोचर स्कन्ध बनते हैं, वह कारण परमाणु कहलाता है। स्कन्ध के अविभाज्य अंश तक टुकड़े करने से अन्त में जो परमाणु शेष रहता है, वह कार्यपरमाणु है। परमाणु स्कन्ध के भेद से उत्पन्न होने के कारण कार्यपरमाणु कहा गया। स्कन्ध परमाणु की उत्पत्ति कारण होने से कारणपरमाणु कहालया। इस प्रकार एक ही परमाणु में कारण और कार्य दोनों शक्तियाँ विद्यमान होती हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परमाणु के गुणों के विषय में आचार्य कुन्दकुन्द ने नियमसार में कहा है-'एयरसरूवगंधं दो फासं तं हवे सहावगुणं।' (गा० २७) अर्थात् पाँच रसों में से एक रस, पाँच रूपों में से एक रूप, दो गन्धों में से एक गन्ध, आठ स्पर्शों में से अन्तिम चार स्पर्शों में से अविरुद्ध दो स्पर्श, ये चार परमाणु के स्वभावगुण हैं। परमाणु अप्रदेशी। प्रदेश मात्र होता है। ये चारों गुण उसमें पाये जाते हैं। परमाणु के इन गुणों को उससे पृथक् नहीं किया जा सकता। पंचास्तिकायसंग्रह और प्रवचनसार में भी परमाणु के उक्त गुणों का विवेचन है।

एक से अधिक परमाणुओं के पिण्ड को स्कन्ध कहते हैं। स्कन्ध छह प्रकार के कहे गये हैं—(१) अति स्थूलस्थूल (२) स्थूल (३) स्थूलसूक्ष्म (४) सूक्ष्मस्थूल (५) सूक्ष्म और (६) अतिसूक्ष्म (नियमसार गा० २१)

जो स्कन्ध छेदन-भेदन किये जाने पर स्वयं जुड़ नहीं पाते, अतिस्थूल-स्थूल स्कन्ध कहलाते हैं। जैसे-भूमि, पर्वत, लकड़ी, पत्थर आदि। जो स्कन्ध छेदन-भेदन किये जाने पर स्वयं जुड़ जाते हैं, स्थूल स्कन्ध कहे जाते हैं। जैसे-घी, तेल, जल आदि। जो स्कन्ध स्थूल ज्ञात होते हैं, परन्तु छेदे-भेदे नहीं जा सकते, हाथ आदि से ग्रहण नहीं किये जा सकते, स्थूलसूक्ष्म स्कन्ध कहलाते हैं। जैसे-छाया, धूप, अन्धकार आदि। जो स्कन्ध सूक्ष्म होने पर भी स्थूल ज्ञात होते हैं, जिन्हें देखा नहीं जा सकता। जो स्पर्शन, रसना, घ्राण और कर्ण इन्द्रियों द्वारा जाने जाते हैं, अनुभव किये जाते हैं, वे सूक्ष्मस्थूल स्कन्ध कहलाते हैं। जैसे-स्पर्श, रस, गन्ध तथा शब्द। जो स्कन्ध इन्द्रियों द्वारा न तो जाने जाते हैं, न ही ग्रहण किये जाते हैं, किन्तु कर्मवर्गणा के योग्य होते हैं, वे सूक्ष्म स्कन्ध कहे गये हैं। जैसे-शुभाशुभ परिणामों द्वारा शुभाशुभ कर्मों के योग्य पुद्गल स्कन्ध। जो स्कन्ध कर्मवर्गणा के योग्य नहीं होते, अतिसूक्ष्म स्कन्ध कहे गये हैं। जैसे-कर्मवर्गणातीत द्वि-अणुक तक के स्कन्ध।

पंचास्तिकायसंग्रह गा० ७६ में भी पुद्गल स्कन्ध के छह भेद कहे गये हैं, किन्तु मूलप्राकृत गाथा में उनके नाम नहीं दिये हैं। आचार्य अमृत-चन्द्रसूरि ने उक्त गाथा की संस्कृत टीका में जो नाम दिये हैं, वे इस प्रकार हैं-बादरबादर, बादर, बादरसूक्ष्म, सूक्ष्मबादर, सूक्ष्म सूक्ष्म और सूक्ष्म। इनके स्वरूप नियमसार तात्पर्यवृत्ति एवं मूल के अनुसार हो हैं।

पंचास्तिकायसंग्रह की तात्पर्यवृत्ति संस्कृत टीका में आचार्य जयसेन ने गा० ७६ की टीका करने के बाद एक अन्य गाथा दी है, जो इस प्रकार है—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुढवी जलं च छाया-चउरिंदिय विसयकम्मपाओग्गा।
कम्मातीदा येवं छब्भेया पोग्गला होंति ॥ पंचा. राय. शा. पृ. १३०

अर्थात् पृथिवी, जल, छाया, आंख को छोड़कर शेष चार इन्द्रियों के विषय, कर्मप्रायोग्य एवं कर्मातीत, ये छह भेद पुद्गल के होते हैं।

पंचास्तिकायसंग्रह गाथा ७४-७५ में पुद्गलद्रव्य के चार भेद कहे गये हैं--(१) स्कन्ध, (२) स्कन्धदेश, (३) स्कन्धप्रदेश और (४) परमाणु। स्कन्ध-अनन्त परमाणुओं का पिण्ड है। स्कन्धदेश स्कन्ध का आधा भाग है। स्कन्धप्रदेश-स्कन्धदेश का आधा भाग या स्कन्ध का चौथाई भाग। परमाणु-अविभाज्य होता है। अर्धमागधी आगमों में भी पुद्गलद्रव्य के उक्त चार भेद कहे गये हैं। उक्त चार भेद भी स्वभाव पुद्गल एवं विभाव पुद्गल में समाहित हो जाते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने परमाणु के सन्दर्भ में विचार एवं प्रयोग किये, तब उन्हें भी जैनदार्शनिकों द्वारा दिमागी प्रयोगशाला में प्रयोग किये गये निष्कर्ष ही हाथ लगे। आधुनिक विज्ञान ने प्रयोग के बाद ही शब्द को मैटर माना, जबकि जनदार्शनिक हजारों वर्ष पूर्व कह चुके थे। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आचार्य कुन्दकुन्द ने पुद्गलद्रव्य के सम्बन्ध में जितना सूक्ष्म चिन्तन और विश्लेषण किया, वह निश्चय ही विशेष उल्लेख्य है। उत्तरवर्ती ग्रन्थकारों/आचार्यों ने कुन्दकुन्द का अनुकरण किया है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मांडू और संगीताचार्य मंडन मालवा के

लेखक—अभय प्रकाश जैन
एन–14 चेतकपुरी
ग्वालियर–474009
म० प्र०

मालवा प्राचीन अवंतिशार्ण क्षेत्र के कई प्राचीन स्थानों महिष्मति, नागदर, उज्जयिनी, कामथा, विदिशा, व्याघ्र, एरण, दशपुर, पद्मावती, तुम्बवन प्रमुख राजनैतिक तथा सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में प्रसिद्ध हुये। धार जिला के बाघ (प्राचीन व्याघ्र) नामक स्थान में गुप्त काल तथा उत्तर गुप्तकालीन भित्ती चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण मिलें हैं जिनकी तुलना अजन्ता के चित्रों से की जा सकती है। राजा भोज की प्रसिद्ध नगरी धार अपने बीते युगों की गाथायें संजोये है। इस नगर से कुछ दूर पर मांडू नामक स्थान है जिसका इतिहास और पुरातत्व बड़े महत्व का है। मांडू इंदौर से लगभग ८४ तथा धार से ३७ कि० मी० दुर है।

प्राचीन मांडू नगर जिसका पुराना नाम "मंडप दुर्ग" था का विस्तार काफी विस्तृत था। आजकल इसके प्राचीन स्मारक १३ वर्ग कि० मी० के घेरे में देखे जा सकते हैं। मांडू का प्राकृतिक सौदर्य अत्यन्त आकर्षक हैं। विंध्य पर्वत श्रंखला के एक उपांत पर नगर के स्मारक स्थित हैं। मालवा में जब परमार वंश का राज्य था तब मांडू की सुरम्य पहाड़ी पर अनेक जैन और हिन्दु मंदिर बनाये गये थे जिनके भग्नावशेष आजभी पुरा-स्थापत्य एवं विभिन्न ललित कलाओं का सौंदर्य बोध कराते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मांडू का किला और महल दर्शनीय है। उनमें प्राचीन वास्तुकला के अत्यंत सुन्दररूप आज भी देखने को मिलते हैं। प्राचीनकाल में सुरक्षा की दृष्टि से मांडू के किले का बड़ा महत्व था। इस किले का एक दरवाजा दिल्ली दरवाजा कहलाता है। यहां तक पहुँचने के लिए कई छोटे छोटे द्वार पार करने पड़ते हैं। दूसरा मुख्य द्वार तारापुर दरवाजा कहताला है। इस किले के भीतर लगभग ७४ इमारतों के अवशेष देखने को मिलते हैं। जिनमें १५ इमारतों में जैन कला स्थापत्य के दर्शन होते हैं। मुख्य इमारतें यहाँ के भव्य राजमहल हैं जिनकी रचना बड़े कुशल कारीगरों द्वारा की गई है। महलों की शोभा मुंज, कपूर, चंपा, बाबड़ों आदि अनेक जलाशयों के कारण बहुत बढ़ गई है। हिंडोला महल अद्वितीय है।

ईसवी सन् १३०५ में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के एक सरदार अहंमुल मुल्क ने मांडू पर अधिकार कर लिया था तब से लेकर पर्याप्त समय तक मांडू दिल्ली सल्तनत के अधीन रहा। सन् १४०५ से १४३२ तक इस किले पर सुल्तान आलमशाह का राज्य रहा। इस सुल्तान के प्रधान मंत्री मंडन थे जो जैन मतावलम्बी थे। मंत्री होने के साथ साथ वे उद्भट विद्वान भी थे। गुजराती भाषा के ग्रंथ "जैन साहित्य का इतिहास" में मंडन के बारे में लिखा गया है "व्याकरण में जागृत नाटक एवं अलंकार का विशेषज्ञ संगीत में अतुल प्रवीण-गम्भीर शस्त्र युक्त मंडन विराजता है।" श्री झझण मंडन के पितामह थे तथा सौनगिरिन्वय के मंत्री कहलाते थे इनके छह पुत्र थे। द्वितीय पुत्र बाहड़ का छोटा पुत्र मंडन था। बाहड़ भी मंडन की भांति संघपति था।

महेश्वर कवि के "काव्य मनोहर" ग्रंथ में मंडन के सम्बन्ध में उल्लेख है कि वह व्याकरण-अलंकार-संगीत-नृत्य-नाट्य तथा अन्यान्य शास्त्रों का महान विद्वान था। मंडन विद्वान एवं गुणी व्यक्तियों से बहुत स्नेह रखता था इनके राज प्रासाद में उत्तमकवि, श्रेष्ठ काव्य, प्रबन्ध, प्राकृत भाषा कथा आदि पर सूक्ष्माति सूक्ष्म प्रस्तुतीकरण करते थे नैयायिक वैशिषिक, महवेदान्त, साम्यप्रभाकर तथा जैन, बौद्ध मत के विद्वानों की प्रायः गोष्ठी हुआ करती थी। गणित, भूगोल, शकुन, प्रश्नभेद, मुहुर्त और वृहद्जातक में निष्णान्त, असाध्य, साध्यादि, रसक्रियाओं में निपुण वैद्य साहित्य विद्, नायक नायिका, भेद के पारखी इनकी सभा में उपस्थित रहते थे। उत्तमोत्तम गायक गायिकाओं, नर्त्तक नृतकियों द्वारा नृत्य प्रदर्शन गायन गोष्ठी, वीणा-वादन गोष्ठी तथा नृत्य नाट्य प्रस्तुत किया जाता था। मंडन की असाधारण संगीत विद्वता से सभी कलावंत मंत्रमुग्ध तथा अवाक् रह जाते थे। मंडन खतर गच्छीय जैन था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मंडन ने "सारस्वत मंडन", काव्य मंडन, चम्पू मंडन, कादम्बरी मंडन, चंद्र विजय अलंकार मंडन, शृंगार मंडन, संगीत मंडन, नृत्य नाट्य मंडन उपसर्ग मंडन, कल्पद्रुम स्कंध प्रभृति ग्रंथों की रचना की। इन ग्रथों की प्रमाणिकता एवं मंडन के संगीतिज्ञ होने के प्रमाण स्वरुप डॉ० श्र० परांजपे ने अपने शोध ग्रंथ भारतीय संगीत का इतिहास में डॉ० ए० के० सैन ने अपने शोध प्रबंध "भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन' (चौखम्बा प्रकाशन) तथा मराठी भाषा के ग्रंथ "भारतीय संगीत" में स्पष्ट एवं प्रमाणिक उल्लेख मिलता है। प्रो० डॉ० एम० एल० कापड़िया ने अपने ग्रंथ "जैन साहित्य नू संगीत उल्लेख अने ग्रंथों" (मुक्ति कमल मोहन प्रकाशन बड़ौदा) में भी मंडन के बारे में लिखा है। संगीत मंडन की हस्तलिखित प्रति के कुछ प्राकृत अंश नीचे अदधृत कर रहा हूँ।

मान्धारगामस्सणं सत्त मुच्छणान पस्य तातं जहाणदीय खुद्दिमापू रिमावं उत्थीय सुद्धगंधारा उत्तर गन्धा शविण पंचमिया हवई मुच्छान ।। ३ ।।

सुठुरत्तर मायामा साबहीणीमम साऽना यथा अह उत्तराण कोली मायसा सत्तमीमुच्छा ।। ४ ।।

सत सराकन संभबन्ति गेयस्स का भवइ जोणी कह समया उस्सासा कइ वा गेयस्स आगारा ।। १ ।।

सत्त सल्णाभीन भवन्ति गीतम चरुत्तजोणीयं पादसमा उस्सासा तिन्नय गेयस्स आगारा ।। २ ।।

आइमिउ आरभन्ता समुछहंताय मज्धगारंभि अवसवि तज्झिवितो तिन्निय गेयस्य आगारा ।। ३ ।।

वछोसे अठगुणे तिन्निय विता उदोय भणियान जोणहि इसोगाहिइ सुसिरिकन रंङ्ग मज्झिमि ।। ४ ।।

पाटण के प्राचीन ग्रंथागार में मंडनकृत हस्तलिखित "संगीत मंडन" की एक प्रति उपलब्ध है। कतिपय विद्वानों का मत है कि इस ग्रथ की रचना १४९० में हुई थी। श्रद्धेय स्व० श्री अगरचन्द नाहटा ने अपने पत्र दिनांक ७-२-७७ में लिखा था कि इसकी रचना १४९० और १५०० के बीच की ही बैठती है। डॉ० उमाकान्त शाह इसकी रचना इससे पहले की मानते हैं। "संगीत गीतोपनिषतसार" की प्रस्तावना में पृष्ठ १२/१२ में मण्डनकृत ग्रन्थावली का परिचय दिया है। डॉ० पी० के गौड ने भी अपने शोध प्रबंध में मण्डन की संगीत प्रियता और निपुणता का उल्लेख किया है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संगीत मण्डन, नृत्य नाट्य मंडन, चंपूमंडन, संगीत रत्नावली, संगीत सह पिंगल ग्रंथों का प्रमाणिक संदर्भ जैन संस्कृत साहित्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ १९० तथा जैन सत्य प्रकाश वर्ष १० अंक ८ में भी देखने को मिल सकता है।

मंडनकृत ग्रंथों पर एक अलग से शोध प्रबध संगीत नृत्य नाट्य पर लिखा जा सकता है। शोधकर्मियों, विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों के सामने एक मौका है। मैंने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ को "मण्डन कृत संगीत ग्रथावली और योगदान" विषय पर एक सिनाप्सिस भेजी है ताकि आगे शोध संभावनायें प्रखर हों।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस्लाम और शाकाहार

जशकरण डागा, टोंक

१. इस्लाम ने मांस खाने को ही नहीं, हिंसा करने को भी अच्छा नहीं माना है। इसके सुबूत में हज करने के बारे में जो विधान है, वह खासतौर से ध्यान देने योग्य है। जब कोई व्यक्ति हज करने जाता है तो अहराम (सिर पर बाँधने का सफेद कपड़ा) बाँध कर जाता है और जब तक हज नहीं हो जाता, वह उसे बाँधे रहता है। अहराम की स्थिति में हज करने वालों को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है। इस स्थिति में वह न तो किसी पशु-पक्षी को मार सकता है, न किसी जीवधारी पर ढ़ेला चला सकता है और न ही घास नोंच सकता है। यहाँ तक कि वह किसी हरे-भरे वृक्ष की टहनी/पत्ती तक भी नहीं तोड़ सकता है। इस प्रकार हज करते समय अहिंसा के परिपूर्ण पालन का स्पष्ट विधान है।

२. इतना ही नहीं इस्लाम के पवित्र तीर्थ मक्का-स्थित कस्बे के चारो ओर कई मीलों के घेरे में किसी भी पशु-पक्षी की हत्या करने का निषेध है और हज-काल में हज करने वालों को मद्य-मांस का भी सर्वथा त्याग जरुरी है। इस्लाम में आध्यात्मिक साधना में मांसाहार पूरी तरह वर्जित है, जिसे तर्के हैवानात (जानवर से प्राप्त वस्तु का त्याग) कहते हैं।

३. "यदि तुमने मांस खाया है, तो मेहरबानी कर अन्दर मत आओ" यह चेतावनी किसी हिन्दू अथवा बौद्ध मन्दिर में नहीं, बल्कि एक मुस्लिम दरवेश की समाधि के दर्शन करने वालों को दी जाती है। यह समाधि कर्नाटक राज्य में सुतबर्गा में अल्लंद जाने के मार्ग में ८ किलोमीटर की दूरी पर चौदहवी शताब्दी के मशहूर दरवेश हजरत ख्वाजा बन्दानवाज गौसूदराज के समकालीन दरवेश हजरत शा रुक्नुद्दीन की है, जहाँ सिर्फ शाकाहारी ही दर्शन करने जा सकते हैं।

(तीर्थंकर से साभार)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्या अशोक ने संवत् चलाया ?

अभय प्रकाश जैन

सम्राट अशोक अपने काल का सबसे शक्तिशाली राजा था। सभी प्रमुख राजाओं ने अपने अपने संवत् चलाये, लेकिन अशोक संवत् मैंने कहीं नहीं पढ़ा था। मेरे मन में उत्सुकता थी कि अशोक ने अपना संवत् अवश्य चलाया होगा, लेकिन पुष्टि हेतु प्रमाण नहीं मिल पा रहे थे। अशोक से सम्बन्धित साहित्य में काल गणना के कुछ प्रमाण मिले फिर सूत्र पकड़ते पकड़ते "गुप्त संवत्सर" भी "हिमवन्त थेरावली"[1] में मिल ही गया। उसमें लिखा है— निवाण से २३९ वर्ष बीतने पर मगधापति अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई की, वहाँ के राजा क्षेमराज को अपनी आज्ञा मनवाकर वहाँ पर अपना गुप्त संवत्सर[2] चलाया।

इस संदर्भ से कम से कम यह तो पता चला कि अशोक ने अपना कोई संवत्सर स्थापित किया था। इस संवत्सर के विषय में "अस्ति नास्ति" के दो पक्ष विचारार्थ सामने आते हैं पहला पक्ष अशोक ने २६० ई० पू० पुराण मतानुसार कलिंग पर क्रूर आक्रमण किया था। उसी वर्ष अशोक की कनिष्ठा महिषी तिष्यरक्षिता ने कुमार 'तिष्य गुप्त" को जन्म दिया प्रतीत होता है। इसी अवसर पर "गुप्त संवत्सर" की संभावना मन को छू लेती है। दूसरा पक्ष अद्यावधि कोई ऐसी सवत् श्रृंखला नहीं मिली, जिसे "गुप्त संवत्", "कृणाल संवत्" या 'अशोक संवत्" नाम दिया जा सके। अतः प्रस्तुत विचार सारिणी को छोड़कर आगे बढ़ते हैं।[3]

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निरंतर अध्ययन मनन के पश्चात भी मुझे वह विश्वास नहीं होता था कि अशोक ने कोई संवत्सर नहीं चलाया होगा अथवा उसके अनुयायी उनके नाम से "काल गणना" स्थापित नहीं कर पाए। इस बीच मेरी दृष्टि "पपोसा गुहा" अभिलेख पर पड़ी।

उसका पाठ है—

(१) राज्ञो गोपाली पुत्रस (राज्ञः गोपाली पुत्रस्य)
(२) बहसपति मित्रस (बृहस्पति मित्रस्य)
(३) मातुलेन गोपालिया (मातुलेन गोपालिका)
(४) वैहिदरी—पुत्रेन (वैहिदरी पुत्रेण)
(५) आसाढ़ सेने लेनं (आषाढ़ सेनेन लपन)
(६) कारितं ( ) दस (कारितं उदाकस्य दश)
(७) मे सवछरेवपिल (छ') त्र अरहं (ने संवत्सरे कश्शमीयानं अर्हं)
(८) तानं ( ) तानां

द्वितीय —

(१) अहिछत्रायाराजो शोनकायन पुत्र्य बंगयालस्य अहिच्छत्रामा राज्ञः शौन का मन पुत्रस्य बंगपालसा
(२) पुत्रस्य राजो तेवणी पुत्रस्स भागवतस्य पुत्रेण पुत्र्य राज्ञः त्रेवणी पुत्रस्य भागतस्य पुत्रेण
(३) वैहिदरी पुत्रेण आसाढ़ सेनेन कारित (। ।)
वैहिदरी पुत्रेष आसाढ़ सेनेन कारिते (लयनम्) । ।

समूचे अभिलेख पाठ से ज्ञात होता है कि (क) बृहस्पति मित्र के मामा (ख) आषाढ़ सेनेन (ग) दसवें "संवत्सर में "लयन" गुफा का निर्माण कराया अब प्रश्न उठता है बृहस्पति मित्र कौन है। प्रायः शोध विद्वानों का अनुमान है कि हाथी गुफा अभिलेख में चर्चित बृहस्पति मित्र यहाँ वांछनीय है। परन्तु वह बृहस्पति मित्र भी तो अद्यावधि परिचय निरपेक्ष ही रह गया है। इतिहास मनीषी डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल ने पुष्प नक्षत्र के अधिपति बृहस्पति को सुत्र मानकर बृहस्पति बृहस्पति मित्र को शुंगवंशी पुष्प मित्र से अभिन्न ठहराया है। इधर डॉ० म. म. मीराशी ने शुखावंशी पुत्रपमित्र के प्रपौत्र ओद्राक के सामान्त बृहस्पति मित्र को खोज निकाला है और उसे 'मित्रकुलोत्पन्न" ठहराते हुये मित्रान्त नामा कुछ एक व्यक्तियों की ओर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सकेत भी दिया है।[४] अर्थात् बृहस्पति मित्र के अस्तित्व के लिये पूरा का पूरा ढांचा परिकल्पित किया है। मेरे विचार से ये सब अटकलबाजियाँ हैं निराधार अनुमान है।

शुंगवंशी पुष्पमित्र "वृहस्पति मित्र" का नामांतरण है ऐसे उदाहरण अन्यत्र उपलब्ध नहीं हैं जिनके अनुसरण पर यह उड़ान सही मानी जा सके। अतः यह मानना अमान्य है। हमें केवल बृहस्पति मित्र चाहिये, गुरु मित्र या पुष्पमित्र कदापिनहीं। शुगवंशीय ओद्रक के सामंत मित्रान्तसामा व्यक्ति भी यहाँ अभिप्रेत नहीं है। बृहस्पति के गरिमावर्धक "मातुलपद" की सूचना भी तब तक अर्थहीन है तब तक उसका भागनेय निश्चित रूपेण प्रतिष्ठित हो जाय। यहाँ खटक पैदा करने वाली बात यह है कि शुभवंश ब्राह्मण वंश हैं, उनके सामंत भी, जहां रिश्तेदारियां स्थापित की जा सकें ब्राह्मण ही संभाव्य है। ब्राह्मणवंश (राजाया सामंत) बैदिक धर्म को छोड़कर किसी पौसषेय धर्म (जैसे बौद्ध, जैन आदि) को आसानी से अंगीकार नहीं करेगा। यही सोचकर इस स्थापना में सारवता न होने से, इसे स्वीकार करना अतिजटिल हो गया है।

मेरा अपना मत कुछ और है।

मूल पाठ की छठी पंक्ति में अक्षरों के घिसपिट जाने से अपठित स्थान ( ) रिक्त छोड़कर "उदाकस्य" शब्द से उसकी पूर्ति की गई है। यदि पूर्ति करना ही अभिप्रेत है तो उदाकस्य के विकल्प में "अशोकस्य" पद द्वारा रिक्त स्थान भरा जा सकता है। यदि ऐसा संभाव्य है तो पाठ होगा "लयनंकारितं अशोकस्य दशमे सवत्सरे"। पुराणमतानुसार अशोक श्री का निधन[५] सप्तर्षि संवत् १२२६-२१६ ई० पू० के साल में हो गया। चूंकि जैन मत मरणोपरान्त[६] काल गणना में विश्वास करता है अतः यहाँ 'अशोक सवत्" स्वयमेव प्रसांगिक हो जाता है। "अशोकस्य दशमे संवत्सरे" का फलितार्थ होगा ई० पू० २१६-१०=२०६ में आषाढ़ सेन ने अभिलेख तैयार कराया।

अब बृहस्पति मित्र की खोज भी सुगम हो गई है। अशोक पौत्र अर्थात् कुणाल पुत्र "सम्प्रति" दादा की अक्षत आयुष्य में उज्जयिनीश्वर हो गया था सम्प्रति दीर्घायु का था। वीर निर्वाण संवत् ३०० में वह दिवंगत हुआ। निर्वाण संवत् (ई पू० ५२७) ३००-२२७ ई० पू० में उनका निधन जैन शास्त्र सम्मत है। उसके बाद उसका पुत्र "बृहस्पति" उज्जयिनीश्वर[७] बन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सका। उसने केवल १३ वर्ष शासन किया, अर्थात् २२७-१३-२१४ ई० पू० तक उसने शासन किया।

(१) २१४ ई० पूर्व से वृहस्पति तथा २०६ ई० पूर्व से आषाढ सेन में वर्तमान काल संगति के आधार पर दोनों करीब-करीब हो जाते हैं।

(२) "वृहस्पति" और "आषाढ़ सेन" के बीच मातुल-भागनेय का सम्बन्ध अब प्रबल तर्कानुप्राणित और गरिमा सूचक है एवं मान्य है।

(३) जन धर्म इन्हें और अधिक निकटता प्रदान करता है। पपोसा गुहा लेख से "अशोक संवत्" को सुदृढ़ विचार भूमि तो अवश्य मिल गई परन्तु विस्तृत प्रयोग क्षेत्र के अभाव में उसे "संवत्सर शृंखला में पिरोया नहीं जा सकता। अब उसका प्रयोग क्षेत्र ढूढ़ते हैं। वह इस प्रकार है—

शिरिक और शिवदिन्ना का लेख

अभिलेख संख्या	स्थान	भाषा	स्थिति
८८	मथुरा	संस्कृत	भग्न

इस अभिलेख में संवत् २९९ का उल्लेख है यह संदर्भ वीर निर्माण संवत् का नहीं है। "महाराजस्य राजातिरजस्य" के वैशिष्ट्य से किसी उच्चत्तर महाराजा का संकेत मिलता है। यह विक्रम संवत् भी नहीं है। प्रायः विद्वान संवत्मा संवत्सा पढ़कर विक्रम संवत् के बारे में सोचने लगते हैं उत्तरोत्तर हो रहे अनुसंधान से ये धारणायें निर्मूक हो गयी हैं। हमारा ध्यान 'राजातिराज" पढ़कर सम्राट अशोक की तरफ जाता है।

जन अनुवाद-सब सिद्धों और अर्हतों को नमस्कार। महाराज और राजातिराज के संवत्सर २०० + ९ + ९० = २९९ के शीतऋतु को दूसरे महीने के पहिले दिन भगवान महावीर की प्रतिमा अर्हत मन्दिर में (इत्यादि)[९]

मेरा अपना सुदृढ़ अनुमान है कि यह संवत् "अशोक संवत्" "२९९ संभाव्य है जिसका ई० साल २९९-२१९ = ८० है।

इतिहास मनीषियों, अनुसंधान करने वालों के सामने एक अवसर हैं कि वे जैन साहित्य का अभीष्ट मथन करके अशोक संवत् पर एक निश्चित सर्वमान्य शोध करें और अमृतत्व को सामने लायें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संदर्भ

(१) ५२७-२३९=२८८ ई० पू० का वर्ष अशुद्ध है। महावंश के अनुसार अशोक ने २७६ ई० पू० में राज्य हस्तगत किया और उसका अभिषेक २६८ ई० पू० में हुआ।
(२) अशोक के गुप्त संवत् चलाने की बात ठीक नहीं जंचती। इसी उल्लेख से इसकी अतिप्राचीनता के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न होती है।
मुनि श्री कल्याण विजय "वीर निर्वाण संवत् और काल गणना" पृष्ठ १७१
(३) (क) भारतीय अभिलेख-डा० सूबे सिंह राणा पृ०-६४
(ख) जैन शिलालेख संग्रह-११ भाग श्री विजयमूर्ति पृ० १२/१३
(४) सात वाहन वंश और पश्चिमी क्षत्रियों का इतिहास पृष्ठ ४७
(५) षडविंशत् सभा राजा अशोकां भवित्ता नृषु-वायु १९/३३२
(६) वीर निर्वाण संवत् "मौर्यकालेच्छिले" मृते विक्रमराजनि।
(७) दिव्यावदान पृष्ठ ४३३
(८) भारतवर्ष का वृहद इतिहास-भगवद्दत्त द्वितीय भाग पृष्ठ २७३
(९) जैन शिलालेख संग्रह विजयमूर्ति पृ० ५४

एन १४ चेतकपुरी
ग्वालियर ४७४००९

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वर्गीय बाबू प्रभुदास एवं देवकुमार जैन की पुण्य स्मृतियां

लेखक—स्वर्गीय श्री अजित प्रसाद जैन
एडभोकेट, लखनऊ
अनुवादक अतुल कुमार जैन

बाबू देवकुमार जी आरा के एक उच्च, प्रतिष्ठित तथा प्राचीन जमींदार परिवार के वंशज थे। उनके पितामह पं० प्रभुदास जी ने गंगा के तटस्थ भदैनोघाट पर जिन-मंदिर सहित एक विशाल धर्मशाला बनवाई। इसका नाम प्रभुघाट पड़ा। इस मन्दिर का निर्माण १९१३ वीर संवत् में हुआ था। चन्द्रपुरी (बनारस जिले) तथा आरा में भी इन्होंने अनेकों जिन मंदिरों की स्थापना करवाई। वे संस्कृत तथा प्राकृत के प्रकाण्ड पंडित थे। जैन दर्शन पर इनका प्रभुत्व इनके समकालीन पूज्यनीय पं० भागचन्द्र और दौलतरामजी के टक्कर का था। इनका जीवन पवित्र था। पूरे चालीस वर्षों तक ये एकाशना पर ही रहे थे। बाबू देवकुमार जी के पिता बाबू चन्द्रकुमार जी भी धर्मानुरागी थे। उन्होंने कौशाम्बी में एक जिन मंदिर का निर्माण करवाया। अभाग्यवश युवावस्था में ही उनका स्वर्गवास हो गया। इसके पश्चात् पारिवारिक संपत्ति कोर्ट ऑफ वार्डस् की आधीनता में चली गई। वयस्क होने पर बाबू देवकुमार जी ने स्टेट को अपने हाथों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में ले लिया। अपने सुचारु प्रबंध से उन्होंने उसकी आशातीत उन्नति की। वे बी० ए० की परीक्षा पूरी न कर सके थे। आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के पद को बहुत दिनों तक सुशोभित करते रहे। १९०० ई० में एक भयानक पलेग का आक्रमण हुआ। उसी में आपके लघु भ्राता धर्मकुमार जी, जो कि बी० ए० के विद्यार्थी थे, चल बसे। इस असह्य शोक में उनके स्वास्थ्य पर बड़ा धक्का पहुंचाया। वे यों बड़े धार्मिक तथा आध्यात्मिक विचारों से आभूषित थे। भारतवर्ष के प्रत्येक जैन तीर्थ स्थानों का उन्होंने भ्रमण किया तथा हरेक स्थान पर मुक्त-हस्त दान दिया। उनकी दानशीलता चारों ओर फैली हुई थी, केवल स्थानीय क्षेत्रों तक ही सीमित न थी। अपने दानों से न तो वे आत्म-प्रशंसा, उपाधियों और व्यापारिक सुविधायें ही चाहते थे न जनता की दानशील संस्थाओं में अपने नाम के इच्छुक थे।

उन्होंने जैन गजट का, जो कि जैन महासभा का एक अंग है, बहुत दिनों तक संपादन किया।

वे बनारस में स्मरणीय १२ जून १९०५ को उपस्थित थे जब कि भैदनी मन्दिर पर स्याद्वाद-पाठशाला की नींव डाली गई थी। वे इसकी प्रबंध कारिणी समिति के सेक्रेटरी बहुत दिनों तक रहे। उन्होंने इस पूरे धर्मशाला को इस विद्या-मन्दिर के व्यवहार के लिये अर्पण कर दिया। यह विद्या-मन्दिर शीघ्र ही फूलता-फलता एक महाविद्यालय हो गया इसके रोजाना चालू खर्चों के लिये इन्होंने २०/-मासिक दिया। इसी व्यय में सेठ माणिक चन्द जी ने २५/-तथा स्थानीय जैन-भ्रातृ-संघ ने ३०/-मासिक दान दिया।

सेठ माणिक चन्द, ब्र. शीतल प्रसाद, बाबू देवकुमार, मास्टर नानकचंद्र ब्र० मोती लाल तथा दूसरे संस्थापकों का आदर्श ऐसे मनुष्यों के उत्पन्न करने का था जो शंकराचार्य की तरह जैन आचार्य बने और जिन-धर्म प्रचार को अपने जीवन का उद्देश्य बना लें। कुमार देवेन्द्र प्रसाद ने इस कार्य के संपादन हेतु प्राण-पण चेष्टा की। लेकिन उन्हें स्वार्थमय षड्यन्त्रों के कारण इस रास्ते को छोड़ देना पड़ा। ब्र० शीतल प्रसाद जी ने विद्यालय को धर्म-प्रचारकों, वेतन पाने वाले समाज के नौकर नहीं प्रत्युत ऐसे आदमी जो कि अपनी उच्चतर शिक्षा, विस्तृत अध्ययन, मानों की उदारता तथा स्वतंत्रता, विश्वास के बल तथा कार्यक्षमता के कारण जैनियों में आदरणीय हैं, का शिक्षण-स्थल बनाना चाहा। ब्रह्मचारीजी ने कभी भी आर्थिक स्थिति के पहलू पर से ध्यान नहीं हटाया। प्रत्येक साल यहां तक कि अपने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जीवन के अंतिम वर्ष तक स्याद्वाद महाविधालय के लिये समय-समय पर बड़ी रकमें दान लेने की व्यवस्था वे करते रहे और प्रत्येक साल उस स्थान से जहाँ ब्रह्मचारी जी वर्षाऋतु में चतुर्मास रखते थे, एक रुपयों की थैली स्याद्वाद विद्यालय को भेंट की जाती थी।

बहुत दिनों तक वे इसकी प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य बने रहे। १९१३ में इन्हें अपने पद-त्याग की अनिवार्यता का अनुभव हुआ जबकि इन्होंने देखा, देवकुमार जी की मृत्यु के पश्चात् स्थानीय सदस्य तथा कुछ दूसरे लोग धीरे-धीरे पूर्णतया उस उद्देश्य को भूल गये जिसे लेकर यह संस्था चली थी और उन्होंने छात्रों को नीच तथा अपमान जनक कार्यों, जैसे जाति के लोगों से आर्थिक सहायता के लिये भिक्षा माँगने, घी के लिये तथा अपने कपड़ों के लिये झगड़ने में प्रोत्साहन दिया जिससे कि उनमें उद्दंडता तथा अवज्ञा के भावों को भी सहायता मिली।

जो मधुर स्वप्न सेठ माणिक चन्द्र, बाबू देवकुमार और ब्रह्मचारी जी ने देखे थे वे सचमुच स्वप्न ही रह गये, उनके वास्तविकता में परिणत होने की कम ही आशा रह गई। अप्रैल १९०८ में बाबू देवकुमार कुण्डलपुर (मध्य प्रांत) में महासभा की एक महत्वपूर्ण अधिवेशन के सभापति हुए। श्रीमत सेठ मोहन लाल (खुरई) चेयरमन और दमोह के बकील गोकुल चन्द्र स्वागत समिति के अध्यक्ष बनाये गये। पं० गोपाल दास स्यादवाद-वारिधि, संपादक जैन मित्र ने १८ अप्रैल के संस्करण में निम्न् प्रकार से अपने विचार प्रकाशित किये थे। कार्यवाही के पहले दिन विषय-समिति के समक्ष-महासभा का एक नियम, अपने उद्देश्य में से एक "धार्मिक तथा शिक्षा की उन्नति" की परिभाषा पर प्रकाश डालता आया। विधावारिधि पं गोपाल दास जी ने, अंत के 'धर्म के विरुद्ध नहीं" शब्द जोड़ने के लिये जोर दिया। शीतल प्रसाद जी ने कहा कि ऐसे भोग की कोई आवश्यकता नहीं। दो घन्टे के घोर विवाद के बाद इस बात का न्याय वोट पर छोड़ दिया गया। शीतल प्रसाद जी अपने प्रस्ताव को प्रतिपादित करने के लिये एकाकी व्यक्ति थ। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अपनी बात पर जोर देते समय पं० गोपाल दास जी ने यह कहा कि वे जैन धर्म की मजबूत जड़ के अभाव में स्थल में दी गई, पाश्चात्य शिक्षा के विरुद्ध में है, लेकिन वे इस पक्की जड़ जम जाने के पश्चात् कोई भी शिक्षा नास्तिक हो या अधार्मिक.... के देने में सहमत हैं। अधिवेशन का दूसरा प्रस्ताव यह था कि जैन-युवक संघ जैन दिगम्बर धर्म की उन्नति के उद्देश्य के लिये खोला गया था। इसने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अब अपना उद्देश्य बदल लिया था। इसलिये अब यह एक दिगम्बरीय संस्था न रह गई। यह कई जातियों की एक सम्मिलित संस्था हो गई। यह महासभा की एक शाखा नहीं रह गई।

बाबू देवकुमार अपने पुत्र, निर्मल कुमार और चक्रेश्वर कुमार को पाश्चात्य शिक्षा देने के पूर्व जैन साहित्य का अच्छा ज्ञान देना चाहते थे। सचमुच अपनी मृत्यु के १० दिन पूर्व २६ जुलाई को उन्होंने कलकत्ता में धन्नालाल पंडितजी को पं० लालारामजी को ५०/ मासिक तथा रहने के लिये एक मकान घर आरा भेजने के लिये लिखा था। अपने वसीयतनामें से उन्होंने १००००/ की एक मोटी रकम तथा ५००० रुपये सालाना अनेकों संस्थाओं की सहायता के लिये दी।

उनके आदर्श पुत्रों ने परिवार तथा जैन धर्म की कांति तथा गौरव की शान को और भी बढ़ाया। बाबू निर्मलकुमार जी एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे और कुछ दिनों तक कौंसिल ऑफ स्टेट के सदस्य भी रह चुके हैं। बाबू चक्रेश्वर कुमार जी को बी० एस० सी०, बी० एल० की उच्च शिक्षा प्राप्त है तथा वे बिहार लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य रहे हैं। दोनों भाइयों ने पारिवारिक दानशीलता में अभी तक कमी नहीं आने दी है, अपने पिता द्वारा निर्मित, धार्मिक शिक्षण और दानशील संस्थाओं को आशातीत उन्नति की है, और पिता के पदचिन्हों पर चलकर तथा अन्य धार्मिक संस्थायें खोलकर और भी अधिक धार्मिक योग्यता प्राप्त कर ली है।

उन्होंने एक सुन्दर भवन का निर्माण किया है जो कि जैन ओरियन्टल लाइब्रेरी या जैन-सिद्धान्त भवन के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें ताड़पत्रों पर सुई की नोंक द्वारा लिखित अक्षरों में लिखे गये मौलिक सचित्र पुराण कला के असाधारण नमूने, यंत्र और सहायक स्थायी साहित्य का एक आश्चर्यजनक पुस्तकालय है।

यह सुभव्य पुस्तकालय तथा म्यूजियम खास सड़क पर स्थित है (और पं० प्रभुदास जी के द्वारा निर्मित मन्दिर के बगल में) है जो समय-समय पर उनके पोतों और परपोतों द्वारा उन्नत होता गया है। वसीयतनामें में निम्नलिखित उद्धृत पंक्तियाँ उनकी धर्म-प्रभावना तथा जैन धर्म की रक्षा, और उसके गौरव की हृदयाकांक्षा को व्यक्त करती हैं।

"जैन भाइयों तथा नेताओं से मेरी अंतिम प्रार्थना यही है कि पुरातन शास्त्रों, पुराणों की रक्षा के लिये शीघ्र से शीघ्र यत्न करना चाहिये। ये ही संसार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के सामने जैन धर्म की ज्योति, इसकी उच्चता का प्रसार करेगी तथा उसको चिरस्मरणीय बना सकेगी। मेरे हृदय में यह बात बहुत दिनों से थी। मैंने यह प्रतिज्ञा ली थी कि जबतक यह कार्य पूरा न कर लूंगा तब तक ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करूंगा। मुझे इसकी हार्दिक वेदना है कि मुझे इस पवित्र कार्य संपादन करने की पवित्र योग्यता पाने का सौभाग्य न हो सका। अब आपको इस पवित्रतम कार्य को पूरा करने का व्रत लेना है। इसलिए इस महत्वपूर्ण आवश्यक कार्य को पूरा करने का उत्तरदायित्व आपके ऊपर है।"

उनकी आखिरी बीमारी साढ़े-तीन महीना तक ठहरी। वे अस्थमा से पीड़ित थे। कलकत्ता में उनको क्लोफार्म देकर एक डाक्टरी ऑपरेशन हुआ। वे सदा धार्मिक शिक्षा, सुख, सहायता तथा साधना के लिए अपने पास वर्णी नेमिसागर जी को रखते थे। उन्होंने वर्णी नेमिसागर जी, मठाधीश भट्टारक श्रवणबेलगोला से सल्लेखना संकल्प सुना जो शांतिपूर्वक शरीर त्याग से संबंध रखता है और सर्जिकल ऑपरेशन के दो घंटे पूर्व संभवतः मृत्यू की तैयारी के लिए इस संकल्प को ले लिया और अपना ध्यान सर्वव्यापी परमात्मा पर स्थिर कर लिया।

चेतना लौटते ही उन्होंने सर्वप्रथम "अरहंत" नाम का उच्चारण किया। उन्होंने सारी शारीरिक पीड़ायें धैर्य तथा मानसिक शांति के साथ सहन की। अपनी मृत्यू का ज्ञान उन्हें छः घंटे पूर्व ही हो गया था। उन्होंने भू शय्या ले ली और उन्हें सल्लेखना संकल्प वर्णी नेमिसागर जी ने दिया जो अविरल रूप से उनके संगीप बैठ स्त्रोतों का पाठ करते रहे जिसे वे हृदय गम करते जाते थे। यह बात उन्होंने यह कहकर प्रकट की कि 'बोलते जाइए। जो आप बोलते हैं उसे मैं समझता हूँ।'

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

साहित्य–समीक्षा

पत्र–परीक्षा–मानवता की धुरी, लेखक नीरज जैन, प्रकाशक सतीश कुमार जैन, मनीशा ट्रस्ट, शान्ति सदन, सतना, द्वितीय संस्करण १९९१ मूल्य पैंतीस रुपया पृष्ठ संख्या १८३

प्रस्तुत पुस्तक अपने नाम को सार्थक करनेवाली है। लेखक ने मनुष्य को नैतिक बनने के लिए प्रेरित किया है। इसी केन्द्र बिन्दु को लक्ष्य बनाकर इस पुस्तक को चार शीर्षकों और अनेक उपशीर्षकों में विभाजित किया है। मानव वादी विचार धारा और सामाजिक दर्शन का पुट प्रस्तुत पुस्तक में प्रचुरता से उपलब्ध है। जैन दर्शन के मूल्य भूत सिद्धान्त अहिंसा और अपरिग्रह को लेखक ने अपनी मौलिक शैली में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है।

'अपने अपने कुरुक्षेत्र में' लेखक ने स्वार्थ कुत्सित वासनाओं, दुराग्रह, दुष्पृवृतियों, कुसंस्कारों, असंयम, अज्ञान, अहंकार और ईर्ष्या को कुरुक्षेत्र के युद्ध का कारण माना। इन्हीं कारणों से आजकल प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःकरण में महाभारत का दृश्य उपस्थित रहता है। इस बात पर जोर दिया गया है कि कषायजन्य हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, और परिग्रह इन पाँच पाप रूपी ग्रामों के प्रति अनासक्त होने से महाभारत से बचा जा सकता है। यही कारण है कि लेखक ने इन पाँच पाप रूपी ग्रामों की पहचान बतलाई है।

अहिंसा और अपरिग्रह नामक शीर्षक के अन्तर्गत अहिंसा का सूक्ष्म विवेचन विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों के विचारों को उधृत करते हुए किया है। सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य इन व्रतों का पालन अहिंसा व्रत का पालन किये बिना सम्भव नहीं है। यही कारण है कि लेखक ने अहिंसा के भेद, अनुप्रेक्षाओं, दश धर्मों, पाँच अणुव्रतों, उनके अतीचारों और भावनाओं का विवेचन किया है।

अपरिग्रह नामक शीर्षक में बतलाया गया है कि परिग्रह पाप को संरक्षण न देने से परिग्रह के प्रति तृष्णा या लिप्सा का अभाव स्वतः हो जाता है। सुख की प्राप्ति परिग्रह के द्वारा कदापि नहीं हो सकती है। इसकी प्राप्ति सन्तोष से ही होती है। इस बात की पुष्टी लेखक ने अनेक उदाहरण द्वारा की है। अपनी इच्छाओं को कम किये बिना सुख सन्तोष की कल्पना करना व्यर्थ है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'विराट् का दर्शन:' दृष्टि की महत्ता नामक शीर्षक में लेखक ने ममकार और अहंकार को ही दु:ख का कारण बतलाया है। इसी प्रसंग में बारह भावनाओं का विवेचन भी उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत पुस्तक की भाषा सरल सुबोध सरस और आकर्षक है। धार्मिक एव दार्शनिक तत्त्वों का विश्लेषण देखकर प्रस्तुत पुस्तक की शैली की तुलना ज्ञातृधर्म कथा से की जा सकती है। मानवता की धुरी के द्वारा जहाँ एक ओर नैतिकता का प्रचार होगा वहीं दूसरी ओर सद्जीवन के निर्माण की प्रेरणा प्राप्त होगी। लेखक की यह कृति उसे अमर बनाने के लिए पर्याप्त है। अत: लेखक एवं प्रकाशक बधाई के सुपात्र हैं। पुस्तक की छपाई तथा मुख पृष्ठ की साज सज्जा आदि आकर्षक है।

प्राकृत एवं जैन शोध-सन्दर्भ। लेखक डॉ० कपूरचन्द्र जैन, अध्यक्ष संस्कृत विभाग श्री कुन्द कुन्द जैन महाविद्यालय खतौली (यू० पी०) प्रकाशक श्री कैलाश चन्द्र जैन, स्मृति न्यास खतौली, द्वितीय संस्करण १९९१, मूल्य साठ रुपये, पृष्ठ संख्या ३३+१३०

बीसवीं शताब्दी में प्राकृत एवं जैन साहित्य का विशेष रूप से जैन धर्म-दर्शन में देश के विभिन्न विश्व विद्यालयों में अनुसंधान हुए हैं। विषयों की सही जानकारी न होने के कारण गवेषण-कर्त्ताओं ने एक ही विषय पर विभिन्न स्थानों में कई शोध प्रबन्ध लिखें हैं। फलत: एक ऐसे संकलन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, जिससे देश-विदेश में प्राकृत एवं जैन विद्या पर हो रहे शोध कार्यों की जानकारी हो सके। इस दिशा में डॉ० गोकुल चन्द्र जैन ने भारतीय ज्ञानपीठ पत्रिका के द्वारा उक्त जानकारी देने का सर्व प्रथम प्रयास किया था। डा० कपूरचन्द जैन ने प्राकृत एवं जैन विद्या शोध-संदर्भ के द्वारा उक्त आवश्यकता की पूर्ति की।

प्रस्तुत पुस्तक शोध निदेशकों एव शोध कर्त्ताओं के लिए एक पथ प्रदर्शिका के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक को तीन भागों में विभाजित किया है। भूमिका के अन्तर्गत देश के ६३ विश्वविद्यालयों, प्रकाशकों, निदेशकों, प्राकृत, अपभ्रंश एवं जैन विद्याओं पर शोध कार्य कराने वाले ३४ भारतीय शोध केन्द्रों की परिचायात्मक सूची दी है।

इसके पश्चात् प्राकृत भाषा एवं साहित्य, अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य संस्कृत भाषा एवं साहित्य के अतिरिक्त विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचित जैन साहित्य पर हुए शोध प्रबधों का दिग्दर्शन कराया है। जैन आगम, जैन न्याय-दर्शन पुराण, जैन नीति आचार, धर्म-योग, इतिहास संस्कृति कला एवं पुरातत्व से सम्बन्धित अब तक हुए शोध प्रबन्धों का विवरण भी उपलब्ध है। इसके पश्चात् जैन-बौद्ध

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तुलनात्मक अध्ययन जैन-वैदिक तुलनात्मक अध्ययन, जैन राम कथा साहित्य, जैन विज्ञान एवं गणित व्यक्तित्व, एवं कृत्तित्व जैन समाज शास्त्र, जैन अर्थशास्त्र, जैन शिक्षा शास्त्र, जैन राजनीति तथा जैन मनोविज्ञान एव भूगोल पर लिखे गये शोध प्रबन्धों का परिचयात्मक उल्लेख किया गया है।

पुस्तक का अंतिम भाग परिशिष्ट के रूप में उपलब्ध है। इसमें विदेशों में जैन विद्या पर हुए शोध कार्यों का उल्लेख किया गया है। इस भाग में कतिपय ऐसे जैन विद्या में शोध योग्य विषयों का उल्लेख किया गया है जिन पर शोध प्रबन्ध लिखे जा सकते हैं। अन्त में शोध कर्तृ नामानुक्रमणिका भी दी है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

निश्चय ही लेखक ने प्राकृत एवं जैन विद्या शोध सन्दर्भ के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किया है। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक में कतिपय शोध प्रबन्धों के विषय में असत्य जानकारी खटकती हैं, जैसे जैन लालचन्द्र द्वारा लिखित "जैन दर्शन में आत्म-विचार: तुलनात्मक और समीक्षात्मक अध्ययन, १९७७ का प्रकाशन १९८४ में पी० वी० रिसर्च इन्सटीच्यूट वाराणसी द्वारा हुआ है। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक में १९७९ में प्रकाशित एवं प्रकाशित संस्था का नाम प्राकृत शोध सस्थान वैशाली दिया गया है। इसी प्रकार सूरिदेव श्री रंजन का शोध प्रबन्ध अद्यतन अप्रकाशित हैं लेकिन १९९१ में ही प्रकाशित होने की सूचना दी गई है। पुस्तक की छपाई आदि साफ स्वच्छ है। लेखक एवं प्रकाशक निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।—**जैनमती जैन एम० ए० आरा।**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

THE JAINA ANTIQUARY

VOL 44 December 1991 No. 1-2

❀

"श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥"

Editorial Board

Dr. Kastur Chand Kashliwal **Dr. Rajaram Jain**
Dr. Aditya Prachandiya, **Dr. ShashiKant**
Dr. Rishabha Chandra Fouzdar

Published by

Ajay Kumar Jain, Secretary

Shri Devkumar Jain Oriental Research Institute
SHRI JAIN SIDDHANT BHAWAN
ARRAH, BIHAR (INDIA)

❀

ANNUAL SUBSCRIPTION

Inland Rs. 50/-] [Foreign Rs. 75/-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

CONTENTS

BOOK-LET

1 Copies of correspondence
betwee
year 1983 to 1988
rearding
Emergence of Janakpur (Nepal)
as an important Jain Teerth
(Place of Pilgrimage)
—Subodh Kumar Jain — 1—53

ARTICLES

1 Jainism in Nepal — Nepal Jain parishad — 1—4

2 An alliance between religion and conservation
—By L. K. Sharma — 5—8

FOREWORD & AUTHOR INDEX

1 Shree Jain Siddhant Bhawan
Granthavali Vol. I
Foreword
—Naseem Akhtar — 9—10
&
Author Index
—Dr. Rishabha Chandra Fouzdar 1—4

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Emergence of Janakpur (Nepal) as an important Jain Teerth (Place of Pilgrimage)

Subodh Kumar Jain

Janakpur (Nepal) the first place of Pilgrimage for the Jains in a foreign country is the Birth place of Teerthankar Malli Nath and Teerthankar Nemi Nath.

On 21st May 1983 I posted a memorial in English addressed to his Imperial Majesty Sri Maharajadhiraj of Nepal for the grant of a piece of land at Janakpur (Nepal) for the construction of a memorial and a tourist rest house in the memory of the two Teerthankars Lord Malli Nath and Lord Nemi Nath who were born there. In this matter active help was extended to me by

(i) Sri M. K. Koirala, Ex. Prime Minister of Nepal.
(ii) The Chairman of Guthi Sasthan (Nepal Govt)
(iii) The Principal Secretary of his Majesty of Nepal.
(iv) Sri Hulas Chand Golcha, President of Nepal Jain Sangh.
(v) Sri Pratap Singh Vaid, Ex-chairman Bharat Jain Mahamandal &
(vi) Late Sri M. K. Jain of Shakahar Sangh, Delhi.

Each of the above persons and bodies had their own role in the achievement of the object and we are obliged to them for what they did for this pious cause.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

The Gov't of Nepal ultimately accepted our request for free allotment of land at Janakpur for the construction of a memorial Temple and Guest house complex.

Janakpur Kshtera where Raja Janak and her daughter Sita lived are equally respected by Hindus and Jains as mentioned in hundred of Ramayans written by the devotees of both the sects from time to time.

The documents have yet to be exchanged between us and the Guthi Sansthan of the Gov't of Nepal. I have no doubt, now, that the same would also be done by his Majesty's Gov't of Nepal. Ties of friendship are growing with the passage of time between India and Nepal.

The following first bunch of letters will tell the story, and posterity will ever remember these good people and his Imperial Majesty Sri Maharajadhiraj of Nepal.

So the first bunch of letters are printed over leaf and 2nd and last bunch of letters will be published after the work starts at the sight at Janakpur.

●

Subodh Kumar Jain DEVASHRAM. ARRAH 802 301

Date 21st May '83

To,

His Imperial Majesty Shri Maharajdhiraj of Nepal,
Nepal Rajdarbar, Kathmandu,
NEPAL.

Subject :—The humble memorundum on behalf of the Jain Community of India.

May it please your Imperial Majesty,

I, on behalf of the Jain community of India, have the honour to submit here with this memorundum for favour of your Imperial Majesty's very kind consideration and favourable decision,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

1. Janakpur, the holy place, situated in Nepal Tarai, under the domain of your Imperial Majesty, is also considered to be a place of Pilgrimage of the Jain Community.

2. The twentyfour Tirthankaras of the Jain religion (community) are considerd to be most worshipful by the members of the Jain community, the first of whom was Shri Adinath Rishav Dev and the last one was Lord Mahavir.

3. Lord Malli Nath a nd Lord Nemi Nath, the two Jain Tirthankars were both born at Janakpur, while Lord Mahavir, the last of the Tirthankars was born at Vaishali in north Bihar.

4. The Government of Bihar and the Government of India have taken very keen and active interest in establishing a momorial of Lord Mahavir at his birth place, Vaishali in North Bihar. On the 24th April 1983 a meeting was held under the presidentship of the Governor of Bihar at Patna Raj Bhawan, where in a semi-official committee was consituted with the Governer of Bihar as its president. A scheme of rupees fifteen lacs were approved for the construction of a suitable memorial, out of which the government of Bihar has kindly agreed to contribute rupees three lacs.

5. A free gift of land was made for the costruction of the proposed memorial, and the first President of India, Rashtrapati Dr. Rajendra Prasad very kindly laid the foundation stone of the proposed memorial on that gifted piece of land.

This humble memorialist now very respectfully submits to your Imperial majesty :

(1) To kindly sanction a suitable piece of free lease land at Janakpur for the estalishment of a suitable memorial, a temple and tourist rest houses at Janakpur in honour of the memory of the above mentioned two Tirthankaras, Lord Malli Nath and Lord Nemi Nath.

(2) Your Imperial Majesty will be pleased to apperciate that this is going to be the first place of pligrimage for all the members of the Jain community in Nepal, and we have no doubt that hundreds and thousands

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

of Jain pilgrims will be visiting this place for worship of their aforesaid two Tirthankaras every year. The number of pilgrims are bound to increase with the passage of time as well as due to the popularity of the recently opened Ganga bridge atP atna.

Your humble memorialist has very great respect for the most liberal views of Imperial Majesty for the members of all the religions and communities. The members of our community will be most happy and grateful, if called for to meet your Imperial Majesty in person to explain all that your Imperial Majesty would like to know in this respect.

I have the honour to remain,
Your Imperial Majesty's most faithful memorialist,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)
Devashram, Mahadeva Road,
ARRAH-802301,

Copy forwarded to the Chairman, Vishwa Hindu Sammelan, Ved Vidyashram, Ganbahal, Kathmandu, Nepal.
Shri Hulas C. Golcha, Golcha House, Ganabagal, Kathmandu Nepal,
Shri Pratap Chnd Vaid, Mahabir Auto Parts, Mahavir Bhawan, Lal Market, Siliguri, West Bengal
for favour of information and necessary action.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

The 21st May, 1983

My dear Shri Pratap Singh Ji,

I have received your kind letter dated 21st April 83, but I was busy in the marriage of my daughter and hence I could not reply to you so far. The marriage is now over, and I have today gone through your letter very carefully and also the letter sent to you by Shri Hulas C. Golchha of Kathmandu, Nepal. According to the advice given by Mr. Golchha I have drafted the memorial to His Imperial Majesty Shri Maharajadhiraj of Nepal, Raj Darbar, Kathmandu, Nepal.

I am also sending a copy of this momorial to Mr. Hulas C. Golchha, and to you as well.

I will be very happy to go to Nepal to meet His Imperial Majesty whenever you and Mr. Golchha jointly make a programme to go to Kathmandu and meet his Imperial Majesty in a deputation.

I, however, think that it would be more useful if some ground work is done before we meet his Imperial Majesty, and I feel that Mr. Golchha would be the best person to start negotiations in the matter and then fix up an appointment for our deputation to meet his Imperial Majesty. An early reply in this regard will be highly appreciated.

With regards,

Yours sincerely
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

To,

Shri Pratap Singh Ji Baid,
Mahavir Auto Parts,
Mahavir Bhawan, Lal Market,
Siliguri (West Bengal)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Date 4-6-83

Dear friend,

Jai jinendra.

Thank you for your kind letter of 21st May '83 together with a copy of Draft of Memorial.

I think the memorial is very nicely drafted.

Please phone Mr, Golchha at Kathmandu and you yourself once visit Kathmandu. I hope Mr. Golchha will do the needful. He is a very nice man and is my relative, you can go by plane from Patna.

I request you to arrange a programme to visit the place where we actually want the memorial to be erected and request you to visit Silliguri so we can both go together,

Please inform me early and oblige.
With kindest regards.

Sri Subodh Kumarji Jain
Deva Ashram.
P. O ARRAH
Bihar.

Yours sincerely
Sd/-
(P. S. BAID)

No. 684 10th June, 83

My dear Shri Baid,

I was glad to receive your kind letter deted the 4th June, 83, and I am happy to learn that you appreciated the memorial, which was drafted and sent to His Majesty the Maharajdhiraj of Nepal.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

I have also sent a copy of the memorial to Shri Hulas C. Golchha, Kathmandu. I am awaiting to hear from him in the matter. The spade work has to be done by your friend Shri Golchha. You say that he is very influential, and therefore, I have very hope that he will first find out what is the possibility of success of our memorial. Even if there is the least possibility, and His Majesty the Maharajdhiraj of Nepal responds favourably then we should seek on appointment with His Majesty so that a delegation of Jain Samaj meets His Majesty at Kathmandu. In that case I will request Shri Shriyans Prasadji Jain and Shri Shrenik Bhai Lal Bhai to lead a delegation. We should have a joint delegation of the Jain Samaj as a whole, and let us have a Tirth Kshetra at Janakpur which has no communal bearing but is one for the entire nation

Kindly remaind Shri Golchha. I am awaiting for some favourable response in the matter.

With kindest regards,

Yours sincerely
Sd
(SUBODH KUMAR JAIN)

N. B. :— A couple of years back, one Mr. Jain was India's Ambasador at Kathmandu. Please let me know his full name and present address. He might be of some help in the matter.

Copy forwarded to Shri Vijay Singh Nahar, Ex. M. P. & Ex. Deputy Chief Minister, W. B., 48. Indian Mirror Street, Calcutta-700013, for information.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Principal Secretary
Royal Palace, Nepal,
June 7, 1983

Dear Mr. Jain,

Please refer to your letter of 21st May, 1983 addressed to His Majesty the King of Nepal.

As regards your request for a suitable place of free lease at Janakpur for establishing a suitable memorial, a temple and a tourist rest house in the memory of two Tirthankars, Lord Malli Nath and Lord Nami Nath, I advise you to contact the chairman of Guthi Sansthan, Ram Shah Path, Kathmandu.

Thanking you,

Yours sincerely,
Sd/-
Ranjan Raj Khanal

No.-684 the 11th June, 83

To,
The Chairman,
Guthi Sansthan,
Ram Shah Path,
Kathmandu,
NEPAL,

Subject :—Memorial to His Imperial Majesty the Maharajadhiraj of Nepal for a piece of free lease land at Janakpur for erecting a suitable memorial in the honour of the two Tirthankars of Jain religion.

Dear Sir,

I had sent a memorial to His Imperial majesty the Maharajadhiraj of Nepal on the above subject, a copy of which is enclosed for your ready reference, which will speak for itself.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

The Principal Secretary, Royal Palace, Nepal, Shri Ranjan Raj Khanal, has advised me by his letter No, 14/040 dated the 7th June 1983 to contact you in this matter. A copy of the said letter of the Pricipal Secretary is enclosed herewith for favour of your information.

This being the position of our said memorial, I would earnestly request you to kindly favour me with your advice as to the action further needed to be taken by us in the matter. The memorial speaks for itself the importance and necessity for erect ng a suitable memorial in the honour of the two Tirthankars namely, Lord Malli Nath and Lord Nemi Nath at Janakpur. I, therefore, seek all your help and co-oporation in the matter.

I shall be highly grateful to you if I am favoured with a reply in the matter at your earliest convenience.

Thanking you,

Yours faithfully,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Encl :—Two

Copy of tha letter together with copy of the letter of the Principal Secretary, Royal Palace, Nepal, forwarded to :—

1. Shri Hulas C. Golchha,
   Golchha House, Ganbahal, Kathmandu, Nepal.
2. Shri Pratap Singh Ji Baid,
   Mahavir Auto Parts, Mahavir Bhawan, Lal Market, Siliguri (W. B.)

For favour of information and necessary action.

Shri Golchha is requested to please contact the Guthi Sansthan at Kathmandu and use his good offices for a satisfactory out come in the matter. A reply as to how the matter is proceeding at the level of the Guthi Sansthan will be highly helpful

Sd/-

Encl :— ONE. (SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 695 the 13th June, 1983

Dear Mr. Khanal,

I express my gatitude to you for your kind letter No, Ch. No. 14/040 dated the 7th June, 1983 in connection with my memori l addressed to His Imperial Majesty the Maharajdhiraj of Nepal. As advised by you, I have written to the Chairman, Guthi Sansthan, Kathmandu, Nepal in the matter.

I further request you to very kindly convey my respectful thanks to His Imperial Majesty for the kind interest shown by him on my said memorial.

Thanking you once more for your kind and prompt response to my memorial in question.

Yours sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Mr. Ranjan Raj Khanal,
Principal Secretary,
H. M. the King of Nepal Secretariat,
Kathmandu,
NEPAL.

HULAS C. Golchha

Golchha Organisation
Golchha House, Ganabahal,
Kathmandu, NEPAL.

Dear Subodhji, 20th June, 1983

I acknowledge with thanks the receipt of a copy of your letter dated 13-6-1983 which have been received just today addressed to the Chaiman, Guthi Sansthan, Kathmandu with regard to allotment of piece of free lease land at Janakpur for erecting a suitable memorial in the honour of our two Tirthankars, Lord Malli Nath Ji and Lord Nami Nath Ji.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

In this context, I am pleased to inform you that I have already got the information about the action taken and that I have already contacted the Chairman, Guthi Sansthan, Kathmandu for the allotment of the said free piece of land on lease at Janakpur. During the discussion, I was adviced to make available to the Sansthan full relative informations pertaining to the relations, cause which when existed, and in what manner by our two Tirthankars, to consider the request for the same. Are these available with you ? If so, please send them to me immediately.

Alternatively, please let me know as to how these information can be gathered either through any religious books or any other concerned media, to enable me to furnish the same to the Sansthan and take-up the matter for speedy disposal at this end.

If the concerned books are available with you, I shall request you to please send me the books duly marked for references for doing the needfull, Alternatively, you can let me know the names of the books which I shall try to arrange myself for consultations.

Once again, I assure you that I shall do my level best and shall be very happy if erection of a suitable memorial at Janakpur in Nepal for our Tirthankaras is effected.

While thanking you, I look forward on hearing from you soon.

Sincerely Yours,
Sd/-
(HULAS C. GOLCHHA)

Copy to :—Shri Pratap Singh Baid,
Mahabir Auto Parts,
Mahabir Bhawan,
Lal Market,
Siliguri (WEST BENGAL)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 13 5th July, 1983

Dear Mr. Golchha,

I was very glad to receive your letter dated the 20th June, 1983, in reply to my letter dated the 13th June, 83. I am also glad that the Chairman of Guthi Sansthan, Kathmandu, has also received my letter dated 13-6-83, for the allotment of a free lease land at Janakpur for the memorial af Lord Mali Nath and Lord Nami Nath. In this context it is a pleasure to note that you have already met the Chairman of the Sansthan, and it appears that you are hopeful for the allotment of land.

As desired by you, I am enclosing herewith, in duplicate, a quotation from the book "BHARAT KE DIGAMBAR JAIN TIRTH" Vol. 2 in Hindi, published by All India Digambar Jain Tirth Kshetra Committee, Bombay in collaboration with Bhartiya Gyan Pith, New Delhi. If you want to purchase this book you can have from the General Secretary, All India Digambar Jain Tirth Kshetra Committee, C. P. Tank, Heera Bagh, Bombay-4

Please let me know if this enclosed information is sufficient, because you will appreciate that these two Tirthakaras are prehistoric people, and therefore, no historical account can be available about them, They are Pauranik Mahaparush, and, therefore, only Pauranik legends and traditional story can be had about them and we have to rely on them, in the same way as we rely on the Pauranik Kathas of Lord Rama and Lord Krishna. There is no historical account of Sita being born at Janakpur. It is a Pauranik legend. In the same way it is a Pauranik legend in the Jain Sastars that Lord Mali Nath and Lord Nami Nath were born at Janakpur.

I once again thank you for the efforts that you are making in the matter for realisation of our cherished desire.

With my best regards,

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
Kathmandu, NEPAL.

Yours sincerely
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy with copy of enclosure forwarded to Shri P. S. Baid, Mahavir Auto Parts, Mahavir Bhawan, Lal Market, Siliguri (West Bengal) for favour of information and needful.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुलास चन्द गोल्छा

गोल्छा हाउस, मेन रोड,
बिराटनगर, काठमांडू,
नेपाल ।

दिनांक 21. 10. 1983

श्रद्धेय सुबोध कुमार जी,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपका पत्र संख्या 1065 दिनांक 24-8-83 का प्राप्त हुआ जिसके लिए आपको धन्यवाद ।

भगवान मल्लिनाथ स्वामी एवं नेमीनाथ स्वामी, दोनों के जन्म के सिलसिले में मैंने सम्माननीय श्री मातृका बाबू से आगे विचार विमर्श करने के दरम्यान यह बतलाया कि दोनों भगवान का जन्म जनकपुरी में ही हुआ था । इस सिलसिले में मैंने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी बम्बई से भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 2 की एक प्रति मंगवाली है । जिसे अध्ययनार्थ एवं सुझाव हेतु मैंने सम्मानीय श्री मातृका बाबू को दे दी है उनका सुझाव प्राप्त होने के बाद, इस विषय में आगे की कार्यवाही की जानकारी मैं आपको अपने पत्र में प्रेषित करूंगा ।

कृपया पत्रोत्तर दें ।

विशेष शुभम्

भवदीय

ह०-

(हुलास चन्द गोल्छा)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 432 23-3-1984

To,

The Chairman,
Guthi Sansthan, Shah Path,
Kathmandu, (Nepal)

Subject :—Memorial to his Royal Majesty the King of Nepal for a piece of land at Janakpur for erecting a memorial in the honour of the two Tirthankaras of Jain religion.

Dear Sir,

In connection with the above noted matter, we had received from the Principal Secretary to his Royal Majesty the King of Napal, his letter no, 140/040 dated 7-6-1983, As per his advice we had written to you by my letter No. 684 dated 13-6-1983, requesting you to kindly favour me with your advice as to the action further needed by us in the matter,

Since we have not received any reply to our above noted communication from you, we have to remind you to please look into the matter and favour me with your reply.

Thanking you,

Yours faithfully
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to the Principal Secrtary to his Royal Majesty the King of Nepal, Kathmandu (Nepal)

Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal, Kathmandu, Nepal, for favour of information and for looking in to the matter.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुलास चन्द गोल्छा

गोल्छा हाउस, मेन रोड,
बिराटनगर, काठमांडू,
नेपाल।

दिनांक 21. 10. 1983

श्रद्धेय सुबोध कुमार जी,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपका पत्र संख्या 1055 दिनांक 24-8-83 का प्राप्त हुआ जिसके लिए आपको धन्यवाद।

भगवान मल्लिनाथ स्वामी एवं नेमीनाथ स्वामी, दोनों के जन्म के सिलसिले में मैंने सम्माननीय श्री मातृका बाबू से आगे विचार विमर्श करने के दरम्यान यह बतलाया कि दोनों भगवान का जन्म जनकपुरी में ही हुआ था। इस सिलसिले में मैंने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी बम्बई से भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग 2 की एक प्रति मंगवाली है। जिसे अध्ययनार्थ एवं सुझाव हेतु मैंने सम्मानीय श्री मातृका बाबू को दे दी है उनका सुझाव प्राप्त होने के बाद, इस विषय में आगे की कार्यवाही की जानकारी मैं आपको अगले पत्र में प्रेषित करूंगा।

कृपया पत्रोत्तर दें।

विशेष शुभम्

भवदीय

ह०-

(हुलास चन्द गोल्छा)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 432 Dt. 23-3-1984

To,

The Chairman,
Guthi Sansthan, Shah Path,
Kathmandu, (Nepal)

Subject :—Memorial to his Royal Majesty the King of Nepal for a piece of land at Janakpur for erecting a memorial in the honour of the two Tirthankaras of Jain religion.

Dear Sir,

In connection with the above noted matter, we had received from the Principal Secretary to his Royal Majesty the King of Nepal, his letter no. 140/040 dated 7-6-1983. As per his advice we had written to you by my letter No. 684 dated 13-6-1983, requesting you to kindly favour me with your advice as to the action further needed by us in the matter,

Since we have not received any reply to our above noted communication from you, we have to remind you to please look into the matter and favour me with your reply.

Thanking you,

Yours faithfully
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to the Principal Secrtary to his Royal Majesty the King of Nepal, Kathmandu (Nepal)

Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal, Kathmandu, Nepal, for favour of information and for looking in to the matter.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No· 433 23-3-1984

Dear Shri Hulas Chand Ji Golchha,

I refer to you my last letter No. 1490 dated 29-10-83, which was in reply to your letter dated 21-10-83. I am very eagerly awating to hear from you what reaction Shri Matrika Prasad Koirala has in the matter ? You had written to me that they have given to him the second part of the Bharat Ke Digambar Jain Tirth to press our points that our two Tirthankaras were born in Janakpur: His co-operation and help will be very valuable to us.

I would also be happy to hear from you what reaction there is in the office of the Government of Nepal regarding grant of necessary land to us.

In this connection I had sent to you a copy of letter No. 14/040 dated 7-6-1983 received from Shri Ranjan Raj Khanal, Principal Secretary to His Majesty the King of Nepal. According to the advice contained in his letter we had written to the Chairman, Guthi Sansthan, Ram Shah Path, Kathmandu with a copy to you. Please enquire from both offices of the Government of Nepal and try to persuade them to expedite the matter.

Thanking you,

Yours Sincerely,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
Kathmandu, (Nepal).

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 793 9th June, 84

To,

The Chairman,
Guthi Sansthan,
Ram Shah Path,
Kathmandu,
NEPAL,

Subject :—Memorial to His Royal Majesty the King of Nepal for lease of a piece of land at Janakpur for erecting a memorial in the memory of the two Tirthankars of Jains.

Dear Sir,

I invite your kind attention to my letter No. 432 dated the 23rd March. 1984 on the subject noted above. On the advice of the Principal Secretary to his Royal Majesty, I had approached you through my letter No. 604 dated 15-6 1983 for your help and co-operation. I have received no responce from you in the matter so far.

I once again request you to kindly favour me with your reply in the matter for which I shall remain grateful to you.

Thanking you,

Yours Faithfully,

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal, Kathmandu, Nepal for favour of information and needful,

(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No· 433 23-3-1984

Dear Shri Hulas Chand Ji Golchha,

I refer to you my last letter No. 1490 dated 29-10-83, which was in reply to your letter dated 21-10-83. I am very eagerly awating to hear from you what reaction Shri Matrika Prasad Koirala has in the matter ? You had written to me that they have given to him the second part of the Bharat Ke Digambar Jain Tirth to press our points that our two Tirthankaras were born in Janakpur: His co-operation and help will be very valuable to us.

I would also be happy to hear from you what reaction there is in the office of the Government of Nepal regarding grant of necessary land to us.

In this connection I had sent to you a copy of letter No. 14/040 dated 7-6-1983 received from Shri Ranjan Raj Khanal, Principal Secretary to His Majesty the King of Nepal. According to the advice contained in his letter we had written to the Chairman, Guthi Sansthan, Ram Shah Path, Kathmandu with a copy to you. Please enquire from both offices of the Government of Nepal and try to persuade them to expedite the matter.

Thanking you,

Yours Sincerely,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
Kathmandu, (Nepal).

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 793 9th June, 84

To,

The Chairman,
Guthi Sansthan,
Ram Shah Path,
Kathmandu,
NEPAL,

Subject :—Memorial to His Royal Majesty the King of Nepal for lease of a piece of land at Janakpur for erecting a memorial in the memory of the two Tirthankars of Jains.

Dear Sir,

I invite your kind attention to my letter No. 432 dated the 23rd March. 1984 on the subject noted above. On the advice of the Principal Secretary to his Royal Majesty, I had approached you through my letter No. 604 dated 15-6 1983 for your help and co-operation. I have received no responce from you in the matter so far.

I once again request you to kindly favour me with your reply in the matter for which I shall remain grateful to you.

Thanking you,

Yours Faithfully,

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal, Kathmandu, Nepal for favour of information and needful,

(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 794 9th June, 84

My Dear Shri Golchha Ji,

I would like to invite your personal attention to my last letter No. 433 dated 23-3-1984, regarding the proposed allotment of land at Janakpur for erecting memorial in memory of our two Tirthankaras. I am eagerly waiting for your reply to know about further development in the matter.

You had given the second part of the book "BHARAT KE DIGAMBAR JAIN TIRTH" to Shri Matrika Prasad Koirala. What are his views and reaction to our proposal ? His co-operation and help in the matter will indeed be very valuable. However, his views in the matter may kindly be communicated to me.

I am also keen to know in what process the matter is at present pending in the Office of the Principal Secretary to his Majesty, and what the Chairman of Guthi Sansthan, Kathmandu is doing in the matter. I had sent a reminder to the Chairman, Guthi Sansthan, Kathmandu, vide my letter No. 432 dated 23-3-1984 with a copy to you but there has been no response from him as yet.

I shall be very thankful if you would please let me know in detail as indicated above at your earliest convenience.

With regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
KATHMANDU, NEPAL.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

HULAS C. GOLCHHA GOLCHHA HOUSE, GANBAHAL,
KATHMANDU, NEPAL.

July 25, 1984

Dear Shri Subodh Kumar ji,

I acknowledge with thanks the receipt of your letter No. 794 dated 9-6-1984 in connection with the proposed allotment of a piece of free land at Janakpur by the Government of Nepal for erecting suitable memorial in memory of our two Tirthankaras enclosed with a copy of letter No. 793 of 9-6-1984 addressed to the Chairman, Guthi Sansthan, Ram Shah Path, Kathmandu and the developments made at this ends so far.

It may please be noted that since I handed over the book "BHARAT KE DIGAMBAR TIRTH" to Shri Matrika Babu with regard to his views on the above, I have not heard anything from him so far.

Further, I am sorry to inform you that since last three weeks I was not keeping good heath and was under complete rest and hence I was not able to make any contact with Shri Matrika Babu on the above. However, after a week or so when I am fully O. K., I shall try to get his views and shall communicate to you. In the meantime I shall also try to contact the Chairman, Guthi Sansthan on above proposed sanction of free piece of land at Janakpur and shall pursue the matter so that the work could be done.

I am sorry that the matter have been delayed for the above reasons.

With regards,

Yours faithfully
Sd/-
(For Hulas Chand Golchha)

Shri Subodh Kumar Jain,
Deva-Ashram,
Mahadeva Road,
Arrah (BIHAR) INDIA.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

No. 1110 9th August, 84

My dear Shri Golchha,

Subject :—Memorial to his Royal Highness the King of Nepal for lease of a piece of land at Janakpur for erecting a memorial in honour of our two Tirthankaras.

I thank you for your reply dated the 25th July, 1984. I regret that you have been ill for the last three weeks, and, therefore you could not contact Matrika Babu regarding the above matter. I am glad that you are now contacting him. Please let me know the result.

I am very eager and anxious about the matter, and it would be useful if a final conclusion is arrived at withont delay. I have no doubt that you are also eager to finalise the matter.

I also understand that you are trying to contact the Chairman of the Guthi Sansthan. Please do it definitely and let me know.

With regards,

Yours sincerely

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
Kathmandu, NEPAL.

HULAS C. GOLCHHA GOLCHHA HOUSE, GANBAHAL, KATHMANDU, NEPAL.

August 16, 1984

Dear Shri Subodh Kumar Ji,

Sub :—Allotment on lease of a piece of land at Janakpur for erecting suitable memorial in honour of our two Tirthakaras.

On behalf of our Shri Hulas Chand Golchha, I acknowledge with thanks the receipt of your letter No. 1110 dated 9-8-1984 and noted the contents therein.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

As informed earlier, for a thorough medical check-up, Shri Hulas Chand Golchha has left for the USA on the 8th August, 1984 and is likely to be back only after 3/4 weeks. Hence for sometime, the above matter will be delayed.

Thanking you,

Yours Sincerely,
Sd/-
(For Hulas C. Golchha)

Ref. 259 30th November, 1984

To,
Shri Rajan Raj Khanal,
Principal Secretary,
Royal Palace, Nepal,
KATHMANDU (NEPAL)

Subject :—Allotment of a piece of land on lease at Janakpur (Nepal) for erecting a suitable memorial in honour of the two Jain Tirthankaras.

Dear Sir,

Kindly refer to your letter dated the 7th June, 1983 and my D. O. letter No. 695 dated 13-6-1983 on the subject noted above. In your letter you were kind to advise me to contact the Chairman of the Guthi Sansthan, Ram Shah Path, Kathmandu, in the matter. Since then I have sent three letters to him on 13-6-1983, 23-3-1984 and 9-6-1984 in the matter, but I regret to say that no responce whatsoever has been received from him.

I have full hope in you and I believe that without your intervention the matter will not proceed any further, and will continue to stand still as it is now. I, therefore earnestly request to kindly intarvene in the matter and be kind enough to expedite the finalisation of this

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

matter which is for a good and religious cause. A line in reply will be highly appreciated.

Thanking you,

Yours faithfully
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha.
Golchha House, Ganbahal,
Kathmandu, (Nepal).

Copy forwarded to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal, Kathmandu.
Shri Pratap Singh Ji Baidya, Siliguri for favour of information and necessary action.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

No. 260 Dated 30th November, 1984

My dear Shri Golchha Ji,

Subject :—Allotment of a piece of land on lease at Janakpur (Nepal) for erecting a suitable memorial in honour of our two Tirthankaras.

I learnt from letter dated 16-8-1984 of Shri Gyan Chandra Ji Jain, sent to me on your behalf that you had gone to the U.S.A. for a thorough check-up. I hope you have returned after a pleasant and useful journey to America, and your check-up there must have been very helpful for your better health and long life.

Since you have returned to your country you may get sufficient time to contact Shri Matrika Prasad Koirala in the matter. I have also not received any communication from the Guthi Sansthan inspite of my several letters. Their silence in not even acknowledging my letters is strange and I fail to attribute any reason for this. However, I have every hope that sincere efforts by you will surely bring good and favourable result.

Kindly give some more time to this important matter and pursue this very closely so that tse desired result is achieved early.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Hoping to get an early reply from you.

With regards,

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
Kathmandu (NEPAL)

Yours sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to Shri Pratap Singh Baidya, Mahavir Auto Parts, Mahavir Bhwan, Shrilal Market, Siliguri (West Bengal) for favour of information and necessary action.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

●

No. 500

2nd February, 1985

To,

The Chairman,
Guthi Sansthan,
Ram Shah Path,
Kathmandu, (NEPAL)

Subject :—Memorial to his Royal Highness the King of Nepal for lease of a piece of land at Janakpur for erecting a memorial in honour of the two Tirthankaras of Jains religion.

Dear Sir,

On the advice of the Principal Secretary, Royal Palace, Nepal in his letter No. 14/040 dated 7-6-1983, I had in my letter No. 684 dated the 13th June, 1983, requested you to advise me as to what further action is to be taken by us in the matter and also asking your help and co-operation for this good religious cause. I am still awaiting your reply although I have sent two reminders to you on 23-3-84 and 9-8-84.

I shall be highly grateful if you kindly look into the matter

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

and favour me with your necessary advice in the matter at your earliest.

Thanking you,

Yours faithfully,

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal, Kathmandu, Nepal for favour of information and needful,

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

●

Ref 502 2nd February, 1985

To,

Shri Rajan Raj Khanal,
Principal Secretary,
Royal Palace, Nepal,
KATHMANDU (NEPAL)

Subject :—Allotment of a piece of land on lease at Janakpur (NEPAL) for erecting a suitable memorial in honour of the two Jain Tirthakaras.

Dear Sir,

Kindly refer to my letter No. 249 dated the 30th Nov. 1984 with refrence to your letter dated the 7th June, 1983 on the above subject. I am still waiting for any communication from you in the matter. The Chairman of the Guthi Sansthan, to whom you had advised me to write in the matter has also not responded to my letter dated 13-6-1983 inspite of three reminders.

As you were so kind enough to give me prompt necessary advice, I hope you likewise ask the Cairman, Guthi Sansthan, Kathmandu to look into the matter and advise me so that I may act accordingly

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

for fulfilment of our prayer. I shall be highly grateful to you for a lime in reply at your earelist.

Thanking you,

Yours faithfully,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy forwarded to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganbahal. K ATHMANDU for favour of information and necessary action.

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Date :— 25 March, 1985

GUTHI SANSTHAN, CENTRAL OFFICE.
Ram Shah Path, KATHMANDU.

Sub :—Allotment of land at Janakpur.

Shree Subodh Kumar Jain,
Dev-Ashram
Arrah-802301

Please refer to your letter Ref. 502 date 2 Feb, 1986 addresed to the Principal Secretary to HIG.

Your letter under reference, around with your previous letter has been received by me. I will be greatful if you could kindly send us such litratures which mention authentically birth of two Tirthankaras at Janakpur, Nepal, It would be of further help to me if you could in-light on the area of land required etc.

On reecipt of information it will be easy for me to put-up matter before the authoritis for consideration.

Thanking you.

Sd/-

(KRISHNA MURAI SHARMA)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

HULAS C. GOLCHHA

GOLCHHA HOUSE, GANABAHAL,
KATHMANDU, NEPAL.

March 30, 1985

My dear Subodh Kumar ji,

Many thanks for your persuance and perseverance that we have been able to break some ground.

Respected Matrika Babu has finally given a green signal to the Guthi Sansthan. Now I am following-up closely with their Chairman Mr. V. P. Khanal. I am now-a-days contacting these people every now and then personally.

Anyway, I will continue to apprise you with the progress in the matter.

With regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(Hulas Chand Golchha)

Shri Subodh Kumarji Jain,
Dev-Ashram,
Mahadeva Road,
Arrah (BIHAR) INDIA.

●

Ref : 763

6th April, 1985

To,
Sri Krishna Murari Sharma,
Adhikrit Astar 2nd Class,
Guthi Sansthan,
Ramshah Path,
Kathmandu, NEPAL.

Subject :—Allotment of land at Janakpur.

Dear Sir,

Kindly refer to your letter dated the 25th March, 1985 in response to my letter No. 502 dated 2nd February, 1985, on the subject

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

noted above. I thank you very much for your kind reply. In this connection, I am writing to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganabahal, Kathmandu, to contact you immediately and furnish to you the necessary details and informations so kindly asked for by you in your letter under reference.

Shri Golchha has been very kindly helping and assisting me regarding allotment of land at Janakpur by your Government, and I have received a letter from him today dated 30th March. 85, that he is already personally in contact with you about this matter every now and then.

I am also sending to him a copy of this letter for his information requesting him to contact you again and respond to your kind letter dated 25th March, 1985, which you have written to me.

If you have any further query to make, please do not hesitate to write to me and I will definitely respond to you immediately.

Thanking you very much for your kindly taking up the matter in right earnest.

Yours faithfully,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Copy with copy of the letter to which it is a reply forwarded to Shri Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganabahal, Kathmandu, Nepal, for favour of information and needfull.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

●

Ref : 769

My dear Shri Golchha,

It was a pleasure to receive your letter dated 30th March today, and to learn that we have been able to break some ground

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

regarding our negotiation with Guthi Sansthan. I was all the more happy to learn that respected Matrika Babu has given a green signal to Guthi Sansthan, and now you are following up the matter closely with their Chairman, Mr. V. P. Khanal. Since you are contacting these people every now and them, our request for free grant of land at Janakpur must have taken some shape by now. I am eager to know about the details in this regard which please communicate to me at your earliest covenience.

I have also received a letter dated 25-3-1985 regarding the same matter from the Guthi Sansthan, i. e. about allotment of land at Janakpur, and I am sending a copy of the said letter to you for your information. Since I do not know the details from Chairman of the Guthi Sansthan, Mr. V. P. Khanal, I think it would be not desirable to write to them in detail committal from my side, and therefore, I would request you to please respond to the letter of the Guthi Sansthan as you think best, and send to me a copy of the same for my information and for my future correspondence with them. I am, however, writing to them a letter in reply to their letter under reference, and I am also sending a copy of the same to you for your information.

Please do let me know the recent development in detail.

With my best regards to you and my very best wishes for your continued good health.

Yours Sincerely,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Encl :-

1. Copy of Guthi Sansthan's letter Dated 25-3-85.
2. Copy of reply to the above letter of Guthi Sansthan.

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganbahal,
KATHMANDU, NEPAL.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

HULAS C. GOLCHHA GOLCHHA HOUSE, GANABAHAL,
KATHMANDU, NEPAL.

April 26, 1985

My dear Subodh Kumar Ji,

I acknowledge with thanks the receipt of your letter No 769 dated 6-4-85 alongwith a true copy of letter No. 7482 dated 25-3-85 received from the Adhikrit Astar Duitiya Shreni, Guthi Sansthan, Kathmandu and a copy of your reply sent to Guthi Sansthan in connection with allotment of a piece of land at Janakpur.

In this connection, I would like to inform you that when contacted, Guthi Sansthan Chairman asked me to furnish him a plan and requirements of land. The letter sent to you by Guthi Sansthan is also self explanatory wherein they have asked you to furnish land requirements after receipt of which the matter will be put up before concerned authorities for consideration of the same-

Accordingly, I shall request you to please arrange to send the details of the plan and the Area of the Land required for erection of the memorial to enable me to further take-up the matter suitably with Guthi Sansthan for early finalisation of the matter.

With best regards,

Sri Subodh Kumar Jain
Mahadewa Road
Deva-Ashram
Arrah-802301 (BIHAR)

sincerely Yours,
Sd/-
(HULAS C. GOLCHHA)

●

Ref : 909 6th May, 1985

My dear Shri Golchha,

In response to your very encouraging letter dated the 30th March, 1985, and also with reference to the letter dated 25-3-1985 that I received from the Guthi Sansthan, I had sent to you a detailed reply in my letter No. 769 dated 6-4-1985, enclosing a copy of the Guthi Sansthan's letter and also a copy of my reply to them.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

I do not know whether you have received my letter and copies of letters from and to Guthi Sa nsthan. I am, therefore, sending another copy of my letter to you along with copies of the enclosure which please acknowledge immediately.

I, however, hope that you have received my letter dated 6th April, 85, and that you have again contacted Shri Krishna Murari Sharma of the Guthi Sansthan, and you must have given him satisfactory response as desired by them. An early reply is requested.

With my best wishes,

Yours sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Encl. :—
1. Copy of my letter dated 6-4-85 with copies of its two enclosures.

Ref : 919 8th May, 1985

My dear Shri Golchha,

I thank you for your communication dated the 26th April 1985 in response to my letter dated 6-4-1985. Only yesterday, I wrote a reminder to my above letter to you. I am very glad that you were good enough to contact the Guthi Sansthan's Chairman after receiving my letter.

I think you will agree with me that at least 5 (five) acres of land should be demanded from the Guthi Sansthan which should be adjacent to Janakpur. If, however they are inclined to give us land some where away from Janakpur itself, then you can demand for 15 acres of land.

Regarding the plan of the project, we will get it prepared after getting the allotment of land from the Guthi Sansthan. My idea is, however, to put up at least a 35' high replica of Sumer Parbat and Pandkukshila.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

There is a description in our Purans that when the Tirthankars are born, the Indra and Indrani descend from the heaven and visit the place of birth of the Tirthankaras. Thereafter they take away the new born child to Sumer Parbat where the new born child is annointed by sacred water of Ksheer Sagar. It is in the sacred memory of this great event that replica of Sumer Parbat is built at the place of birth of Tirthankaras.

Recently we have built a 80' high replica of Sumer Parbat at Hastinapur, which is the birth place of three Tirthankaras, the Pratistha ceremony of which was performed only this week with great enthusiasm.

Besides construction of replica of Sumer Parbat, we will also construct guest houses for visitors and also a boundary wall surrounding the replica of the Sumer Parbat and the guest houses, covering about an acre of land. Out side this temple area, we will have a barbed wire fencing covering the rest of the land alloted to us, which will be decorated with flowery trees leaving ample space for temporary Shemiyanas and shade which we may have to put up at the time of any special functions.

I am giving you this idea so that you can explain to the Chairman of the Guthi Sansthan about it. We will, however, definitely give him a site plan as and when we know the area of land allotted to us.

I thank you again for your communication.

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganabahal,
Kathmandu (NEPAL)

Yours sincerely
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

●

Ref : 1075 11th June, 1985

My dear Shri Golchha,

In response to your letter dated the 26th April, 1985, I have sent to you a detailed reply in my letter No. 919 dated 8-5-1985. Today is the 11th June, i. e. it is more than a month since I wrote

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

to you that letter, and there is no response from you. I am afraid that letter has not reached you. I am again sending a copy of that letter to you to enable you take up the matter with the Guthi Sansthan as early as possible. Please let me know if you have already contacted the chairman, Shri V. P. Khanal. Please also convey my respects to Matrika Babu. I am really very much obliged to him that he is taking so much interest in the matter.

Dr. M. K. Jain of All India Shakahar Sangh, New Delhi was here on the 1st of this month on his mission regarding the propogation of vegetarianism. He had a programme to go to Kathmandu as well and I have given to him your name. I hope he has met you. I have also told him the details about our efforts to get the land at Janakpur. He has promised to visit Janakpur as well, and inspect the probable land with the help of the local government officers. Please do let me know if he has met you at Kathmandu. He is moving in a Matador Van as he is compeletaly bed ridden due to certain illness. If you have met him you must have felt amazed that a bed ridden man is so active in his mission.

I hope you are well and hope to hear from you as soon as possible.

Yours Sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha.
Golchha House, Ganabahal,
Kathmandu, (Nepal).

Ref : 1367 31 July, 1985

My dear Shri Golchha,

I have received a letter from Dr. Manindra Kumar Jain of Delhi dated the 24th July, 1985. He tells me in short about his trip to Janakpur and Kathmandu.

At Janakpur he suggests to procure land from the Government of Nepal at a village name Dhanush (D H A N U S H) which he tells is on the road from Janakpur to Kathmandu, probably a mile or two from Janakpur.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

He further tells me that for including persons from outside Nepal in the proposed Trust to be formed, permission of Maharaja Mahendra will be necessary. He also tells me that it would be necessary according to you to from a Trust of Jains of Nepal before the land is alloted to the said Trust.

In this connection I would request you to please write to me in detail about your suggestion. My wish is that the Trust should jointly consists of both the Swetambaras and Digambaras. I do not know how for the matter has progressed with the Guthi Santhan and I will await your letter in this respect.

I hope yau are doing well with my best wishes,

Yours sincerely,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganabahal,
KATHMANDU, NEPAL.

●

Ref :-1487 26th August, 85

Dear Shri Golchha,

I hope you are doing well. I had written to you a letter on the 31st July, 85 after Dr. M. K. Jain of Delhi met you at Kathmandu. I hope you have received that letter. Please do let me know how far you have moved the Guthi Sansthan regarding the land at Janakpur,

I had mentioned to you in my last letter that Dr. M. K. Jain has selected a place at Janakpur which is near village Dhanush. Please let me know what is your reaction to it.

I am sending to you seperately a copy of our six-monthly bilingual magazine Shri Jain Sidhant Bhaskar/The Jain Antiquary of our Shri Deva Kumar Jain Oriental Research Institute, Arrah. You may find it interesting.

With regards,

Yours sincerely,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha,
Golchha House, Ganabahal,
KATHMANDU, NEPAL.

●

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

HULAS C. GOLCHHA

GOLCHHA HOUSE, GANABAHAL,
KATHMANDU, NEPAL.

Kathmandu- Nepal
27th May, 1986

Shri Subodh Kumarji Jain,
Deva-Ashram
Mahadeva Road.
ARRAH-802301

My dear Subodh Kumar ji,

I acknowledge with thanks the receipt of your kind letter dated 15th May 1986 alongwith the copy of your letter dated 26th August 1985 which apparently has not yet been received by me earlier.

I am very sorry to learn from your letter that you have been unwell for the last five months. I hope you are doing fine now and that this letter will find you in the best of your health and happiness.

I am glad to note the Jain legend mentioned in your letter about Tirthankara, Sumer Parbat and Mahamastakavishek.

About the settlement of land at Janakpur or around, respected Matrika Babu had been busy in the election which is now over. The Chairman of Guthi Sansthan is searching the suitable plot. Their man is going next week to Janankpur for selection of a good land. Your proposed area is very big and of high price. If smaller land is sufficient, they can provide for us.

In June, I am going overseas to foreign countries and presently I am visiting Calcutta (India) so you can send your son here in Kathmandu only in the 4th week of July after my return home.

Meanwhile, thanking you and looking forward to hear from you,

Yours sincerely,
Sd/-
(HULAS C. GOLCHHA)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ref : 914 4th July, 1986

My dear Sahu Ji,

Sadar Jai Jinendra,

Re : Janakpur (Nepal) the birth place of Tirthankars Mali Nath and Nemi Nath.

About three years back on 21-5-1983, I had submitted a memorial to His Imperial Majesty the Maharajadhiraj, the King of Nepal for allotting a free-held land at Janakpur for establishment of a suitable memorial, a temple and tourist rest house at that place, in honour of the memory of the two Tirthankaras, who were born at Janakpur.

In this connection I have sought the help of Shri Hulas C. Golchha, a rich Swetambar merchant of Kathmandu. Shri M. K. Koirala, the Ex-Prime minister of Nepal has also been helping us in this project. I came in contact with Shri Golchha through Shri Pratap Chand Baid of Silliguri, another Swetambar gentleman, whom I know for some years back.

There is an institution called Guthi Sansthan, belonging to the Nepal government which looks after the allotment of lands. This Guthi Sansthan has also been active in this project on instruction from the office of His Imperial Majesty the King of Nepal. I have exchanged several letters with all these people mentioned above, a file of which I am enclosing herewith under registered post. The last letter in this file is from Mr. Golchha dated 20-6-1986 through which he informs me that the Chairman of the Guthi Sansthan has agreed in principle that a memorial be constructed there. The Chairman of the Guthi Sansthan has visited Janakpur area and has seen a number of sites for our purpose. He has got the permission of His Imperial Majesty's Office to actually finalise the matter and to transfer the ownership of the land, for which he has made a move and we have to wait for His Imperial Majesty's government permission.

Mr. Golchha has informed me at the end of his letter that he is going to Africa and Europe and that he will take up the matter after he comes back to Kathmandu in about 3 weeks' time. I am

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

thinking of sending my son, Shri Akchay Kumar Jain to Kathmandu on the return of Mr. Golchha ro talk to him and to finalise the modility of transfer of land. I would very much like that this memorial be built in such a way that it is commonly owned by both the Digambars and Swetambars with a managing committee composed of the members of both the sects of the Jain community.

Since the matter has gone a long way, I thought it fit to send to you the entire file of the correspondence so that you in the capacity of the President of All India Digambar Jain Tirth Kshetra Committee would examine this project and send your approval and offer me the co-operation of All India Digambar Jain Tirth Kshetra Committee in every respect to get the matter finalised for the construction of a suitable memorial at that place.

With respectful regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Sahu Sriyans Prasad Ji Jain,
'Nirmal' 3rd Floor,
Nariman Point,
Bombay-21.

●

प्रतिलिपि

साहु श्रेयांस प्रसाद

मरीमन तीसरी मंजिल
नार्र मन पवायंट, बम्बई–400021.

दिनांक :– 15 जुलाई 1986

प्रिय श्री सुबोध कुमार जी,

आपका दिनांक 4 जुलाई का पत्र जनकपुर (नेपाल) में तीर्थंकर मल्लीनाथ एवं भगवान नेमीनाथ का स्मारक बनाने की योजना के सम्बन्ध में प्राप्त हुआ तथा साथ में भेजी गयी फाईल भी मिली। आपकी योजना प्रशंसनीय है। इस विषय में आप भूखण्ड प्राप्त करने के लिए जो प्रयास कर रहे हैं, उसमें सफलता मिले, इसकी कामना करता हूँ।

आपका
ह०/-
(श्रेयांस प्रसाद)

श्री सुबोध कुमार जी जैन, आरा।

●

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रतिलिपि

1149 11–8–1986

श्रद्धेय साहुजी,

सादर जयजिनेन्द्र !

आपका पत्र जनकपुरी के विषय में मिला। आपने तीर्थङ्कर नेमिनाथ भगवान के स्मारक बनाने की योजना को पसन्द किया, यह जानकर खुशी हुई। हमारी बहुत इच्छा थी कि विदेशों में भी यानि नेपाल और पाकिस्तान में जैनतीर्थ बनने चाहिए। मुझे लगता है कि जनकपुरी में तो देर-सवेर यह काम हो जायगा। भरसक स्मारक का ऐसा रूप होना चाहिए जो कि दिगाम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदाय दोनों को सर्वमान्य है। मुझे बड़ी खुशी हुई थी जब मुनि श्री विद्यानन्द जी के प्रयत्न से जैन ध्वज और एक जैन चिन्ह दोनों सम्प्रदाय वालों ने स्वीकार कर लिया था तथा विनोबा जी के सर्व प्रयत्न से दोनों सम्प्रदायवालों ने एक श्रमण उत्तम भी स्वीकार कर लिया था। इसी प्रकार मैं चाहूँगा कि एक ऐसा स्मारक चाहिए जो स्वीकारा जा सके, जो कि दोनों सम्प्रदायवालों को एक समान पूजनीय हो। कृपया इस विषय पर आप अवश्य मार्गदर्शन देने का कष्ट करें तथा मुनि श्री विद्यानन्द जी से राय सलाह करने का कष्ट करें।

पाकिस्तान में सम्भवत: पंजाब में तक्षशिला ही वह स्थान पाया गया है, जहाँ भगवान बाहुबलि की राजधानी थी और जहाँ उन्होंने मुनि दीक्षा ली थी। हमारी इच्छा थी कि पाकिस्तान में भी इसी स्थान पर एक स्मारक बनना चाहिए। जनकपुर की जमीन का एक निर्णय हो जाय तो, पाकिस्तान के प्रशासकों से भी लिखा पढ़ी होनी चाहिए।

अभी पिछली बार जब भारत के राष्ट्रपति नेपाल गये थे, तो उनके साथ कोई जैन उच्चाधिकारी भी गये थे। कृपया मुझे लिखें कि आप इनको जानते हैं या नहीं। हो सकता है कि वे वही व्यक्ति हों, जो कुछ वर्ष पूर्व नेपाल में भारत के राजदूत थे। उनसे भी नेपाल-स्मारक के लिए महत्वपूर्ण सहयोग मिल सकता है, ऐसा मेरा अनुमान है।

भवदीय

ह०/–

(सुबोध कुमार जैन)

श्री साहु श्रेयांस प्रसाद जैन
निर्मल तीसरी मंजिल/नरीमन पवायंट
बम्बई–400021

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रतिलिपि

नं० 1235 26-8-86

श्रद्धेय पूज्य गुरुवर एलाचार्य जी के चरणों में आरा से
सुबोधकुमार कासादर नमोस्तु !

विषय :—नेपाल के जनकपुरी में तीर्थङ्कर मलिनाथ और तीर्थङ्कर नमीनाथ के जन्म स्थान पर स्मारक निर्माण की योजना।

उपर्युक्त विषय में मैं 2-3 वर्षों से नेपाल सरकार और नेपाल के महाराजा से इस विषय को लेकर प्रयत्नशील हूँ कि नेपाल सरकार द्वारा जनकपुरी में जो कि दो तीर्थङ्करों की जन्मभूमि है स्मारक निर्माण के लिए नेपाल सरकार द्वारा भूमि प्रदान की जाय॥

इस विषय में मुझे नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री एस० के० कोइराला तथा नेपालवासी एक सुप्रसिद्ध धनी व्यक्ति श्री गोल्छा के बहुमूल्य सहयोग मिले हैं और अब ऐसी सूचना मिली है कि नेपाल सरकार इस पुण्य कार्य के लिए जनकपुरी में हमलोगों को भूमि प्रदान करने का निर्णय ले लेगी। श्री गोल्छा विदेश चले गए थे। इसलिए इस काम में अन्तिम रूप से आदेश प्राप्त करने में विलम्ब हो रहा है।

मैंने साहु श्रेयांस प्रसाद जी को इस विषय में जिसने नेपाल सरकार तथा श्री गोल्छा आदि से पत्राचार हुए थे, उसकी पूरी डिटेल भेज दी थी ताकि आगे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटि का भी पूर्ण सहयोग स्मारक निर्माण आदि में प्राप्त हो जाय और यह कार्य अविलम्ब पूरा हो सके।

मैंने साहुजी को सुझाव दिया था कि मुनिवर एलाचार्य जी ने जिस प्रकार पच्चीससौ वर्षीय निर्माण उत्सव के अवसर पर जैन ध्वज और जैन चिन्ह का प्रतीक दोनो ही दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज से एक समान मान्य कराया था उसी प्रकार हमलोगों को चाहिए कि दोनों समाज के लिए मान्य एक स्मारक का भी निर्माण कराया जाय। मैंने साहुजी को यह भी सुझाव दिया था कि वे इस विषय में आपसे भी विचार-विमर्श करें। आज हमारे पास साहुजी का पत्रोत्तर आया है कि मैं आपको इस विषय में पत्र लिखूँ। उन्होंने आश्वासन दिया है कि वे अगली बार दिल्ली जायेंगे, आपसे वे इस विषय में वार्तालाप करेंगे। उन्हीं के सुझाव से आपको पत्र दे रहा हूँ और प्रतिलिपि साहुजी को भी। गुरु चरणों में नमस्कार।

भवदीय
ह०/-
(सुबोध कुमार जैन)

सुबोध कुमार जैन
देवाश्रम, आरा (बिहार)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इतिनिधि

न०-1324 6-9-86

श्री एन० बी० जैन
सचिव,
विदेश मंत्रालय
भारत सरकार
नयी दिल्ली

प्रिय महाशय,

आप कोअवश्य ज्ञात होगा कि नेपाल राज्य से जनकपुरी में तीर्थङ्कर मलिनाथ और तीर्थङ्कर नमीनाथ दो तीर्थङ्करों की जन्मभूमि है।

मैं इधर कुछ वर्षों से नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री एस० के० कोईराला और वहीं के श्वेताम्बर जैन श्री हुलास चन्द गोलछा के माध्यम से, इस प्रयत्न में लगा हुआ हूँ कि नेपाल सरकार हमारे उस आवेदन पत्र पर स्वीकृति प्रदान करेंगे। जिसमें मैंने जनकपुरी में दोनों तीर्थङ्करों के स्मारक बनवाने हेतु,

(1) 5 एकड़ जमीन हमें प्रदान करें और,
(2) हमें इस बात की स्वीकृति प्रदान करें कि हम वहाँ दोनों तीर्थङ्करों की जन्मभूमि की स्मृति में स्मारक का निर्माण करायें और,
(3) नेपाल सरकार हमें हर प्रकार से सहयोग देवा कि अत्यन्त दर्शनीय स्मारक निर्मित हो जाय ताकि भारतवर्ष से दर्शनों के लिए नेपाल लोग जाया करें।

श्री गोलछा के पत्र से मुझे आभास मिला है कि नेपाल सरकार द्वारा जनकपुरी में जमीन की जाँच पड़ताल की जा रही है और इस बात की सम्भावना है कि नेपाल सरकार हमलोगों को जमीन प्रदान करे।

आप नेपाल में भारत के राजदूत रह चुके हैं तथा इस समय विदेश विभाग के सचिव होने के नाते इस योजना की सफल होने में, आपका सहयोग हमलोगों के लिए बहुमूल्य है। अतः आपसे निवेदन है कि इस विषय को अपने ध्यान में रखने की कृपा करें।

भवदीय
ह०/-
(सुबोध कुमार जैन)
मंत्री

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Date 11-9-1986

My dear Shri Golchha,

In my last letter dated 13-8-1986 I had enquired whether you have returned from foreign countries and what should be our next programme. Please do let me know how much the matter has progressed with the Guthi Sansthan. You had informed me in your last letter before you left for foreign countries that Guthi Sansthan officers had visited Janakpur to finalise the location of the land to be given to us for erecting a suitable memorial there.

Please also let me know whether you prefer to have a common memorial of both the Swetambaras and the Digambaras at Janakpur with the representatives of both the sects as trustees of the said land or you have any other idea about it.

I have sent copy of the entire file relating to this matter to Shri Sahu Sriyans Prasad Ji Jain, President, All India Digambar Jain Tirth Kshetra Committee, 'Nirmal' 3rd Floor Nariman Point, Bombay 400021. for his information . I have to furnish to him with the information sought from you as above.

I hope you are doing well. With my best wishes.

Yours Sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Hulas C. Golchha.
Golchha House, Ganabahal,
Kathmandu, (Nepal).

Copy forwarded to Shri Sahu Sriyans Prasad Ji Jain, Nirmal 3rd Floor Nariman Point, Bombay-400021 for information.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रतिलिपि

गोल्छा ज्ञान मन्दिर
समाज सेवा र जन कल्याण नैतिं र आध्यात्मिक साहित्य प्रकाशन
स्व० श्रीमती धापीदेवी गोल्छा पुरस्कार संचालन

काठमाण्डौ, नेपाल
दिनांक 21-9-1986

सजन सनेही साहश्री प्रताप भाईजी

सादर प्रणाम

आपका कृपापूर्ण सर्कुलर पत्र प्राप्त हुआ। हमारे अजस्र प्रेरणा श्रोत विश्वबन्ध परम श्रैद्धय गुरुदेव से जो आपको आशीर्वचन प्राप्त हुए हैं वे आप जैसे निर्मल हृदयी पुरुष के लिए योग्य ही हैं। अपार हर्ष की बात है।

भारत जैन महामण्डल में आपका योग्य सम्मान हुआ यह हम सबों के लिए गौरव की बात है। आपका सम्मान तेरापन्थ समाज का सम्मान है।

हर्ष का विषय है कि श्री सुबोध भाई का स्वप्न पूरा होने की पहली सोपान पर आ पहुँचा है। श्री श्री महाराजाधिराज के कृपापूर्ण निर्देशानुसार गुठी संस्थान ने पूरा अनुसंधान कर इस बात का निर्णय कर लिया है कि जनकपुर (मिथिलापूरी) में तीर्थंकर द्वय भगवान मल्लीनाथ तथा भगवान नमीनाथ के जन्म कल्याणक तीर्थ स्थापित करने के लिए नगर क्षेत्र में ही लगभग एक तिहाई एकड़ भूमि प्रदान की जायगी। भूमि का चयन उन्होंने लगभग कर ही लिया है अब आवश्यक्ता इस बात की है कि शीघ्र वहाँ के लिए निर्माण योजना का प्रारम्भिक प्रारुप तथा आवश्यक कोष की व्यवस्था की जाए। इस कार्य में विलम्ब हुआ तो सारी योजना खटाई में पड़ सकती है क्योंकि अभी तो गुठी संस्थान के अध्यक्ष श्री विष्णु प्रसाद खनाल एक असंकीर्ण तथा सदाशयतापूर्ण भावना वाले व्यक्ति हैं। अगर उसमें परिवर्तन हो गया तो कठिनाई प्रत्यक्ष है। अभी भी योजना की परिपूर्ण स्वीकृति होने तक स्वीकृति अलिखित ही है, लिखित मिलना दुरुह है। मैं मौखिक रूप से निरन्तर उनके सम्पर्क में हूँ। हाँ, मेरी ओर से अवश्य कई बार पत्र दिए गए हैं।

श्री सुबोध भाई के हाल ही प्राप्त पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

विशेष शुभम्।

स्नेहाकांक्षी,
ह०/-
(हुलास चन्द गोलछा)

बोधार्थ :—
श्री सुबोध कुमार जैन, आरा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

H. C. GOLCHHA.

GOLCHHA HOUSE, GANABAHAL
KATHMANDU, NEPAL.

7th September 1986

Shri Subodh Kumarji Jain,
Deva Ashram,
Mahadeva Road,
Arrah-802301
BIHAR (INDIA).

My dear Shri Subodh Kumarji,

I have received your kind letter No. 1164 dated August 13th 1986 and noted the contents of the same.

It is a pleasure for me to inform you that Board of Guthi Sansthan has already decided to grant a land of about one-third of an acre in the urban area near Janakpur. I think the land will be quite good for our perpose. If a larger land is required it can be available only in some rural areas where the lack of electricity, drinking water, road, telephones and other basic facilities will create many problems including those of transport and communications for the establishment.

The Guthi Sansthan will grant the above land only to an institution registered in Nepal such as Nepal Jain Parishad. Please inform me about your idea in the matter. Please also let me know of the rough plan of the constructions to be erected on the land. I have to inform you that the fund for the same cannot be raised from Nepal. So the whole fund has to come from India. Please let me know all the plans and the sources of fund required to meet the expenses for the same at your earliest convenience.

With warm regards as usual,

Yours sincerely
Sd/-
(HULAS C. GOLCHHA)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

HULAS C. GOLCHHA GOLCHHA HOUSE, GANABAHAL
KATHMANDU, NEPAL.

19th September, 1986

Shri Subodh Kumar Jain,
Dev-Ashram,
Mahadeva Road,
Arrah-802301
BIHAR (INDIA).

I am very glad to receive your kind letter dated September 11th. 1986. Please note that I had sent a letter to you on September 7th, 1986 which you may have received by now. I hope the matter is now clear to you from its contents.

Regarding the second para of your letter, I would like to opine that it is better to have a common memorial of the Swetambaras and the Digambaras with the representatives of both the sects as trustees of the said land. But, the problem is that the trustees can be only the Nepals Nationals as far as I know.

I note that you have already sent a copy of the entire file relating to this matter to Shri Sahu Sriyans Prasadji Jain at Bombay. I appreciate it and I am awaiting his responce.

With warm regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(HULAS C. GOLCHHA)

Encl : Copy of my above mentioned letter.

●

Ref : 1432 29-9-1986

Respected Sahu Ji,

Subjects :- Proposal for erection of a memorial at Janakpur (Nepal) the birth place of the two Tirthankaras.

I have received a letter from Shri Hulas C. Golchha, from Kathmandu dated 19-9-1986, a copy of which I am sending to you

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

along with copy of my letter which was sent to him in reply to his letter dated 19-9-86.

He has also written a letter about this matter to Shri Pratap Chand Baid of Siliguri (West Bengal), a copy of which Shri Golchha has sent to me, I am also sending a copy of this letter to you for your perusal.

I have already sent to you a copy of Shri Golchha's letter dated 19-9-86 with a copy of my reply to him, which you will find in the envelope of this letter. I have also been sending copies of letters on this subject to Pujya Elacharyaji Maharaj at New Delhi. Please let me know if you have received any reply from him in this matter. I am still awaiting his response.

I hope you are doing well. With my best regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

Shri Sahu Sriyans Prasad Ji Jain,
Nirmal 3rd Floor,
Nariman Point
Bombay-21.

Copy forwarded to Shri Parampujya Munishri Vidyanand ji Maharaj, Shri Kund Kund Bharati Bhawan, Satsang Bihar Marg, Near Kutub Hotel, New Delhi. for information.

Encl :— 1.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

●

Ref : 2494 19-3-1987

To,
The Chairman,
Guthi Sansthan (Central office)
Ram Shah Path,
KATHMANDU (NEPAL)

Subject .—Proposal for allotment of land at Janakpur for erecting memorial of Lord Mallinath and Lord Namminath, the two Jain Tirthankaras born at Janakpur in Nepal.

Sir,

Kindly refer to your office letter No. 7482 dated 25-3-1985 on the above subject and my reply thereto vide No. 768 dated 6-4-86

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

In that letter I had written to you that Mr. Hulas C, Golchha of Kathmandu is being requested to contact you and furnish to you the necessary details and information so kindly asked in your letter dated 25-3-1985. Mr. Golchha must have furnished you the necessary information.

From a letter dated 21-9-1986 of Mr. Golchha, it appears that as per kind direction of Shri Shri Maharajadhiraj of Nepal, the Guthi Sansthan after completing all necessary investigation into the matter has come to the conclusion that for the memorial of Lord Mallinath and Lord Namminath about one-third acre of land in the urbon area of Janakpur will be given for the purpose- I have not received any further communication so far in this regard from Mr. Golchha since then. This might be due to his continued absence from Nepal on his foreign tours.

From Mr. Golchha's letter it appears that the land to be given for the purpose has been selected by you. But we are yet to know the nature and location of the land at Janakpur. I shall be grateful if you kindly sent me the following information at your earliest.

(1) Exact area of the land to be setteled with us for the purpose.

(2) Its distance from proper Janakpur.

(3) Is there any means of communication ? If so is it connected by Pucca or Kachha road. Is electricity and drinking water available at the spot ?

(4) The terms and conditions on which the proposed land would be setteled with us. A copy of the terms and conditions may kindly be sent for our information and further action.

(5) If preferable a site plan of the proposed land may be sent.

I am also forwrding a copy of this letter to Mr. Golchha who may contact you and assist you in this regard. I am awaiting your reply at the earliest.

Thanking you,

Yours faithfully,

Sd/-

(SUBODH KUMAR JAIN)

Secretary

Copy forwarded to Mr. Hulas C. Golchha, Golchha House, Ganabahal, Kathmandu (Nepaal) for information, He is requested to kindly

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

contact the Guthi Sansthan, Kathmandu in this regard and got the information sought for expedited as delay in the matter would not be helpful. His reply to my earlier letter dated 28-2-1987 is still awaited. An early reply in this regard will be highly appreciated.

Sd/-
(SUBODH KUMAR JAIN)

सुबोध कुमार जैन

देवाश्रम, आरा-
बिहार। 802301,
दिनांक 1-4-87

श्री हुलास चन्दजी गोल्छा
गोल्छा हाउस, मनबहल काठमांडू (नेपाल)
प्रिय गोल्छाजी,

आपका 12 मार्च का पत्र 20 मार्च को मिला था। पत्रोत्तर में थोड़ा विलम्ब हुआ, कृपया अन्यथा न लेगें। आपका इधर पत्रोत्तर नहीं मिलने के कारण मैं चिंतित हो गया था और मैंने गुठी संस्थान काठमाण्डू को दिनांक 19-3-87 को लिखा था जिसकी प्रतिलिपि आपको भेजी थी। आशा है आप को मिली होगी। मैं उसके उत्तर का इन्तजार कर रहा हूँ।

मैंने इधर रेडियो नेपाल को भी पत्र लिखा तथा उनके पास जैन भजनों और जैन धर्म की पुस्तक भी उनके लाईब्रेरी के लिए भेजी थी। मैंने उनसे निवेदन किया था कि रेडियो नेपाल से वे विशेष जैन उत्सवों पर जैन तत्व-उपदेश एवं भजनों का प्रसारण भी किया करें और विशेषतया भगवान मल्लिनाथ और भगवान नेमिनाथ के जीवन वृत भी प्रसारित करें एवं जनकपुरी में जन्म हुआ है, इसका प्रचार एवं प्रसार करें। उस पत्र की नकल भी आपको भेजी थी। आप भी कृपया रेडियो नेपाल से सम्पर्क जरूर कीजिए ताकि यह काम महावीर जयन्ती से शुरू हो जावे। मुझे बड़ी खुशी हुई कि रेडियो नेपाल और टेलिविजन से भी आपने स्वयं प्रचार एवं प्रसार का कार्य आरम्भ कर दिया है। आपने क्या बात प्रसारित की उसकी एक प्रति हमारे पास भेजिए ताकि मैं यहाँ के साप्ताहिक में उसे प्रसारित करवाऊँ।

मैंने आपसे नेपाल जैन परिषद् की छपी नियमावली की एक प्रति मांगी थी और यह भी पूछा था कि वहाँ पर दिगम्बरियों एवं श्वेताम्बरियों की कितनी संख्या है। आप तो वहाँ के प्रमुख नेता हैं तथा अन्य दिगम्बर कार्यकर्त्ता कौन हैं, उनके भी नाम व पता लिखकर दें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

साहु श्रेयांस प्रसादजी का सुझाव है कि जिस कमिटि के नाम से नेपाल सरकार से जमीन रजिस्ट्री कराई जाय, उस कमिटी में श्वेताम्बर तथा दिगम्बर समाज का बराबर का प्रतिनिधित्व हो तथा हर दो वर्ष पर कार्य समिति के पदाधिकारो का चुनाव हो जिसमें बारी बारी से हर दो वर्ष पर एक समाज का अध्यक्ष हो तो दूसरे समाज का मंत्री हो। उनका दूसरा सुझाव है कि दो वेदियाँ भी अलग अलग बनाई जायें तथा मंदिर आदि निर्माण कार्य में किसी प्रकार का परिवर्तन करना हो तो वह दोनों समाज की सहमति से ही किया जाय।

उन्हों ने अपना भय प्रदर्शित किया है कि जो दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति इस समय दोनों समाजों के बीच भारतवर्ष में जहाँ कहीं बनी हुई है वह भारतवर्ष के बाहर विदेश में नहीं होनी चाहिए।

आपने अपने पत्र में लिखा था कि इस कार्य के लिए अर्थ इकट्ठा करने में कठिनाई होगी, ऐसा आप महसूस कर रहे हैं। इस लिए इस कठिनाई को हल करने के तरीके पर अभी से विचार करना चाहिए। आपने अपने इस पत्र में लिखा है कि अभी आप लोग यहाँ जैन सोसाईटी भगवान महावीर जैन निकेतन, काठमान्डू के निर्माण में अपना धन लगा रहे हैं।

कृपया नेपाल के उस कानून की एक छपी प्रति हमारे पास भेजिए जिसके अन्तर्गत नेपाल में जमीन का निबंधीकरण या रजिस्ट्रेशन कराया जाता है।

सबसे अधिक आवश्यक्ता यह है कि गुथी संस्थान हमलोगों को सर्वप्रथम जनकपुर में अनुदान देने की जमीन को स्वीकृति लिखकर दे। यह हमारे हाथ में आ जाने पर आगे बढ़ने में आसानी होगी। इस लिए कृपया उनका स्वीकृति पत्र हमलोगों के पास में आ जावे इसके लिए तत्स्थ प्रयत्न करें।

आपने मुझे अभी तक इस विषय पर भी अपने विचार नहीं लिखे हैं कि दोनों सम्प्रदायों द्वारा क्या ऐसा निर्माण कार्य कराया जा सकता है, जो कि प्रतीक के रूप में दोनों साम्प्रदायों को स्वीकार हो। हमारी भी हार्दिक इच्छा बराबर रही है कि सभी जैन समुदायों की ओर से एक ही स्मारक वहाँ बनना चाहिए था जो कि सभी समुदायों का एक प्रतीक हो सके।

कृपया मेरी बातों से आपको कोई गलत फहमी नहीं होनी चाहिए। मैं तो स्पष्ट रूप से सभी बातें आपको लिख रहा हूँ। आप भी कृपया स्पष्ट रूप से मुझे विचार कर लिखिए।

कृपया पत्रोत्तर शीघ्र दीजिये। मैं बहुत चिंतित हूँ।

भवदीय

ह०/-

(सुबोध कुमार जैन)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

HULAS C. GOLCHHA. GOLCHHA HOUSE, GANABAHAL
KATHMANDU, NEPAL.

12th March 1987

Shri Subodh Kumar Jain,
Deva Ashram,
Mahadeva Road,
Arrah-802301
BIHAR (INDIA).

Dear Subodh Kumar ji,

Thank you very much for your kind letter enclosing therein copies of your letter dated 11th and 19th September 1986 which had also been received here. I had also written to you on 7th and 19th September of which copies are enclosed herewith.

I am sad to know from your above letter, that you are still sick for nearly a year. May I now expect that you are progressing well towards your sound health and high spirits.

Please note that during the last Mahavir Jayanti Celebrations, we had highlighted the importance of Janakpur (not Janakpuri as written by you) regarding the birth place of Lord Malli Nath and Lord Nami Nath. In our Television Interview also we had mentioned these points. We will again take up this matter during the coming Mahavir Jayanti.

Coming to your second paragraph, please note that Nepal Jain Parishad is representative organisation of the whole Jain Community of Nepal.

Before we get anything in writing from the Government, we have to officially apply to them on behalf of an organisation incorporated in Nepal.

I am still awating to hear about the reaction of the Indian donors for this project. As I have written to you earlier, there may not be an immediate possibility of raising mentionable funds here because of the recent commitments of the Jain society here to complete the construction of Bhagwan Mahavir Jain Niketan in Kathmandu.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

In Nepal, the Jain society is very small and the number of Digambar Samaj is only negligible. Hence, it will be impossible to convene two separate institutions to look after two different memorials of Digambars and Swetambars.

Please note that, as soon as the land is accquired, we will need the funds to start some essential constructions and also the boundary walls. I feel that it will be wise to get a commitment from the donors before we really embark upon the project.

Anyway, looking at the positive role of the present Chairman of Guthi Sansthan, who is for several years as such, I want to make it a point to settle the whole thing as early as possible so that we do not have to face another Chief of Guthi Sansthan in some later days. This is also mainly because we have not yet received anything from the Guthi Sansthan in writing.

I have met the Chairman many times including recently. Chairman Mr. Khanal has asked me to immediatly apply for the land in the name of a local organisation, seconded by you.

Hence, you have to write a letter to the Chairman, Guthi Sansthan, immediately to allot this land to the Nepal Jain Parishad or to a trust of the Jain community recommended by or proposed by Nepal Jain Parishad. In the meantime, I would welcome your son to be here to discuss various matters in a few days time.

Looking forward to hear from you at your earliest convenience.

Yours sincerely
Sd/-
(HULAS C. GOLCHHA)

Encl. : As Above

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुलास चन्द गोल्छा

गोल्छा हाउस, गनबहल
काठमाण्डू, नेपाल
दिनांक 28–6–1987

श्री सुबोध कुमारजी जैन
देवाश्रम, आरा 802301 बिहार, भारत।

श्री सुबोध जी,

आपका पत्र दिनांक 1–4–87 प्राप्त हुआ था। पत्रोत्तर में विलम्ब के लिए क्षमा। रेडियो नेपाल को आप द्वारा भेजी गयी जैन धर्म की पुस्तकों से समय समय पर प्रसारण के लिए हम लोगों ने बात की थी। उन्होंने खास अवसरों पर समय देने का आश्वासन दिया है। रेडियो नेपाल से स्थानीय जैन परिषद् द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के बारे में समाचार आदि का प्रसारण किया जाता रहा है। विशेषरूप से महावीर जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रमों को नेपाल टेलिवीजन व रेडियो द्वारा विस्तृत रूप से प्रसारित किया जाता है। पिछले साल महावीर जयन्ती पर जैन समाज के वरिष्ठ श्रावकों से नेपाल टेलिवीजन द्वारा प्रस्तुत अन्तर्वार्ता की एक प्रति इसी पत्र के साथ भेज रहा हूँ (जो नेपाली में है)। पत्र के साथ नेपाल जैन परिषद् का विधान भी संलग्न है पर वह भी नेपाली में है, फिर भी मोटा मोटी आपकी समझ में आ जाना चाहिए। आप लिखेंगे तो अनुवाद भी भेजा जा सकता है। जमीन रजिस्ट्रेशन के बारे में साहु क्षेयांस प्रसाद जी के सुझाव प्रशंसनीय हैं। परन्तु नेपाल में दिगम्बर समाज के सदस्यों की संख्या नगण्य है। अतः दिगम्बर व श्वेताम्बर समाज का बराबर का प्रतिनिधित्व सम्भव नहीं प्रतीत होता है। वैसे मुझे इस बात की खुशी है कि नेपाल में समस्त जैन सम्प्रदायों में पूर्ण एकता है व किसी तरह का वैमनस्य नहीं है।

गुथी संस्थान से हमारी बात हुई थी। जब तक कोई संस्था रजिस्टर्ड नहीं हो जाती तब तक जमीन के लिए उनसे लिखित में मिलना मुश्किल है। वैसे अगर जैन परिषद् को इसकी जिम्मेदारी दी जाये और उसके नाम से अगर प्रयास किया जाये तो शायद सम्भव हो सकता है। जैन परिषद् को पंजीकरण की अस्थायी स्वीकृति मिली हुई है तथा स्थायी स्वीकृति शीघ्र मिलने की आशा है।

निमार्ण कार्य के बारे में मेरी राय में स्मारक ही बने तो ज्यादा उपयुक्त रहेगा। क्योंकि जनकपुर में, जहाँ अनुयायियों की संख्या नहीं के बराबर है, मंदिर की सुव्यवस्था होना सम्भव नहीं। विशेष शुभ। पत्रोत्तर दें।

पुनश्चः :—हाल ही गुथी संस्थान के अध्यक्ष पद से श्री बिष्णु प्रसाद खनाल रिटायर हो चुके हैं तथा नए अध्यक्ष की नियुक्ति हो चुकी है।

भवदीय
ह०/–
हुलास चन्द गोल्छा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री साहु श्रेयांस प्रसाद जी जैन
निर्मल तीसरी मंजिल 10-7-1987
नरीमन पवायंट/बम्बई-400004

श्रद्धेय साहु जी,

सादर जय जिनेन्द्र

विषय :— जनकपुरी तीर्थ के विषय में ।

उपर्युक्त विषय में श्री हुलास चन्द गोल्छा का पत्र दिनांक 28-6-87 का आया है । मैं उसकी प्रतिलिपि आपके पास भेज रहा हूँ । उन्हों ने जो "नेपाल जैन परिषद्" का विधान भेजा है, उसकी प्रतिलिपि भी आपके पास भेज रहा हूँ ।

जनकपुरी में "जमीन रजिस्ट्रेशन" के विषय में तथा "स्मारक निर्माण" के विषय में, उन्होंने खुलासा अपनी राय लिखी है । हमारा सुझाव है कि आप कृपया "नेपाल जैन परिषद्" के विधान को अध्ययन करवालें और अगर आपको कोई कठिनाई न हो तो गोल्छा जी से सीधे पत्राचार करें ताकि इस विषय पर यथाशिघ्र अंतिम निर्णय लिया जा सके । विलम्ब होने से कहीं ऐसा न हो कि अभी तक वर्षों के प्रयत्न के बाद जो जमीन नेपाल सरकार देने को तैयार हुई है, उसमें कोई नयी गड़बड़ी पैदा हो जावे ।

भवदीय
ह०/-
(सुबोध कुमार जैन)

संलग्न :—
1 पत्र दिनांक 28-6-1987 की प्रतिलिपि
2 "नेपाल जैन परिषद्" का विधान की प्रतिलिपि

प्रतिलिपि/सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाई के लिए ।
श्री हुलास चन्द गोल्छा, गोल्छा हाउस, गनबहाल, काठमाण्डो, नेपाल ।

(सुबोध कुमार जैन)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री हुलास चन्द गोल्छा,
"गोल्छा हाउस" गनबहाल,
काठमाण्डो, नेपाल ।

नं० 3626
देवाश्रम, आरा–802301
दिनांक 7–9–1987

प्रिय गोल्छा जी,

विषय :— जनकपुरी

उपरोक्त विषय में मैंने आपको पिछला पत्रोत्तर दिनांक 10–7–87 को भेजा था। जिसमें अन्य बात के अतिरिक्त "नेपाल जैन परिषद्" के संविधान की हिन्दी प्रति भेजने के लिए मैंने लिखा था। अभी वह नेपाली भाषा में होने के कारण तथा यहां किसी अनुवादक के उपलब्ध नहीं होने के कारण हम उसे समझ नहीं पा रहे हैं।

साहु श्रेयांस प्रसाद जी का भी 20 जुलाई 1987 का पत्र आया हुआ है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि हमारे पिछले पत्र को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटि के वर्तमान अध्यक्ष साहू श्री अशोक कुमार जी के पास भेज दिया है और वे लोग नेपाल जैन परिषद् के संविधान की हिन्दी प्रति मांग रहे हैं। आपके यहां से प्राप्त होते ही मैं उसमें से एक प्रति साहु श्रेयांस प्रसाद जी और एक प्रति साहु अशोक कुमार जी के पास भेज दूंगा ताकि यथाशीघ्र निर्णय लिया जा सके।

आपने भी विचार किया होगा कि अगर स्मारक बनाया जाय तो इसका रूप क्या होगा ताकि वह सम्पूर्ण जैन समाज की भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर सकें। क्या आप अपने मित्रों से और सहयोगियों से इस विषय पर विचार कर, तथा स्मारक का एक प्रारुप बनवाने का प्रयत्न करेंगे। हमारा तो यह विचार था कि सुमेर पर्वत का शास्त्रोक्त प्रतिरूप बनवाया जाय। पर मुझे मालूम नहीं कि श्वेताम्बर साहित्य के अनुसार इस विषय पर क्या विवेचन है। दिगम्बर साहित्य के अनुसार तो मेरठ के पास हस्तिनापुर क्षेत्र पर अभी कुछ वर्ष पूर्व ही एक विशाल प्रतिरूप बनवाया गया है। अगर वह आप लोगों को स्वीकार हो तो, उसका ही एक छोटा आकार बनवाया जा सकता है। जैसा कि सर्व विदित है कि तीर्थङ्करों के जन्म के उपरान्त सुमेर पर्वत पर क्षीर सागर के जल से उनका अभिषेक, धर्मेन्द्र ले जाकर करते हैं। इसके निर्माण से हमलोगों की यह भावना होगी तथा शिलालेख पर यह लिखवा दिया जायगा कि भगवान मल्लिनाथ और नमीनाथ दो तीर्थङ्करों का जन्म इसी नगरी में हुआ था और धर्मेन्द्र द्वारा नियमानुसार सुमेर पर्वत पर जन्म कल्याणक के उपरान्त दोनों ही तीर्थङ्करों का महाभिषेक हुआ था। कृपया पत्रोत्तर देने का कष्ट करेगें।

भवदीय
ह०/–
(सुबोध कुमार जैन)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोल्छा ज्ञान मन्दिर

काठमाण्डो, नेपाल।
दिनांक 14-3-1988

आदरणीय श्री साहुजी,

सप्रेम नमस्कार !

श्री बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी देवाश्रम आरा के श्री सुबोध कुमारजी जैन से काफी लम्बे समय से पत्राचार चल रहा है। उन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप मैंने नेपाल के प्रसिद्ध धार्मिक नगर जनकपुर धाम में तीर्थङ्कर श्री मल्लिनाथ एवं तीर्थङ्कर श्री नमीनाथ दोनों के जन्म स्थल होने को सरकार से मान्यता प्राप्त कर ली है, साथ ही सरकार ने जनकपुर धाम नगर क्षेत्र में तीर्थस्थल स्थापना के लिए जमीन प्रदान करने की पेशकस भी की है। यह निश्चय ही आप लोगों की शुभेक्षा का प्रतिफल है। भविष्य में भी नेपाल का जैन समाज आपकी शुभेक्षा एवं मार्गदर्शन का आकाँक्षी रहेगा।

श्री सुबोधजी की इच्छा के अनुकूल नेपाल जैन परिषद् के विधान का हिन्दी अनुवाद भेज रहा हूँ। इसके अध्ययन के बाद आगे क्या करना उपयुक्त होगा। कृपया सुझाव दें।

संपूर्ण जैन भाई-बहन एवं परिवार के सभी सदस्यों को मेरा यथा-योग्य अभिवादन कहने का कष्ट करें।

शुभाकांक्षी,
ह०/-
(हुलास चन्द गोलछा) सचिव

●

श्री पद्मभूषण साहु श्रेयांस प्रसाद जी जैन
निर्मल तीसरी मंजिल
नारीमन पवायंट, बम्बई-400021

सादर जय जिनेन्द !

काठमाण्डू के श्री हुलास चन्द गोल्छा ने आपको दिनांक14-3-88 को एक पत्र जनकपुरी तीर्थ क्षेत्र के विशय में लिखा था। उनका एक पत्र मुझे भी मिला हैं और साथ में लिखे गए आपको पत्र की प्रतिलिपि भी मिली है।

कृपया मुझे आपने जो उन्हें पत्रोत्तर दिया है, उसकी प्रतिलिपि भेजने का कष्ट करें ताकि मैं भी उन्हें उसी परिपेक्ष्य में उत्तर दे सकूं।

आशा है आप कुशलपूर्वक होंगें।

शुभ कामनाओं के साथ,

आपका
ह०/-
(सुबोध कुमार जैन)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नं॰ 442 23–4–1988

श्री साहु श्रेयांस प्रसाद जी जैन
निर्मल तीसरी मंजिल
नरीमन पवायंट, बम्बई–400021
श्रद्धेय साहु जी,

सादर जय जिनेंद्र !

आज आपका हमारे 8 अप्रैल 1988 के पत्र के उत्तर में 19 अप्रैल 1988 का पत्रोत्तर मिला साथ में आपने जो साहु अशोक जैन द्वारा श्री हुलास चन्द गोल्छा काठमाण्डू वालों को 29 मार्च 1988 को पत्र लिखा था उसकी भी नकल मुझे मिली।

मुझे खुशी हुई कि आज ही श्री हुलासचन्द गोल्छा का पत्र दिनांक 17–4–1988 का प्राप्त हुआ है और मैंने श्री गोल्छा को आज पत्रोत्तर भेज दिया है तथा अशोक जी को भी एक पत्र लिखकर आज भेजा है। मैं इन सब पत्रों की फोटो कॉपियाँ आपके पास अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ ताकि आपको पूरी जानकारी हो जाय और आपके मार्गदर्शन में यह शुभ कार्य यथाशीघ्र पूरा हो जावे।

रक्तचाप की गड़बड़ी के कारण मैं इधर दो तीन माह से अस्वस्थ्य चल रहा हूँ और पटने का इलाज चल रहा है। इससे कुछ लाभ हुआ है पर रोगमुक्त नहीं हो पा रहा हूँ।

कृपया हमारे पत्र की पहुँच दें।

आपका
ह॰/–
(सुबोध कुमार जैन)

संलग्नक

1 श्री हुलास चन्द गोल्छा का पत्र दिनांक 17–4–88 की जेरोक्स कॉपी
2 17–4–88 के संबंध में दिये, गये उत्तर की जेरोक्स कॉपी
3 अशोक जी को दिये गये उत्तर की जेरोक्स कॉपी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Jainism in Nepal

—Nepal Jain Parishad

According to Jain literature, Jain Religion was spoken as Arhat Religion in ages past. The founder of Arhat Religion was the First Teerthankar Bhagawan Rhishabha Deva. Lord Rhishabha is Known as the propounder of Human civilization and, according to Vedic holy scripture, Srimad Bhagawat, he is considered as the eighth Incarnation among the twentyfour incarnations of God.

It is written in the old books of religion that the name of India as Bharat-Varsa has been derived from the name of the Great Emperor Bharata, the eldest prince of Lord Rishabha Deva. Accroding to the Fifth Skandh of Shrimad Bhagawat. Bharat performed the penances in Pulhashram on the banks of the holy river Kali Gandaki in the Harihar Kchhetra of Nepal. The worldfamous one thousand years old collosus image of his younger brother Bahubali known as "Gommteshwar" is situated in Karnataka State in India.

In the series of 24 Teerthankars. the Nineteenth Teerthankar Bhagawan Mallinath was born at the holy place of Mithilapuri (Janakpur) in Nepal.

The Twentifirst in the Teerthankar series, Bhagawan Naminath was also believed to be born at the same Mithilapuri sometime around "Dwapar Yuga".

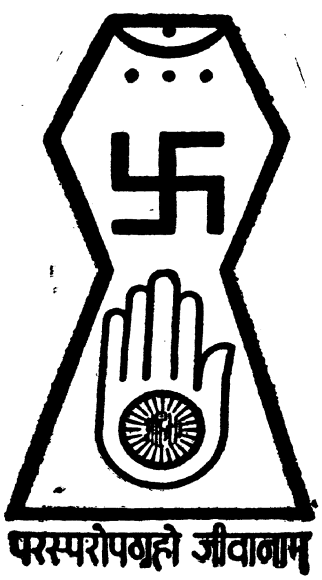

This symbol was unanimously adopted by all the sections of the Jain community viz. Digamber Jain, Swetamber Jain, Sthanakwasi, Terapanthies and Bispanthies etc.

It was done in the year 1975.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

The mention of the twentithird Teerthankar Bhagawan Parshwanath is found in all ancient histories. The 24th and last Teerthankar Bhagawan Mahavira was born only a few decades before Bhagawan Gautam Buddha, and established the Religious Philosophy with five Mahavrata inclusive of the four-fold tenets of "Ahimsa", "Satya", "Achaurya" and "Aparigraha" (Prevalent in Jain Religion upto the time of Parshwnaath) alongwith the fifth tenet of "Bramhacharya". The modern form of Jain Religion is attributed to Lord Mahavira who established the scientific principle of "Swadwad" or "Anekantavada relativism)"

Most historians belive that the birth of Lord Mahavira took place at a place known as Vaishali near the present Muzaffarpur (Bihar), not very far from the present boundaries of Nepal.

In the Jain Books of Religion, it is stated that the birth place of Mahavira is at a locality called Chhetriya Kundapur situated at the bank of Rijubalika River in Vaishali Ganatantra, a Republic in India, but the learned people are not yet of one same opinion about the whereabouts of Chhetriya Kundapur. In the opinion of Nepal's Ex. Prime Minister General Matrika Prasad Koirala, the locality of that city could be somewhere inside Nepal's border with India. He further suggests that Chhetriya Kundapur could be where now stand remains of a city near Simrongarh of Bara District vide the preface written by Shri Matrika Babu on the bock "Mahavir Ke Thiye" (meaning what is Mahavira).

In such a manner, it would be a very noteworthy fact if Nepal be the birth place of both the great apostles of Ahimsa (non-violence) namely Buddha and Mahavira. Probably, it is the inherent blessings of these great souls that makes Nepal the Zone of Peace.

There is no denying the fact that even after the Mahavira era, Jain Religion has remained prevalent in Nepal throughout the history.

Around second century after Mahavira's Nirvana when Jain knowledge was on the verge of collapse, at this critical juncture when thousands of "Jain Shruta-Dhari" hermits were eclipsed due to the formidable famine prevailing all over Northern India. At that

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

time, the only Saint having authentic knowledge of Jain Holy Books, Shruta-Kewali Bhagawan Bhadrabahu was under meditation in the caves of Nepal. When this fact was known to the learned assembly of Jain Munis, the history reveals that the group of 500 Saints under the leadership of Sthuli Bhadra was sent to Nepal to meet Bhadrabahu and to learn all the knowledge from him. Thereafter also many Jain stories confirm that Jain Religion has continued to be prevalent in Nepal

Proofs have already been discovered about that continuance of Jain Religion in Nepal from ancient times There are many Jain books available with the National Archives, among which the hand-written Tadpatra book "Prashna Byakarna' is a rare collection, not yet known to be found in the rest of the world. The local Jain society has sent the copies of the book to the various Jain scholars for review and publication. The reported presence of the images of the naked Jain Saints in the holy shrines of Pasupati Area is a ready confirmation of the above findings In fact, the scientific investigation of Jain Archeological Monuments has not yet been undertaken in Nepal so far. It is believed that many additional proofs will be found out by such scientific investigation In more recent times no chronology has been maintained about Jain Saints residing or visiting Nepal until the last 4 or 5 decades.

At present the followers of Jain Religion are seen mostly in Eastern and Central Regions of Nepal. It appears that Jains in Western region are comparatively low in number. There are local associations of Jains in Morang, Sunsari Jhapa, Saptari. Parsa and Kathmandu Districts There are Jain center Buildings at Biratnagar and Kathmandu. The conference Hall, Guest House and a Temple are under construction at Naxal in Kathmandu as part of Bhagawan Mahevir Jain Niketan. There is a mini-temple located in the premises of Golchha House at Genabahal in Kathamandu where local and visiting followers offer their prayers. In Kathamandu all the Jain communities are members of a single association known as Nepal Jain Parishad where various religious events of different sects are collectively organised

Jain Religion is divided into four main branches. One of them is Digambar and the Saints of this seet movewithout any dresson.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

There are mainly three branches in Swetamber. These are (1) Worshippers of Idols (2) Sthanak-wasis and (3) Terapanthi directed under the leadership of Acharya Shri Tulsi.

The majority of the followers of Jain Religion in Nepal are the ardent followers of Acharya Shri Tulsi. On completion of the 50 years of leadership of 73 years old Acharya Shri Tulsi, Amrit mahotsava was celebrated and he was addressed as "Amrita Purusha" during the celebrations. Acharya Shri Tulsi started a non-communal Dharma-Anuvrata Movement. He walked on foot more that 50 thousand kms. from Kashmir to Kanyakumari and from Rajasthan to Bengal and worked for the welfare of the people by promoting and propagating the principles of Achar Samhita (Code of conduct) contained in Anuvrata, the religion of humanity all over the region. In order to enchance the effects of Anuvrata, he is wholly dedicated to establish a revolution in religious thinking by introducing the "Science of Living" and "Presksha Meditation" to all irrespective of Religion, Cast or Creed.

Many of his 750 disciples (Monks, Nuns, Samans & Samanis) have been all effortful to spread his beneficial ever-lasting messages to all the people divided into hundreds of groups all over the region and in this process, they have visited Nepal too on various occassions.

Among the main Saints of Sthanakvasi Community who visited Nepal, Acharya Shri Sushil Muni and Shri Jayanti Muni are the more noted ones.

Others who visited Nepal, the name of Jain Saint Shri Birendra Hegde is worth mentioning, who is hereditory Jain head of Dharamsthali, a famous vedic centre in Karnataka, a province in India. He is a living embodiment of unity between Jain and Vedic religions. His visit to Nepal, a few years ago proved to be inspiring for Hindus as a whole.

GANABAHAL KATHMANDU

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

An alliance between religion and conservation

—By L. K. Sharma

While many old alliances are breaking up a new alliance between religion and conservation is being strengthened at the initiative of the World Wild Life Fund for Nature. Its president, Prince Philip, the Duke of Edinburgh, will receive the Jain Declaration on nature at the Buckingham Palace on Tuesday.

The declaration, which will be presented by a delegation of Jains from all over the world, has been drafted by the eminent jurist, Dr. L. M. Singhvi, in consultation with scholars. The presentation will be followed by a discussion on Jain ecology and future environmental work by the Jain community. The delegates will report on the progress of the Jain translation programme for the international sacred literature trust which was launched by Prince Philip last year.

Jainism will be the eighth religion to join the network of gren faiths. The religions that join the network on conservation and religion make a commitment to promote environmental awareness and action within their community based on articles of faith outlines in their own delcaration.

It was at the Basilica of St. Francis of Assisi in I aly at the time of the celebration of the 25th anniversary of the WWF in 1986 that this initiative was launched to bring the forces of religion and

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

conservation together. The involvement of religions is intended to promote the cause of conservation and strengthen the ethical base of conservation.

The work on the Jain declaration was started by two main Jain organisations in Britain the Oswal Association and the Navnat Navik Association- The first work to be translated under thr sacred literature series is Tattvartha Sutra.

The founders of various religious has foreseen it all even though during the times there was no environmental crisis and thus no immediate compelling reason to develop a dogma to regulate the relationship between man and nature. With its comprehensive and radical views on ecology, Jainism seems to be a natural ally of conservation.

According to Mahavira, the last Jina (spiritual victor) of the current era who lived 2500 years ago. there is nothing so small and subtle as the atom nor any element so vast as space. In the same way, there is no quality of soul more subtle than ahimsa (non-violence) and no virtue of spirit greater than reverence for life. Similarly, in the ancient spiritual aphorism all life is bound together by mutual support and independence could be the highlight of a conservationists' manifesto.

According to Dr. Singhvi, the ecological philosphy of Jainism which flows from its spiritual quest has always been central to its ethics, aesthetics, art, literature, economics and politics. Ahimsa is a principle that Jains teach and practise not only towards human beings but towards all nature. It is rooted in most of positive aims and actions that have relevance to contemporary environmental concerns.

The creed of environmental protection and harmony is inherent in the very Jain concept of life and its eternal coherence in which human beings have an inescapable ethical responsibility. Mahavira taught that only the one who understood the grave detriment caused by destruction of plants and trees understood the meaning and merit of reverance for nature. Even metals and stones might have life in them and should not be dealt with recklessly.

The Jain code of conduct with its emphasis on self-restraint, moderation, austerity and avoidance of waste contains,the elements of a development model that is in harmony with the conservationists' dream of a judicious use of earth's resources

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Templeton Award

London, May 9 (PTI); Baba Amte, the keeper of India's social conscience, was presented the prestigious Templeton prize for progress in religion.

He shares the 6000 000 doller prize, one of the highest awards in the world. with a leading Australian biologist, Professor Charles Birch.

Baba Amte's son, Dr. Vikas Amte received the prize from the Duke of Edinbuargh, Prince Philip, at a ceremony at Buckingham Palace. Baba Amte, could not attend the ceremony.

Babu Amte was nominated for the prize by the Church of England Priest Cinon Wihara Finch for development of madern day communities for lepers and Harijans in India.

Founded by Sir John Templeton, prize seeks to encourage the idea that resources and manpower are needed for progress in spirtual knowlege. The prize serves to stimulate the quest for deeper under-standing and pioneering break through in religious knowledge.

Previous recipients of the prize were Mother Teresa (1973) and the former Presiden Dr. S. Rashakrishnan 1975.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Baba Amte, in his speech read out by his son voiced his concern over ecological problems and reiterated his stand against the narmada valley project in India.

Baba Amte said 'I am assaulted by the insensitivity and aggression of those who wish to build atomic reactors, polluting factories and large dams. They think nothing of the living resources they kill".

Baba Amte has been chosen for the prize as the originator and developer of modern day communities for lepers and harijans near Nagpur and for demonstrating the onenese of mankind through his poineering work.

Prof. Charles Birch has been accorded the prize for his work on the development of a new understanding of the nature and role of God for a scientific age.

Speaking on the occasion, he said "the growing points of the Christian religion today are along the frontiers of modern science, second in relation to other religions and third in relation to the ecological and political problem of our time".

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Foreword

Of

Sri Jaina Siddhant Bhawana Granthavali—Vol.–1

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts

In

Sri Jaina Siddhant Bhawan Library, Arrah.

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his message of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. Ah in the modern age the Jain Siddhanta Bhawana at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the scoio-economic life of ancient India.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhawan Granthawali" being the catalouge of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts. First part consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size date etc., has been edited by Sri Rishabha Chandra Jain Fouzdar. Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catolouge and deserves congratulations for the commendable job. This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism.

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988.
Vikas Bhawan, Patna.

AND

Author's Index

of

Sri Jaina Siddhant Bhawana Granthavali—Vol.-1

Prepared by,

Dr. Rishabha Chandra Fouzdar

is as follows.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Author's Index

Author's Name	No. of Mss
Abhaya-candra Sidhānta-Cakravartī	271
Abhayanandi	485
Abhinava Dharamabhūṣaṇa	465
Abhradeva	987
Ācārya Ratnanandi	13,14
Ajitasena	517
Ajitasena deva	515
Akalaṅkadeva	321, 331, 391, 418, 595, 910
Amitagati	225, 226, 523, 523
Amṛtacandra Sūri	323, 397
Amṛtānandayogī	502, 503
Anantakīrti	42. 43
Anantavīrya	377. 477
Arahaddāsa	178
Āśādhara	364, 753, 850
Āṣāḍhabhūti muni	168
Bhānumuni	952
Bakasarāma	353
Bakhatarāma	189
Bakhtāvara	900
Banārasīdāsa	343 to 351
Bhadrabāhu	542 to 545
Bhagavatīdāsa	23, 185, 322, 716, 754, 186
Bhairondāsa	28
Bhānukīrti	106
Bhārāmala	22, 25, 26, 29, 76, 77, 121, 128, 129, 130, 131, 132
Bhāsakaranandi	412
Bhaṭṭāraka Jinendrabhūṣaṇa	56
Bhaṭṭāraka Ajitasena	466
Bhaṭṭāraka Amarakīrti	799
Bhaṭṭāraka Jinacandradeva	780
Bhaṭṭākalaṅka	318
Bhaṭṭāraka Kamalakīrti	940
Bhaṭṭāraka Mahicandra	653
Bhaṭṭāraka Sakalakīrti	315, 375
Bhaṭṭāraka Viśvabhūṣaṇa	851
Bhāvasena Traividyadeva	446
Bhāvasingha	99, 100
Bhavyanandi	771
Bhūdharadāsa	91, 92, 196
Bhūpālakavi	642 to 644
Brahmajita	38 to 41
Brahma Hemacandra	384
Brahma Jinadāsa	46, 50
Brahma Kāmarāja	54
Brahma Nemidatta	10, 11, 32, 33, 69, 70, 71, 139
Brahmasūri	430, 914
Budhajana	413
Budhasāgara	504
Buddha-bhaṭṭa	295
Bulākīdāsa	87, 315
Campārāma	668
Cāmuṇḍarāya	183

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Author's Name	No. of Mss.
Candramuni	78
Candrasena Sūri	541
Caritrabhūṣaṇa Muni	61/2
Cetana	416
Cidānandakavi	995
Dāmanandi	101, 258
Daulatarāma	48, 84, 85, 97, 207, 252, 308, 415, 849
Dīpacanda	188
Dayāpāla	489
Devacandra	107
Devanandi	484, 602, 652
Devaprabhācārya	676
Devarājarājā	170
Devasena	163, 164, 165, 209 393
Devendrabhūṣaṇa	119, 120
Devendrakīrti	749, 962
Devīdasa	494
Dhanañjaya kavi	493, 514 785 to 794
Dharamadāsa	389, 445
Dharamadeva	989
Durgālāla	197
Dyānatarāya	192, 236, 237, 238, 706, 739, 821, 832, 837, 891, 926
Ekasaṅdhi Bhaṭṭāraka	260
Fatelāla Paṇdita	450
Gautamasvāmī	337. 555
Guṇabhadra	172. 173, 174
Guṇabhadrācārya	147, 761
Guṇabhūṣaṇa	380
Guṇacandra	803
Gurudāsa	451, 452
Haridāsa	906
Haridāsa pyārā	672
Harṣakīrti	495
Hastimalla	7, 63, 142, 520, 916
Hemacandra	483
Hemarāja	73, 110, 296, 620, 629
Indranandi	255, 297, 681
Indra Vāmadeva	996
Jagamohanadāsa	232, 233, 912
Jaśakīrti	45
Jawāharalāla	433, 942, 979
Jayacanda	277, 369, 462, 632
Jayacanda chāvarā	468, 469
Jayamitra	135, 136
Jayasena	230, 231
Jinadāsa	53
Jinadatta	499
Jinadeva	61/1
Jinendra	394
Jainendra kiśora	111, 112
Jinendrasena	104, 924
Jinasenācārya	1 to 4, 47, 433, 750, 808, 993
Jnānabhūṣaṇa	306
Jnānasāgara	144
Jodharāja Godīkā	114 to 118
Kālidāsa	518
Kanakakīrti	274
Kanakanandi	422
Kalyāṇakīrti muni	853

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Author's Name	No. of Mss.
Keśarāja Ṛṣi	103/1
Kesavasena	15
Khemacandra	36,37
Khuśālacanda	150
Kisana Singha	498, 499
Kumudacandra	911, 682 to 693, 696
Kundana	641
Kundakunda	292, 304, 319, 339 to 341, 354
Lakśmīvallabha	239
Lālacanda	359, 941, 963
Māghanandi	573, 650
Mahākavi Haricandra	30,31
Mallaji	427
Mallişeṇa	335, 336, 551, 719
Mallişeṇācārya D/o Jinasena	637
Mallişeṇa sūri	765
Manaraṅga	822
Mānikacanda	357
Manoharadāsa	227 to 229
Mānatuṅgācārya	607 to 619, 621 to 627, 630, 631, 633
Meghakīrti	257
Munisundara Suri	146
Munnālāla	67
Narendrasena	473, 475, 923
Nathamala	62
Nathamala Vilālā	58
Nemicandra	213 to 224, 242, 243, 245, 248, 249, 272, 317, 423, 424
Padmanandi	184, 300, 333
Padmanandi muni	234
Padmaprabha Deva	735, 737
Padmarāja	437
Padmarājakavi	102
Padmasundara	143
Padmasūri	606
Pāndeya Bhūpati	180
Paṇdita Mahācandra	978
Paṇdita Śrīdharasena	501
Paṇditācārya Cārukīrti	479, 665
Pannālāla	55, 166, 395
Prabhācandra	278, 299, 474
Prabhudāsa	35
Pt. Medhāvī D/o Jinacandra	420
Pt. Ṭheṭhīrāma	20
Pūjyapāda	256, 358, 381, 553, 593, 597
Raghunāth	711
Raidhū	44, 64, 88, 146
Rājamalla	52
Rāmacandra	491
Ravicandra	167
Raviṣeṇācārya	80, 81, 675
Rūpacandra	322, 889, 936
Śubhacandra	133, 134, 266 to 268, 480, 550/2, 975
Sadāsukhadāsa	944, 945
Sāha ṭhakurasingha	438
Sakalabhūṣaṇa, D/o Śubhacandra	439
Sakalakīrti	9, 51, 57, 89, 90, 113, 125, 144/1, 149, 293, 526

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Author's Name	No. of Mss.
Samantabhadra	325, 327, 328, 454 to 457, 460, 540, 758, 782
Śānti varṇī	476
Sevārāma	126
Siṃhanandi	548
Siddhasena	755
Śikharacandra	967, 985
Śiromaṇi	500
Sivācārya (Śivakoti)	177, 329, 330
Somadeva sūri	511, 512
Somakīrti	122, 123
Somakīrtisūri	93 to 96
Somaprabha	527 to 531
Somesena	109, 436
Śridharācārya	536, 358
Śrutamuni	181, 471
Śrutasāgara	27, 152. 385, 488, 752
Śrutsaāgarasūri	874
Śubhacandrācārya	65
Śubhacandra Bhaṭṭāraka	86, 811, 865 to 869
Sumatibhadra	211
Suprabhācārya	441
Swāmī kārtikeya	275, 276
Śwarūpacanda	198, 957
Tekacanda	880
Todaramala	244, 288, 289, 426
Trilokacanda	509, 510
Umāswāmī	400 to 404, 406 to 410, 414, 417
Vādicandra sūri	262, 263, 264, 265, 871
Vādirāja sūri	155, 658, 663
Vāgbhaṭṭa	74
Vāmadeva	182
Vardhamāna	486/2
Vardhamāna muni	656
Vāsavasena	153
Vasunandi	371, 442
Vasunandi saiddhāntika	915
Vāsupūjya	212
Venicandra	158
Vidyānandi	362, 378, 458, 459
Vidyānanda swāmī	734
Vijayakīrti	137
Vijayavarṇī	516
Vikramakavi	68
Vimalagaṇi	269
Vinodīlāla	16, 17, 18, 151, 882
Vīranandi	19, 1o2
Viśvasena	950
Viśvabhūṣaṇa	928, 946, 948
Vṛndāvana	823
Yaśakīrti	312
Yogadeva	388
Yogīndradeva	307, 458, 712
Yaśonandi sūri	843, 893, 896

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सिद्ध परमेष्ठी राम की आरती

मुनि सुव्रत प्रभु तीर्थ काल की एक कहानी।
एक घराने एक काल में जनमें अदभुत प्राणी।

राम न जैसा कोई राजा हुआ जगत में,
राम न जैसा कोई भ्राता हुआ जगत में।

राम न जैसा कोई मित्र न कोई बेटा।
राम न जैसा बली पाप-पापी को मेटा।

राम न जैसा पुरुष न सीता जैसी नारी,
भरत लक्ष्मण राम भक्ति अदभुत ही न्यारी।

वचन दिया दशरथ जी ने भी ऐसा,
प्राण गए पर उसे निभाया कैसा।

महाबली हनुमान और सुग्रीव सुनामा,
मित्र न देखे गए कहीं ऐसे अभिरामा।

राम राज्य का नाम आज भी अजर अमर है,
राम न्याय का नाम आज भी अमर अजर है।

सद्गृहस्थ के सभी नियम कर्त्तव्य निभाया,
और अन्त में राम प्रभु ने मोक्ष महापद पाया।

जीवन हो तो ऐसा जिस की सब अद्भूत बातें हैं,
आदर्श भरा हो जिनमें ऐसे नर कम ही आते हैं।

लेखक--सुबोध कुमार जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नये प्रकाशन

जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली, भाग–१, २

(श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा के प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची)

सम्पादक–डॉ० ऋषभचन्द्र फौजदार

प्रति भाग मूल्य–१३५/-

ॐ

जैन रामायण

(मुनिकेशराज कृत सचित्र रामयशोरसायन रास)

जैन सिद्धान्त भवन, आरा की विशिष्ट पाण्डुलिपि का यथावत् प्रकाशन

सम्पादक :–डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

मूल्य : ८५०/-

श्री देवकुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट

आरा (बिहार)

जनता प्रिंटिंग प्रेस, आरा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust